रांची
मंगलवार, 13 मई, 2025
ज्येष्ठ, कृष्ण, प्रतिपदा, संवत् 2082
स्थापित : 1991, संस्थापक : बलबीर दत्त
वर्ष : 34, अंक : 176
पृष्ठ : 12, मूल्य : 3.00

देश प्राण
सच की ताकत
सत्यस्य शक्तिः सर्वोपरि

contact@deshpran.in | Desh Pran | Desh Pran | Desh Pran | @deshpran | @deshpran | Desh Pran | www.deshpran.com

विराट युग का अंत

विदाई नहीं, विरासत है ये!

नयी दिल्ली, 12 मई (हि.स.) : भारतीय क्रिकेट को एक हफ्ते के भीतर दूसरा बड़ा झटका लगा है। रोहित शर्मा के बाद अब विराट कोहली ने भी टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कह दिया है। सोमवार को विराट ने इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए अपने संन्यास का ऐलान किया। उन्होंने सफेद जर्सी में बिताए 14 सालों के सफर को 'शांत परिश्रम और जीवन भर के सबक' वाला अनुभव बताया। कोहली ने लिखा, मैंने इस फॉर्मेट को अपना सब कुछ दिया और इसने मुझे मेरी उम्मीद से कहीं ज्यादा दिया है।

9,230 रन, 30 शतक और एक 'बैगी ब्लू' गर्व

36 वर्षीय विराट कोहली ने अपने टेस्ट करियर में 123 मैच खेले और 9,230 रन बनाए। उन्होंने 30 शतक और 31 अर्धशतक जमाए। कोहली ने सबसे ज्यादा नौ शतक ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बनाए, जबकि सबसे कम दो बांग्लादेश के खिलाफ। उनकी तकनीक, जुनून और मानसिक मजबूती ने उन्हें दुनिया के बेहतरीन टेस्ट बल्लेबाजों में शामिल किया।

सबसे सफल भारतीय टेस्ट कप्तान

विराट कोहली ने 2014 में भारत की टेस्ट कप्तानी संभाली और 2022 में उससे इस्तीफा दिया। उनके नेतृत्व में टीम इंडिया ने 68 में से 40 टेस्ट मैच जीते, जो किसी भी भारतीय कप्तान के लिए अब तक का सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड है। उन्होंने भारत को न सिर्फ घरेलू मैदानों पर बल्कि विदेशों में भी बड़ी जीत दिलाई।

ऑस्ट्रेलिया में इतिहास रचने वाला पहला एशियाई कप्तान

2018-19 की बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में विराट कोहली की कप्तानी में भारत ने ऑस्ट्रेलिया को उसकी जमीन पर 2-1 से हराया। यह भारतीय क्रिकेट इतिहास की सबसे बड़ी विदेशों में टेस्ट जीतों में से एक थी। यह पहली बार था जब भारत ने ऑस्ट्रेलियाई धरती पर टेस्ट सीरीज अपने नाम की थी।

इंडीज, द.अफ्रीका, इंग्लैंड को भी दी करारी शिकस्त

कोहली की कप्तानी में भारत ने 2019 में वेस्टइंडीज को उसके घर में 2-0 से हराया। 2015 में नंबर-1 दक्षिण अफ्रीका को 3-0 से मात दी। इसके अलावा 2016-17 में इंग्लैंड को 4-0 से हराकर भारत ने अपनी घरेलू ताकत का भी जबरदस्त प्रदर्शन किया।

एक आक्रामक सोच की शुरुआत

कोहली के नेतृत्व में भारतीय टेस्ट टीम में आक्रामकता, फिटनेस और जुझारूपन की नई परिभाषा बनी। उन्होंने खिलाड़ियों को न सिर्फ मानसिक रूप से मजबूत बनाया, बल्कि टीम में आत्मविश्वास का नया माहौल तैयार किया, जो किसी भी चुनौती से पीछे न हटे।

विराट कोहली का टेस्ट क्रिकेट से जाना भारतीय क्रिकेट में एक युग के अंत की तरह है। लेकिन उनके द्वारा स्थापित की गई संस्कृति, उपलब्धियाँ और सोच आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनकर जीवित रहेंगी। कोहली ने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट में लिखा, ह्लमैं हमेशा अपने टेस्ट करियर को मुस्कुराते हुए देखूंगा।ह्व यह मुस्कान सिर्फ उनकी नहीं, करोड़ों भारतीयों की भी होगी, जिन्होंने इस 'बैगी ब्लू' योद्धा को एक सुनहरे दौर में बदलते देखा।

देश के नाम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

भारत ने पाक के सीने पर किया वार

'ऑपरेशन सिंदूर' सिर्फ एक नाम नहीं, आतंकवाद के खिलाफ भारत की नीति है

पीएम मोदी ने कहा

- 100 से अधिक आतंकवादियों को मौत के घाट उतारा
- दुनिया ने देखा कैसे पाकिस्तान ड्रोन-मिसाइलें भारत के सामने तिनके की तरह बिखर गये
- भारत ने पहले तीन दिन में ही पाकिस्तान को तबाह किया
- पाकिस्तानी सेना ने पिटने के बाद किया डीजीएमओ को फोन
- हमने कार्रवाई को केवल स्थगित किया है

नयी दिल्ली, 12 मई (एजेंसियां) : भारत और पाकिस्तान के बीच जारी उच्च स्तरीय तनाव के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को देश के नाम दिए संबोधन 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता का जिक्र करते हुए कहा कि आतंकवादियों ने सपने में भी नहीं सोचा था कि भारत इतना बड़ा फैसला करेगा।

उन्होंने कहा, देश के वीर सैनिकों ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए असीम शौर्य का प्रदर्शन किया हैं। मैं उनकी वीरता और उनके साहस को हर माता-बहन को समर्पित करता हूं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, ₹भारत के हमले में 100 से अधिक खूंखार आतंकवादियों को मौत के घाट उतारा गया। आतंकी और उनके बहुत सारे आका बीते ढाई दशकों से खुले आम पाकिस्तान में घूम रहे थे, जो भारत के खिलाफ साजिश करते थे। अब भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिए आतंक पर बड़ी चोट की है।

उन्होंने कहा, आतंकवादियों को खत्म करने के लिए हमने भारतीय सशस्त्र बलों को पूर्ण अधिकार दिए हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, पाकिस्तान ने हमारे गुरुद्वारों, घरों, मंदिरों और स्कूलों को निशाना बनाया। पाकिस्तान ने सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया, लेकिन इसमें भी पाकिस्तान खुद बेनकाब हो गया। दुनिया ने देखा कैसे पाकिस्तान के ड्रोन, मिसाइलें भारत के सामने तिनके की तरह बिखर गईं। भारत के एयर डिफेंस सिस्टम ने उन्हें आसमान में ही नष्ट कर दिया। उन्होंने कहा, पाकिस्तान की तैयारी सीमा पर वार की थी, लेकिन भारत ने पाकिस्तान के सीने पर वार कर दिया।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, ₹आज हर आतंकवादी और आतंकी संगठन हमारी बेटियों और बहनों की गरिमा और गौरव को नुकसान पहुंचाने की कोशिश के परिणामों को अच्छी तरह से समझता है। ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ एक नाम नहीं है। यह देश की सामूहिक भावनाओं और लचीलेपन का एक शक्तिशाली प्रतीक है। ऑपरेशन सिंदूर ने आतंक के खिलाफ लड़ाई में नई लकीर खींच दी है, जिसे आतंकी लांघने से पहले कई बार सोचेंगे।₹

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, भारत के ड्रोंस, मिसाइलों ने सटीकता के साथ हमला किया। पाकिस्तानी वायुसेना के एयरबेस को नुकसान पहुंचाया, जिस पर उसे बहुत घमंड था। पहले तीन दिनों में ही पाकिस्तान को इतना तबाह कर दिया, जिसका उसे अंदाजा भी नहीं था। उन्होंने कहा, भारत की आक्रामक कार्रवाई के बाद पाकिस्तान बचने के रास्ते खोजने लगा और दुनियाभर में तनाव कम करने के लिए गुहार लगाने को मजबूर हो गया।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, बुरी तरह पिटने के बाद 10 मई की दोपहर को पाकिस्तानी सेना ने हमारे डीजीएमओ को संपर्क किया। तब तक हम आतंकवाद के इन्फ्रास्ट्रक्चर को नुकसान पहुंचा चुके थे और आतंकियों को मौत के घाट उतार दिया था। आतंक के अड्डों को खंडहर बना दिया था।

उन्होंने कहा, पाकिस्तान की ओर से जब ये कहा गया कि उसकी ओर से आगे कोई आतंकी गतिविधि और सैन्य दुस्साहस नहीं दिखाया जाएगा, जब हमने उस पर विचार किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, ₹मैं फिर दोहरा रहा हूं हमने पाकिस्तान के आतंकी और सैन्य ठिकानों को जवाबी कार्रवाई को सिर्फ स्थगित किया है, आने वाले दिनों में हम पाकिस्तान के हर कदम को इस कसौटी पर मापेंगे कि वो आगे क्या रवैया अपनाता है। उसके बाद फैसला किया जाएगा।

उन्होंने कहा, भारतीय वायुसेना, सेना और नौसेना, इरऋ और अर्धसैनिक बल अलर्ट पर हैं। सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक के बाद 'ऑपरेशन सिंदूर' आतंकवाद के खिलाफ भारत की नीति है।

हम अगले मिशन के लिए तैयार हैं : भारतीय सेना

'भय बिनु होइ न प्रीत' का उदाहरण देकर पाक को दिखाया आईना

नयी दिल्ली, 12 मई (हि.स.) : भारतीय सेना ने सोमवार को एक बार फिर पाकिस्तान को आईना दिखाया और बताया कि भारत की वायु रक्षा प्रणाली कितनी मजबूत है। साथ ही बिना सबूत के खुद को महिमामंडित कर रहे पाकिस्तान को सबूत के साथ बताया कि भारत की व्यापक मारक क्षमता ने कैसे उसके महत्वपूर्ण सैन्य ढांचों को ध्वस्त कर दिया। यह स्पष्ट कर दिया कि सभी सैन्य अड्डे और प्रणालियां पूरी तरह से सक्रिय हैं और सेना अगले मिशन के लिए तैयार है।

भारतीय सशस्त्र बलों की ओर से आज दोपहर को राष्ट्रीय मीडिया केंद्र पर ऑपरेशन सिंदूर पर दूसरी विशेष पत्रकार वार्ता आयोजित की गई। इसमें वायुसेना, थलसेना और नौसेना के वरिष्ठ अधिकारियों ने मीडिया को संबोधित किया और ऑपरेशन के दौरान की गई सैन्य कार्रवाइयों, तैयारियों और उपलब्धियों का विस्तृत विवरण साझा किया।

एयर मार्शल ए.के. भारती ने पत्रकार वार्ता में रामचरित मानस की पंक्तियों का उपयोग कर पूरे ऑपरेशन को कुछ शब्दों में समझा दिया। उन्होंने कहा कि गोस्वामी जी ने लिखा है, 'बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति। बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।' उन्होंने कहा कि यह पंक्तियां आज भी प्रासंगिक हैं और हमारी नीति को स्पष्ट करती हैंझ शांति की चाह के बावजूद यदि दुस्साहस किया गया, तो उत्तर मिलेगा।

सैन्य संचालन महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई ने कहा कि हाल के वर्षों में आतंकवादी गतिविधियों का स्वरूप बदला है। अब निर्दोष नागरिकों को निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पहलगाम तक पाप का यह घड़ा भर चुका था।

एयर मार्शल एके भारती ने बताया कि सभी सैन्य अड्डे और प्रणालियां पूरी तरह से सक्रिय हैं और किसी भी भविष्य की चुनौती से निपटने के लिए तैयार हैं। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के तहत वायुसेना द्वारा भेदे गए लक्ष्यों की समग्र तस्वीर भी प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि भारतीय हवाई रक्षा प्रणाली ने उत्कृष्ट लचीलापन दिखाया। परत-दर-परत रक्षा प्रणाली के तहत प्वाइंट सुरक्षा से लेकर क्षेत्रीय सुरक्षा तक के हथियारों का प्रभावी इस्तेमाल हुआ। कई प्रकार के ड्रोन और यूसीएवी को निष्क्रिय किया गया। पुराने सिस्टम जैसे पेचोरा, ओसा-एके और एलएलएडी गनों ने भी शानदार प्रदर्शन किया, वहीं स्वदेशी 'आकाश' प्रणाली की भूमिका उल्लेखनीय रही।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने नये आवास की रखी आधारशिला

रांची, 12 मई (संवाददाता) : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सोमवार को अपने नये आवास की आधारशिला रखी। यह आवास पूरी तरह से आधुनिक सुविधाओं और सुरक्षा मानकों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाएगा, जिससे सरकार की कार्यप्रणाली और मुख्यमंत्री के कामकाज को बेहतर बनाया जा सके। इस मौके पर पारंपरिक विधि-विधान और पूजा-अर्चना के साथ शिलान्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और उनकी पत्नी कल्पना सोरेन ने विधिवत पूजन अर्चन कर भवन निर्माण की शुभ शुरूआत की।

भारत-पाक तनाव से प्रभावित मार्गों पर एयर इंडिया फिर से शुरू करेगी परिचालन

नयी दिल्ली : टाटा की अगुवाई वाली एअर इंडिया अब हालात सामान्य होने के बाद उड़ानें फिर से शुरू कर रही है। भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ने की वजह से देश के 32 एयरपोर्ट्स से फ्लाइट रद्द कर दी गई थीं। एअर इंडिया ने सोमवार को एक्स पोस्ट में बताया कि हवाई अड्डों को फिर से खोलने के बारे में विमानन अधिकारियों की अधिसूचना के बाद कंपनी जम्मू, श्रीनगर, लेह, जोधपुर, अमृतसर, भुज, जामनगर, चंडीगढ़ और राजकोट के लिए अपनी उड़ानें यानी परिचालन शुरू करने की दिशा में काम कर रही है। दूसरी एयरलाइंस भी अपनी उड़ाने शुरू कर सकती हैं।

नक्सलियों के आईईडी विस्फोट में घायल हुआ जवान लाया गया रांची

रांची, 12 मई (हि.स.) : पश्चिम सिंहभूम जिला स्थित छोटानागरा थाना क्षेत्र के कुलापाबुरू, दलाईगढ़ा और मरांगपोंगा के जंगली-पहाड़ी इलाके में सोमवार को नक्सलियों की ओर से लगाए गए इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) विस्फोट में झारखंड जगुआर बम निरोधक दस्ता के आरक्षी मनोज कुमार दमाई घायल हो गए। घायल जवान को पुलिस बल की ओर से त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस मुख्यालय और सीआरपीएफ के सहयोग से हेलीकॉप्टर के माध्यम से प्राथमिकी उपचार के बाद बेहतर ईलाज के लये रांची के राज अस्पताल भेजा गया। जहां जवान का इलाज चल रहा है। जवान के पैर में चोट है। जवान की स्थिति स्थिर है।

प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा (माओवादी) के शीर्ष नेता मिसिर बेसरा, अनमोल, मोछु, अनल, असीम मंडल, अजय महतो, सागेन अंगरिया, अश्विन, पिंटु लोहरा, चंदन लोहरा, अमित हांसदा उर्फ अपटन, जयकांत और रापा मुंडा अपने दस्ते के साथ सारंडा और कोल्हान क्षेत्र में विध्वंसक गतिविधियों के लिए भ्रमणशील हैं। इसी सूचना के आधार पर चाईबासा पुलिस, कोबरा 203 एवं 209 बटालियन, झारखंड जगुआर, सीआरपीएफ 26, 60, 134, 174, 193, 197 बटालियन की संयुक्त टीम की ओर से चार मार्च से लगातार विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के दौरान सोमवार को नक्सलियों की ओर से पूर्व में लगाए गए आईईडी में विस्फोट हुआ, जिसकी चपेट में आकर आरक्षी मनोज कुमार दमाई घायल हो गए।

आईजी अभियान सह पुलिस प्रवक्ता एवी होमकर ने बताया कि नक्सलियों के खिलाफ जिले में लगातार सर्च अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अभियान के दौरान पूर्व से लगाये गये आईईडी की चपेट में आने से मनोज कुमार दमाई घायल हुआ है। उसका इलाज चल रहा है, उसकी स्थिति स्थिर है। नक्सलियों के खिलाफ सर्च अभियान लगातार जारी है।

Power Sale, Power Banking, Retail sales, Consulting & Analytics; all your needs catered to under one roof. Across geographies & products, our customer focused approach will help you navigate the intricacies of the power sector effortlessly. Being the leading power trading solutions provider in the country, our market knowledge and access can help you diversify and unbundle your supply / demand concentration risks.

YOUR COMPASS FOR ENERGY NAVIGATION

PTC India Limited
(Formerly known as Power Trading Corporation of India Limited)
2nd Floor, NBCC Tower, 15 Bhikaji Cama Place, New Delhi-110066 | Tel:011-41659500, Fax: 011-41659145
E-mail: info@ptcindia.com | Website: www.ptcindia.com
PTC India

बदलेगी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की सवारी, हवाई महल का मिल रहा उपहार

कतर परिवार ट्रम्प को दे रहा बोइंग 747-8 जंबो जेट

बेहद मूल्यवान और आलीशान विमान है बोइंग 747-8 जंबो जेट

वाशिंगटन, 12 मई (हि.स.) : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जल्द ही एयर फोर्स वन के स्थान पर बोइंग 747-8 जंबो जेट से सवारी करते नजर आएंगे। बोइंग 747-8 जंबो जेट कतर का है। कतर का शाही परिवार उन्हें उपहार के रूप में बोइंग 747-8 जंबो जेट भेंट करने जा रहा है। यह बेहद मूल्यवान और आलीशान विमान है। इसे हवाई महल और उड़ता हुआ महल भी कहा जाता है। एबीसी न्यूज चैनल की खबर के अनुसार, एक वरिष्ठ अधिकारी ने पुष्टि की है अमेरिकी सरकार के लिए अब तक का सबसे बड़ा विदेशी उपहार होगा।ट्रंप प्रशासन कतर के शाही परिवार से इसे स्वीकार करने की तैयारी कर रहा है। एक ऐसा उपहार होगा जो राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पद छोड़ने से कुछ समय पहले नए एयर फोर्स वन के रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध होगा। उस समय विमान का स्वामित्व ट्रंप प्रेसिडेंशियल लाइब्रेरी फाउंडेशन को हस्तांतरित किया जाएगा।

सोशल मीडिया पर रविवार रात एक पोस्ट में ट्रंप ने पुष्टि की कि उनका प्रशासन विमान को स्वीकार करने की तैयारी कर रहा है। उन्होंने इसे रक्षा विभाग के साथ बहुत ही सार्वजनिक और पारदर्शी लेनदेन बताया। ट्रंप फरवरी में इस विमान का अवलोकन कर चुके हैं। यह इतना इतना भव्य और सुसज्जित है कि इसे हवाई महला और उड़ता हुआ महल कहा जाता है। इसे फरवरी में वेस्ट पाम बीच अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पार्क किया गया था। ट्रंप तभी इसे देखा था।

इस उपहार को स्वीकार करने पर उठे सवालों पर न्याय विभाग के वकीलों ने रक्षा सचिव पीट हेगसेथ का बताया है कि रक्षा विभाग के लिए विमान को उपहार के रूप में स्वीकार करना और बाद में इसे ट्रंप लाइब्रेरी को सौंपना वैध है। यह रिश्वतखोरी के विरुद्ध कानूनों या किसी भी अमेरिकी सरकारी अधिकारी के किसी भी राजा, राजकुमार या विदेशी राज्य से उपहार स्वीकार करने के संविधान के निषेध (वेतन खंड) का उल्लंघन नहीं करता है।

भाजपा की राजनीति केवल भ्रम फैलाने व अवरोध पैदा करने तक सीमित : झामुमो

मुख्य संवाददाता

रांची, 12 मई : भारतीय जनता पार्टी की ओर से हेमंत सरकार पर लगाए गए आरोपों पर झारखंड मुक्ति मोर्चा ने कड़ा पलटवार करते हुए कहा है कि भाजपा जनादेश का अपमान करने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। झामुमो महासचिव सह प्रवक्ता विनोद कुमार पांडेय ने कहा है कि भाजपा को यह समझ लेना चाहिए कि जनता ने उन्हें विपक्ष में बैठने के लिए चुना है, न कि निराधार आरोप लगाने के लिए। उन्होंने कहा कि भाजपा की राजनीति केवल भ्रम फैलाने और अवरोध पैदा करने तक सीमित हो गई है।

'मंइयां सम्मान' योजना को लेकर भाजपा की प्रतिक्रिया पर झामुमो ने कहा कि भाजपा केवल राजनीति करने के लिए गरीब बहनों-बेटियों के सम्मान का मुद्दा उठा रही है। झामुमो प्रवक्ता विनोद पांडेय ने कहा, ₹अगर भाजपा को बहनों-बेटियों की इतनी ही चिंता है, तो उनके कार्यकाल में ऐसी कोई योजना क्यों नहीं बनी? हेमंत सरकार ने मंईयां सम्मान योजना के जरिए 58-60 लाख बहनों-बेटियों को आर्थिक संबल देकर उनके चेहरे पर मुस्कान ला दिया है।

उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं को यह समझ लेना चाहिए कि हेमंत सरकार ने बिना किसी भेदभाव के योजनाओं का क्रियान्वयन किया है। इसके साथ ही सरकार की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह इस योजना के दुरुपयोग को रोके, ताकि पात्र लाभुकों को उसका हक जरूर मिल सके। भाजपा केवल झूठ फैलाकर बहनों-बेटियों के बीच भ्रम पैदा करने का प्रयास कर रही है।

प्रवक्ता विनोद पांडेय ने कहा कि अगर भाजपा को राज्य की जनता की इतनी ही चिंता है तो उन्हें यह बताना चाहिए कि उनके कार्यकाल में क्यों नहीं हुए आदिवासी और दलितों के हितों की रक्षा के ठोस उपाय? उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा का उद्देश्य विकास कार्यों में बाधा डालना है। हेमंत सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में कई ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं। यह भाजपा को पच नहीं रहा है और इसलिए वे मनगढ़ंत आरोप लगाकर सरकार को बदनाम करने का प्रयास कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि झामुमो सरकार राज्य के विकास के लिए प्रतिबद्ध है और भाजपा के प्रोपेगेंडा से विचलित होने वाली नहीं है। जनता ने इंडिया गठबंधन को विकास के लिए चुना है और हम अपनी जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ निभाते रहेंगे।

मेधा डेयरी की कीमत में दो रुपए तक वृद्धि

रांची : आज यानि 12 मई से झारखंड में मेधा डेयरी के दूध और अन्य उत्पादों की कीमतों में वृद्धि हो गई है। कंपनी ने दूध की कीमत में 2 रुपये प्रति लीटर की बढ़ोतरी की है, जिसका सीधा असर उपभोक्ताओं की जेब पर पड़ेगा।

नई कीमतें:

मेधा दूध : 1 लीटर-46 रुपये (पहले 44 रुपये) आधा लीटर-23 रुपये (पहले 22 रुपये)

टोंड मिल्क : 1 लीटर-53 रुपये (पहले 51 रुपये) आधा लीटर-27 रुपये (पहले 26 रुपये)

स्टैंडर्ड मिल्क (शक्ति) : 1 लीटर-59 रुपये (पहले 57 रुपये) आधा लीटर-30 रुपये (पहले 29 रुपये)

स्टैंडर्ड मिल्क (शक्ति स्पेशल) : 1 लीटर-60 रुपये, आधा लीटर-30 रुपये

काऊ मिल्क : आधा लीटर-28 रुपये

खोवा मिल्क : 6 लीटर-348 रुपये (पहले 336 रुपये)

छेना मिल्क : 6 लीटर-312 रुपये (पहले 300 रुपये)

खबरकोना

सेवा, समर्पण और संवेदना का प्रतीक हमारी नर्सें

रांची : गुरु नानक हॉस्पिटल में आज अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस बड़े ही गरिमामय और हर्षोल्लासपूर्ण माहौल में मनाया गया। इस खास मौके पर नर्सिंग स्टाफ के अमूल्य योगदान को सम्मानित किया गया और केक काटकर उनके कार्य के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई। हम गर्व करते हैं अपनी नर्सिंग टीम पर, जो हर परिस्थिति में मरीजों की देखभाल में अपना सर्वस्व न्योछावर करती हैं।

झारखंड में भी मिले हैं बौद्ध स्थलों के अवशेष, गौतम बुद्ध का रहा है झारखंड से भी नाता

रांची : आज बुद्ध पूर्णिमा है। झारखंड से भी गौतम बुद्ध का नाता रहा है। राज्य में कई ऐसे स्थल हैं जो भगवान बुद्ध से जुड़े हुए हैं। यहां कई बौद्ध स्थल और अवशेष मिले हैं, जो इस बात का प्रमाण देते हैं कि भगवान बुद्ध ने झारखंड की धरती पर कदम रखा था।

झारखंड में कहां-कहां बुद्ध से जुड़े स्थल हैं

- जोन्हा फॉलः रांची में स्थित जोन्हा फॉल को गौतमधारा फॉल भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि भगवान बुद्ध ने यहां आकर स्नान किया था और ध्यान लगाया था।
- पलामूः पलामू में खुदाई के दौरान दो स्तूप मिले हैं, जो भगवान बुद्ध के समय के हैं।
- चतराः चतरा के इटखोरी में एक पूरी नगर की संरचना के अवशेष मिले हैं, जो भगवान बुद्ध के समय के हैं।
- हजारीबागः हजारीबाग के बहोरनपुर में खुदाई के दौरान बौद्ध प्रतिमाएं और बौद्ध विहार के अवशेष मिले हैं।

झारखंड में बौद्ध धर्म का प्रभाव

- बौद्ध धर्म का प्रभावः झारखंड में बौद्ध धर्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो भगवान बुद्ध के समय से है।
- तीर्थ स्थलः जोन्हा फॉल जैसे स्थल बौद्ध धर्म के लोगों के लिए तीर्थ स्थल के रूप में जाने जाते हैं।
- पुरातात्विक महत्वः झारखंड में मिले बौद्ध अवशेष पुरातात्विक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण हैं, जो भगवान बुद्ध के समय की जानकारी देते हैं।

बुंडू जंगल में बाघ होने की सूचना, जांच के लिए पहुंची वन विभाग की टीम

रांची, (हि.स.) : रांची के बुंडू जंगल में बाघ होने की सूचना पर वन विभाग की टीम जांच करने पहुंची और जंगल को छान मारा, लेकिन वहां उन्हें कोई बाघ नहीं दिखा। स्थानीय लोगों ने एक मवेशी का शव देखने के बाद वन विभाग को इसकी सूचना दी थी। दरअसल, ग्रामीणों ने नामकुम थाना क्षेत्र के रईसा मोड़ के जंगल में सोमवार की सुबह एक मवेशी का शव देखा। इसके बाद ग्रामीणों ने वन विभाग को सूचना दी कि बाघ ने मवेशी को मारा है। सूचना पर वन विभाग के अधिकारियों और कर्मियों ने स्थल का जायजा लिया और मृत मवेशी के जख्मों की जांच की। वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि मवेशी को जिस तरीके से मारा गया है, उसे देखकर ऐसा लगता है कि बाघ के हमले से उसकी मौत हुई है। बहरहाल, ग्रामीण सोमा उरांव की खबर पर वन विभाग पूरी तरह से सतर्क है और लोगों को जंगल में ना जाने की सलाह दी है। गांव में बाघ होने की आशंका के बाद से लोगों में दहशत है। इससे पहले खूंटी वन प्रमंडल के अधिकारियों ने बाघ के होने की सूचना पर पूरा जंगल छान मारा था, लेकिन इसकी पुष्टि नहीं हो सकी थी।

विहिप के केंद्रीय महामंत्री आज पहुंचेंगे रांची, कई बैठकों में होंगे शामिल

रांची, (हि.स.) : विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय महामंत्री बजरंग बागड़ा अपने दो दिवसीय झारखंड प्रवास पर 13 मई को रांची पहुंच रहे हैं। इन दो दिनों के दौरान वो विहिप कार्यकताओं तथा सामाजिक और धार्मिक संगठनों के पदाधिकारियों के साथ अलग-अलग बैठकें करेंगे। विश्व हिंदू परिषद के झारखंड प्रांत मंत्री मिथिलेश्वर मिश्र ने बताया वीएचपी महामंत्री 13 मई को 10:00 बजे से एयरपोर्ट रोड स्थित होटल ग्रीन एकर्स में अधिवक्ताओं के साथ बैठक करेंगे। दोपहर 2:00 बजे हटिया में समरसता संगोष्ठी में शामिल होंगे, जबकि शाम 6:00 बजे मोराबादी में व्यावसायिक वर्ग के साथ बैठक करेंगे। वहीं 14 मई को वो प्रांत टोली बैठक, पत्रकार वार्ता और हरमू में मंदिरों के पुजारी एवं पुरोहितों के साथ बैठक करेंगे।

नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल ने सीएम को लिखा पत्र, जेएससीए चुनाव पारदर्शी व निष्पक्ष कराने का किया आग्रह

मुख्य संवाददाता

रांची, 12 मई : नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को पत्र लिखकर झारखंड स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन (जेएससीए) के चुनाव चुनाव में प्रशासनिक प्रभाव व हस्तक्षेप को रोककर पारदर्शी एवं निष्पक्ष चुनाव कराने का आग्रह किया है। पत्र में कहा है कि जेएससीए का चुनाव 18 मई को प्रस्तावित है, जिसके लिए 12 एवं 13 मई को नामांकन तथा 14 मई को नाम वापसी की तिथि निर्धारित है। लेकिन सूचनाओं से स्पष्ट हो रहा है कि यह चुनाव एक खेल संघ का चुनाव न होकर प्रशासनिक पद के दुरुपयोग का रूप लेता जा रहा है।

अधिकारी चुनाव प्रचार के लिए खुलेआम घूम रहे

सरकारी सेवा में लगे अधिकारी चुनाव प्रचार के लिए खुलेआम घूम रहे हैं। प्रशासनिक तंत्र का खुले तौर पर दुरुपयोग कर रहे हैं। ये सरकारी अधिकारी अपने पद, प्रभाव एवं सुविधाओं का इस्तेमाल कर मतदाताओं को प्रभावित कर रहे हैं, जो पूर्णतः अवैध, अनैतिक और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के विरुद्ध है। जेएससीए राज्य का एक प्रतिष्ठित खेल संगठन है और इसकी साख को बचाना हम सभी की जिम्मेदारी है। यदि अभी हस्तक्षेप नहीं किया गया तो झारखण्ड क्रिकेट की पहचान और गुणवत्ता दोनों पर खतरा मंडराने लगेगा।

पूर्व में भी सत्ता का हुआ था दुरुपयोग : पूर्व में भी जेएससीए के चुनावों में सत्ता का दुरुपयोग होता रहा है, जिसके कारण चयन प्रक्रिया में भाई-भतीजावाद, जातिवाद और क्षेत्रवाद को बढ़ावा मिला है। इसका सीधा प्रभाव राज्य के योग्य एवं मेहनती खिलाड़ियों के अवसरों पर पड़ा है, जिससे वे हतोत्साहित एवं निराश हुए हैं। जेएससीए के चुनाव में ऐसे लोगों के कब्जे से यह भी देखा गया है कि एसोसिएशन की संपत्ति और संसाधनों का मनमाने ढंग से दुरुपयोग होता है। अपने प्रभाव से ये लोग वर्षों तक पदों पर बने रहते हैं और अपने चहेते लोगों को सदस्य बनाकर संगठन को भ्रष्टाचार का केंद्र बना देते हैं।

नेता प्रतिपक्ष ने क्या किया है सीएम से आग्रह

- चुनाव प्रक्रिया में किसी भी प्रकार के सरकारी हस्तक्षेप, पद प्रभाव एवं सरकारी सुविधा के दुरुपयोग को अविलंब रोका जाए।
- ऐसे सरकारी अधिकारियों पर तत्काल कार्रवाई की जाए जो चुनाव को प्रभावित करने की कोशिश कर रहे हैं।
- मतदान के दिन कड़ी विधि-व्यवस्था की व्यवस्था की जाए ताकि सदस्य निर्भीक होकर मतदान कर सकें।
- चुनाव आयोग या किसी स्वतंत्र संस्था की निगरानी में यह चुनाव सम्पन्न कराया जाए ताकि इसकी निष्पक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित हो सके।

5.46 लाख बहनों-बेटियों का अपमान : राफिया नाज

देशप्राण संवाददाता

रांची : भाजपा की प्रदेश प्रवक्ता राफिया नाज ने ह्लमइयाँ सम्मान योजनाह्व के तहत 5.46 लाख बहनों-बेटियों को अपात्र ठहराने के निर्णय पर नाराजगी जताई है। कहा कि यह निर्णय हेमंत सरकार की दोहरी नीति और वोट बैंक राजनीति का स्पष्ट प्रमाण है, जिसने पहले इन गरीब बहनों-बेटियों को योजना में शामिल कर वोट बटोरे।अब चुनाव बाद उन्हें अपात्र बताकर अपमानित किया जा रहा।उन्होंने चेतावनी दी कि यदि एक भी बहन-बेटी से वसूली की गई तो भारतीय जनता पार्टी बहनों-बेटियों का अपमान कतई बर्दाश्त नहीं करेगी।

राफिया ने कहा कि हेमंत सरकार पैसे देकर वोट लेती है, फिर सत्ता में आने के बाद वसूली करती है। यही इनका असली चरित्र है।ह्व मार्च 2025 तक आधार लिंकिंग और दस्तावेजी सत्यापन के नाम पर केवल 37.55 लाख बहनों-बेटियों को ही स्थायी रूप से लाभ मिला, लेकिन अब अचानक 5.46 लाख को ह्यअपात्रह्न कहकर सूची से हटाया जा रहा है । अब सरकार वसूली की भी बात कर रही है। अगर ये बहन-बेटियाँ वास्तव में अपात्र थीं, तो उन्हें डीबीटी के माध्यम से राशि क्यों दी गई? क्या यह योजना नहीं, बल्कि धोखा था।

उन्होंने कहा सरकार अपने वादों से पलट रही है। हेमंत सरकार का यह दोहरा मापदंड साफ करता है कि कभी इन बहनों-बेटियों का वास्तविक भला नहीं चाहा गया, वे केवल चुनावी वोट बैंक थीं। क्या इन्हें वोट बैंक मानकर ही सम्मान राशि दी गई थी? भाजपा की प्राथमिकता हमेशा बहन-बेटियाँ रही हैं, इस अन्याय को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भाजपा उनकी गरिमा का पुनरुद्धार करेगी। अगर एक भी बहन-बेटी से वसूली की गई तो सड़क से सदन तक अपनी बहनों-बेटियों की आवाज बुलंद करेंगे।

राज्य के रेवेन्यू कोर्ट में 58,691 के मामले लंबित

देशप्राण संवाददाता

रांची : राज्य के रेवेन्यू कोर्ट में वर्तमान में 58,691 मामले लंबित हैं। रेवेन्यू कोर्ट में कुल दो लाख 55 हजार तीन मामले आए, जिसमें एक लाख 96 हजार 312 मामलों का निष्पादन कर लिया गया। मामलों के निष्पादन का प्रतिशत 76.98 फीसदी है। वहीं कुल 23.02 फीसदी मामले अब तक लंबित हैं।

रांची में सबसे अधिक 22127 मामले लंबित : राजधानी रांची में सबसे अधिक 22,127 मामले लंबित है। इसके अलावा देवघर में 3143 , धनबाद में 3163,हजारीबाग में 4778, जामताड़ा में3602 और खूंटी में 3081 मामले लंबित हैं।

किस जिले में कितने मामले लंबित

जिला	लंबित केसों की संख्या
बोकारो	848
चतरा	1316
देवघर	3143
धनबाद	3163
दुमका	1773
पूर्वी सिंहभूम	1837
गढ़वा	1066
गिरिडीह	1648
गोड्डा	1621
गुमला	856
हजारीबाग	4778
जामताड़ा	3602
खूंटी	3081
कोडरमा	379
लातेहार	432
लोहरदगा	671
पाकुड़	328
पलामू	661
रामगढ़	2065
रांची	22,127
साहेबगंज	805
सरायकेला	1246
सिमडेगा	184
पश्चिमी सिंहभूम	1061

किस जिले में कितने प्रतिशत मामलों का निष्पादन

जिला	निष्पादित केसों का प्रतिशत
बोकारो	89.04
चतरा	83.37
देवघर	66.58
धनबाद	72.34
दुमका	74.95
पूर्वी सिंहभूम	78.10
गढ़वा	88.96
गिरिडीह	84.69
गोड्डा	72.86
गुमला	81.61
हजारीबाग	78.20
जामताड़ा	47.32
खूंटी	76.90
कोडरमा	93.09
लातेहार	90.87
लोहरदगा	82.09
पाकुड़	93.16
पलामू	90.44
रामगढ़	72.46
रांची	70.26
साहेबगंज	71.91
सरायकेला	84.41
सिमडेगा	97.06
पश्चिमी सिंहभूम	79.58

बढ़ती जा रही झारखंड के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के बीच आर्थिक खाई

मुख्य संवाददाता

रांची, 12 मई : झारखंड सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 के अनुसार, राज्य में प्रति व्यक्ति खर्च में वृद्धि हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति खर्च 2,946 रुपये प्रति माह है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह खर्च 5,393 रुपये प्रति माह है। इसका खुलासा झारखंड सरकार के इकोनॉमी सर्वे के कैपिटा एक्सपेंडिचर एंड कंजप्शन इन इक्वावलिटी(झारखंड में प्रति माह प्रति व्यक्ति खर्च और उपभोग में अंतर) सेक्शन में किया गया है।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में खर्च का अंतर भी बढ़ा : ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति खर्च का अंतर बढ़ रहा है। वर्ष 2022-23 में यह अंतर 78 प्रतिशत था, जो वर्ष 2023-24 में बढ़कर 83 प्रतिशत हो गया है।

गरीब और अमीर के बीच बढ़ती जा रही दूरी : शहरी क्षेत्रों में रहने वाले सबसे गरीब 10 प्रतिशत लोगों का प्रति माह खर्च 2,215 रुपये है, जबकि सबसे अमीर 10 प्रतिशत लोगों का प्रति माह खर्च 8,315 रुपये है। यह दशार्ता है कि गरीब और अमीर के बीच बड़ा अंतर है।

भोजन और अनाज के खर्च पर भी अंतर : ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग अनाज और भोजन पर शहरी क्षेत्रों के लोगों से अधिक खर्च करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में 48 प्रतिशत खर्च भोजन पर होता है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह खर्च 42 प्रतिशत है।

क्या है ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में अनाज की खपत

- ग्रामीण क्षेत्रों में अनाज की खपतः 9.93 किलोग्राम प्रति माह
- शहरी क्षेत्रों में अनाज की खपतः 9.59 किलोग्राम प्रति माह
- ग्रामीण क्षेत्रों में चावल की खपतः 68.36 प्रतिशत
- शहरी क्षेत्रों में चावल की खपतः 56.97 प्रतिशत

ग्रामीण क्षेत्रों में अनाज की खपतः

- चावलः 68.36%
- गेहूंः 31.34%
- खुरदुरे अनाजः 0.25%

शहरी क्षेत्रों में अनाज की खपतः

- चावलः 56.97%
- गेहूंः 42.97%
- खुरदुरे अनाजः 0.03%

झारखंड में निबंधित हैं 5142 फर्म, रांची में सबसे अधिक 1000 फर्म हैं निबंधित

देशप्राण संवाददाता

रांचीः झारखंड में 5142 फर्म निबंधित हैं। इसमें सबसे अधिक रांची में 1000 फर्म निबंधित हैं। वर्तमान में फर्म निबंधन से संबधित 202 आवेदन लंबित हैं।

किस जिले में कितने फर्म हैं निबंधित

जिला	निबंधित फर्मों की संख्या
रांची	1000
पूर्वी सिंहभूम	650
धनबाद	454
बोकारो	203
हजारीबाग	37
चतरा	69
कोडरमा	81
रामगढ़	152
खूंटी	17
गुमला	66
लोहरदगा	38
सिमडेगा	13
लातेहार	61
गढ़वा	136
दुमका	76
पाकुड़	28
गोड्डा	46
जामताड़ा	98
देवघर	165
गिरिडीह	100
सरायकेला	296
साहेबगंज	08
पश्चिमी सिंहभूम	71।

बुद्ध पूर्णिमा पर श्री राधा कृष्ण मंदिर में हुआ विशेष पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन का आयोजन

देशप्राण संवाददाता

रांची : श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट द्वारा संचालित पुंदाग मे श्री कृष्ण प्रणामी मंगल राधिका सदानंद सेवा धाम श्री राधा-कृष्ण मंदिर मे बुद्ध पूर्णिमा का पावन पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री राधा कृष्ण का अलौकिक श्रृंगार, विशेष पूजा अर्चना, प्रसाद भोग, भजन कीर्तन एवं सामूहिक महाआरती का आयोजन किया गया।

श्री राज श्याम जी को फल,मेवा,चूरमा,पेड़ा का विधिवत भोग पुजारी अरविंद पांडे द्वारा लगाया गया। तथा पूरे विधि विधान एवं मंत्रोच्चार साथ पूजा- अर्चना एवं महाआरती की गई। उपस्थित सैकड़ो श्रद्धालुओं ने हाथ जोड़कर भगवान श्री राधा कृष्ण से विश्व शांति के लिए प्रार्थना की। एवं सबों ने सामूहिक महाआरती मे भाग लिया। तत्पश्चात श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद भोग का वितरण किया। गया। 2 घंटे तक चली भजन-कीर्तन के कार्यक्रम मे ट्रस्ट के सदस्यों एवं महिलाओं द्वारा गाये मनमोहक सुमधुर भजनों की अमृत गंगा का रसपान कराते हुए श्रोताओं को खूब झुमाया। एवं पूरे मंदिर परिसर को कृष्णमय बना दी।

ट्रस्ट के प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय सर्राफ ने बताया बुद्ध पूर्णिमा जिसे वैशाख पूर्णिमा भी कहा जाता है, इस दिन लोग सत्य, अहिंसा और संयम का व्रत लेकर पूर्ण अर्जित करते हैं, बुद्ध पूर्णिमा बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म दोनों के अनुयायियों के लिए अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण है, इस दिन का धार्मिक महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह दिन आध्यात्मिक जागरूकता और मानवता की सेवा को प्रेरणा देता है तथा ध्यान, साधना और करुणा के साथ भगवान बुद्ध की पूजा करने से मानसिक शांति मिलती है।

इस अवसर पर- ट्रस्ट के अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल, उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, निर्मल जालान, सचिव मनोज चौधरी, सज्जन पाड़िया, पूरणमल सर्राफ,सुरेश भगत, सुरेश अग्रवाल,निर्मल छावनिका, नंदकिशोर चौधरी,पवन पोद्दार, शिव भगवान अग्रवाल, विशाल जालान, सुनील पोद्दार, विष्णु सोनी, मनीष सोनी, संजय सर्राफ, विधा देवी अग्रवाल, सुनीता अग्रवाल, संतोष देवी अग्रवाल, मधु जाजोदिया, उर्मिला पाड़िया सहित बड़ी संख्या में महिलाएं, पुरुष उपस्थित थे।

बुद्ध के पथ पर चलकर शांति व आनंद के अनंत को प्राप्त कर सकते है : पुष्कर महतो

देशप्राण संवाददाता

रांची : झारखंड आंदोलन संघर्ष मोर्चा के तत्वावधान में आज बुद्ध पुर्णिमा के अवसर दुनिया को युद्ध की नहीं बुद्ध की आवश्यकता है विषय पर डोरंडा स्थित गोरखा चौक के समीप शीतल पेयजल वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से सम्राट अशोक, अंगुली माल डाकू व डॉ भीमराव अंबेडकर सहित दुनिया के प्रमुख देश, महापुरुष गण बुद्ध के पथ पर चलकर शांति व आनंद के अनंत को प्राप्त किए हैं। आर्थिक उन्नति की ओर अग्रसर हैं। बुद्ध के मार्ग से यथार्थवाद का परिचायक बने। जिसने आतंकवाद ,उग्रवाद एवं हिंसा का सहारा लिया वे आर्थिक रूप से गुलाम हुए हैं का सन्देश दिया।

मौके पर झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के संस्थापक प्रधान सचिव पुष्कर महतो ने कहा कि हिंसा किसी समस्या का समाधान नहीं। विनाश का परिचायक है। बुद्ध के मार्ग ही तरक्की ,शांति, आनंद सद्भाव के मार्ग हैं। कार्यक्रम में कार्यकारी अध्यक्ष जितेंद्र सिंह कुशवाहा ने कहा कि बुद्धम शरणम गच्छामि ही सत्यम शिवम सुंदरम है।

कार्यक्रम में दक्षिणी छोटा नागपुर प्रमंडल की अध्यक्ष रोजलीन तिर्की ,सुबोध लकड़ा, सुजीत कुमार राम ,सुचिता बरदेवा, सुषमा बरदेवा प्रमुख थे। कार्यक्रम का संचालन व स्वागत रांची जिला संयोजिका पुष्पा बरदेवा ने की।

शपथ पत्र

मैं श्याम कुमार यादव, उम-42 वर्ष, पिता-सहदेव प्रसाद यादव, निवासी-कमलटोला, पोस्ट-साहिबगंज, थाना-नगर थाना (साहिबगंज), जिला-साहिबगंज (झारखंड) आधार नंबर-910189119542, स्वेच्छा से एवं शपथपूर्वक यह शपथ पत्र निर्गत करता हूं कि

1. कशिश कुमारी (Kashish Kumari) मेरी पुत्री है।
2. मेरी पुत्री कशिश कुमारी (Kashish Kumari) का सही एवं वास्तविक जन्म दिनांक 05.01.2009 है जो कि साहिबगंज में जन्म प्रमाण पत्र के अनुसार साहिबगंज में जन्म लिया है।
3. मेरी पुत्री के आधार कार्ड नंबर-7564 6775 1424 में उसका नाम स्नेहा कुमारी (Sneha Kumari) अंकित है, जो त्रुटिवश अंकित है। मेरी पुत्री का नाम स्नेहा कुमारी नहीं है, उसका सही नाम कशिश कुमारी (Kashish Kumari) है।
4. मेरी पुत्री के आधार कार्ड में जन्म दिनांक 02.01.2007 अंकित है, जो त्रुटिवश है। उसकी वास्तविक जन्म दिनांक 05.01.2009 है।
5. अतः मेरी पुत्री के आधार कार्ड नंबर-7564 6775 1424 में अंकित नाम स्नेहा कुमारी एवं जन्म दिनांक 02.01.2007 के स्थान पर सही एवं वास्तविक नाम-कशिश कुमारी तथा जन्म दिनांक-05.01.2009 सुधार कर अंकित करने की कृपा की जाए।
6. यह कि मेरी पुत्री का नाम कशिश कुमारी (Kashish Kumari) का माता का नाम पिंकी देवी है तथा आधार नंबर-5650 8923 0700 है।

यह शपथ पत्र मेरे द्वारा दिए गए उपर्युक्त सभी कथन सही एवं सत्य है तथा इसका कोई भी भाग असत्य या भ्रामक नहीं है।

नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल ने फिर साधा सीएम हेमंत सोरेन पर निशाना

हेमंत सोरेन बताएं राज्य में डीआईजी बड़ा या डीएसपी : बाबूलाल मरांडी

देशप्राण संवाददाता

रांची : भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने फिर एकबार मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर निशाना साधा है। मरांडी ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन झारखंड के लोगों को आपसे इस सवाल का जवाब चाहिए कि राज्य के कानून में डीआईजी बड़ा या डीएसपी बड़ा है?

उन्होंने कहा कि समाचारों से ज्ञात हुआ कि धनबाद इलाके के कुछ पुलिसकर्मियों का तबादला डीआईजी की प्रशासनिक कारवाई की अनुशंसा पर हुआ था। फिर किसी डीएसपी की रिपोर्ट पर उन पुलिसकर्मियों का तबादला रोक दिया गया। इसपर पुलिसकर्मियों के एसोसिएशन ने भी इस तबादले और स्थगन की प्रक्रिया पर सवाल उठाकर जांच की मांग की है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि अनौपचारिक रूप से कई पुलिसवालों ने मुझे बताया है कि पुलिस मुख्यालय में एनजीओ के कुछ लोग ट्रांसफर-पोस्टिंग की दुकान खोलकर बैठ गये हैं, जहां सब कुछ कायदे-कानून को ताक पर रख कर हो रहा है।

उन्होंने कहा कि आखिर ऐसा हो भी क्यों नहीं, जब राज्य में कोई डीजीपी नहीं है और जिनसे डीजीपी का काम असंवैधानिक एवं गैर कानूनी तरीके से लिया जा रहा है और वे बिना वेतन के खुशी-खुशी अपनी सेवा दे कर पूरे पुलिस महकमे और जनमानस के बीच इस अवैतनिक सेवा के लिये हंसी-मजाक के पात्र बने हुए हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री स्वयं ऐसे हालातों के लिए जिम्मेवार हैं। उन्हें इन सवालों का जवाब अविलंब देना चाहिए।

रांची में दो युवकों की हत्या, जांच में जुटी पुलिस

रांची, (हि.स.) : रांची के धुर्वा थाना क्षेत्र में रविवार रात गला रेतकर दो युवकों की हत्या करने का मामला प्रकाश में आया है। पुलिस ने दोनों युवकों के शव बरामद कर लिए हैं, लेकिन उनकी पहचान नहीं हो पाई है। रविवार देर रात धुर्वा पुलिस को सूचना मिली थी कि बालसिरिंग स्थित पुल के पास दो युवकों के शव देखे गए हैं। पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और तफ्तीश शुरू की, तो पता चला कि दोनों युवकों की हत्या को अंजाम किसी धारदार हथियार से अंजाम दिया गया है। बताया जा रहा है कि दोनों की हत्या किसी दूसरी जगह पर की गई है और शवों को यहां लाकर फेंक दिया गया है। हटिया पुलिस उपाधिक्षक (डीएसपी) प्रमोद मिश्रा भी इस दोहरे हत्याकांड की सूचना पाकर घटनास्थल पर पहुंचे। उनकी अगुवाई में काफी छानबीन और आसपास के लोगों से पूछताछ के बाद भी शवों की पहचान अब तक नहीं हो पाई है। स्थानीय लोग भी शवों को पहचान नहीं पाए हैं। मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने बताया कि जहां से शव बरामद किए गए हैं, वह काफी सुनसान इलाका है, वहां बहुत कम लोग ही आते-जाते हैं। डीएसपी ने सोमवार को बताया कि दोनों मृतकों की अब तक शिनाख्त नहीं हो पाई है। यह तो तय है कि दोनों स्थानीय (लोकल) नहीं हैं, क्योंकि दोनों को कोई पहचान नहीं पाया है। मृतकों की जेब से भी कोई ऐसी वस्तु नहीं मिली है, जिससे कि उनकी पहचान की जा सके। दोनों की तस्वीर रांची के सभी थानों में भेजी गई है। इसके अलावा नजदीक के जिलों में भी तस्वीर भेजी गई है, ताकि उनकी पहचान की जा सके। पूरे मामले की गहनता से जांच-पड़ताल की जा रही है।

अनाथ हुए बच्चों की खबर पर झालसा ने लिया संज्ञान

देशप्राण संवाददाता

रांची : मीडिया में छपी खबर माता-पिता के आकस्मिक निधन होने से बच्चों के अनाथ हो जाने पर झारखंड हाई कोर्ट के न्यायाधीश-सह-कार्यपालक अध्यक्ष, झालसा सुजित नारायण प्रसाद ने सोमवार को संज्ञान लिया है। झालसा अध्?यक्ष ने झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार और जिला विधिक सेवा प्राधिकार को आदेश दिया है कि वह तत्काल टीम गठित कर बेड़ो प्रखंड के हरिहरपुर जामटोली गांव में पहुंचकर इन बच्चों को विधिक सहायता दे।

निर्देश का पालन करते हुए न्यायायुक्त के मार्गदर्शन में डालसा के सचिव (इंचार्ज) अभिषेक श्रीवास्तव, पीएलवी, सतीश कुमार, सधनी कुमारी, दिनेश कुमार प्रमाणिक सहित अन्य की टीम गठित कर बच्चों से मिलकर उन्हें हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया।

सरकारी योजनाओं की दी जानकारी : टीम ने पीड़ित परिवार से मिलकर पीड़ित परिवार को कई सरकारी योजनाओं की जानकारी दी। डालसा टीम ने एक कमजोर परिवार की पहचान की गई। इसमें एक बुजुर्ग महिला और तीन अनाथ बेटियां हैं। चारों खराब आवासीय परिस्थितियों में रह रहे हैं और बुनियादी कल्याण अधिकारों तक पहुंच से वंचित हैं।

तत्काल कानूनी सहायता शुरू की गई और पेंशन योजनाओं, आवास, राशन और शिक्षा लाभों तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए तत्काल कार्रवाई की जा रही है।

टीम ने बाल कल्याण विभाग से संपर्क किया और उन्होंने तीनों लड़कियों को कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में प्रवेश दिलाने का आश्वासन दिया है। इसके बाद जिला शिक्षा अधिकारी से भी डीएलएसए ने संपर्क किया और सहयोग का आश्वासन दिया।

इसके अलावा, पीएलवी को कमजोर लड़कियों और उनके रिश्तेदारों को डीएलएसए कार्यालय में लाने का निर्देश दिया गया है। तीनों लड़कियों के पुनर्वास, संरक्षण और देखभाल के लिए बेहतर समन्वय के लिए संबंधित विभाग को सूचित कर दिया गया है। स्थानीय पीएलवी और ग्रामीणों ने हस्ताक्षरित आवेदन प्रस्तुत किया।

पीड़ित परिवार को विभिन्न योजनाओं दादा-दादी वृद्धा पेंशन योजना, पीएम आवास योजना, सिंचाई कूप योजना, सुकर पालन योजना, दीदी-बाड़ी योजना का लाभ दिलाने के लिए आवेदन पीएलवी और जन प्रतिनिधियों की ओर से डालसा को दिया गया है। डालसा की पहल पर मृतक माता-पिता के बच्चों को कस्तुरबा गांधी आवासीय विद्यालय में नामांकन कराने की ओर भी प्रयास किया जा रहा है।

डोरंडा में धूमधाम से मनायी गयी भगवान बुद्ध जयंत, शांति और समृद्धि की कामना के साथ हुआ आयोजन

देशप्राण संवाददाता

रांची, 12 मई : डोरंडा स्थित गोरखा चौक, नेपाल हाउस परिसर में भगवान बुद्ध का जन्मोत्सव समारोह रविवार को हर्षोल्लास एवं भक्ति भावना के साथ मनाया गया। इस आयोजन का नेतृत्व छोटानागपुर बौद्ध सोसाइटी ने किया। सुबह से ही श्रद्धालु महिला भक्तों की भारी भीड़ पूजा-अर्चना में शामिल होने के लिए उमड़ पड़ी। खास तौर पर दार्जिलिंग से आए लामा द्वारा महिलाश भक्तों को विधिपूर्वक पूजा करायी गयी।

भक्तजनों का एक समूह सिद्धार्थ नगर स्थित हॉस्पिटल लाइन पहुंचा, जहां पारंपरिक 'लुंगदर झंडा' फहराया गया एवं भगवान गौतम बुद्ध की विशेष पूजा-अर्चना की गयी। इस अवसर पर विधायक डॉ. रामेश्वर उराँव तथा झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के महासचिव आलोक कुमार दूबे भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। दोनों अतिथियों ने श्रद्धापूर्वक भगवान बुद्ध की पूजा की, प्रसाद ग्रहण किया एवं राज्य की समृद्धि, शांति और सामाजिक समरसता के लिए प्रार्थना की।

मौके पर मीडिया से बातचीत में डॉ. रामेश्वर उराँव ने कहा कि भगवान बुद्ध का जीवन संदेश आज भी मानवता के लिए मार्गदर्शक है। उनके विचारों को आत्मसात कर हम एक समतामूलक एवं शांतिपूर्ण समाज की स्थापना कर सकते हैं।

उधर, जैप-1 वाहिनी गुंबा समिति द्वारा जैप वन परिसर में भी बुद्ध जयंती समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। समारोह की शुरूआत प्रातः 11 बजे प्रभात फेरी से हुई, जिसमें जैप वन के समादेष्टा राकेश रंजन एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आलोक कुमार दूबे मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। प्रभात फेरी के माध्यम से बुद्ध के संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया।

दोनों स्थलों पर श्रद्धालुओं में गहरी आस्था, उत्साह और शांति का वातावरण देखने को मिला। कार्यक्रम के सफल आयोजन में छोटानागपुर बौद्ध सोसाइटी, जैप वन वाहिनी गुंबा समिति एवं स्थानीय नागरिकों की सराहनीय भूमिका रही।

भगवान बुद्ध के आदर्श आज भी प्रासंगिक: आलोक दुबे

भगवान बुद्ध जयंती के अवसर पर आयोजित समारोह में झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव आलोक कुमार दुबे ने कहा कि यह दिन केवल बौद्ध अनुयायियों के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानव समाज के लिए शांति, सहिष्णुता और करुणा का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि आज का दिन हमें यह संदेश देता है कि हम भगवान बुद्ध के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएं और एक बेहतर समाज की स्थापना की ओर कदम बढ़ाएं।

भीषण गर्मी में बारिश होने से मिल रही राहत

देशप्राण संवाददाता

रांची : झारखंड में भीषण गर्मी के दौरान बीच-बीच में हो रही बारिश से लोगों को काफी राहत मिल रही है। राजधानी रांची समेत राज्य के अधिकांश जिलों में बीच-बीच में बारिश हो रही है। मौसम विभाग ने 15 से 17 मई तक कई जिलों में हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश की सम्भावना व्यक्त की है। विभाग ने जिन जिलों के लिए बारिश की संभावना व्यक्त की उनमे 15 मई को राज्य के पश्चिमी जिलों को छोड़कर शेष अन्य जिले शामिल हैं।

वहीं 16 मई को राज्य के कुछ इलाकों में भी गर्जन के साथ हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश की सम्भावना है। इसके साथ- साथ राज्य के विभिन्न इलाकों में भीषण गर्मी को लेकर भी चेतावनी जारी की गई है। इनमें 13 और 14 मई को राज्य पूर्वी जिले और 15 मई को राज्य के पश्चिमी जिलों को छोड़कर शेष भागों में लू चलने, 40-50 किमी की गति से तेज हवा और आकाशीय बिजली गिरने को लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है।

डीएवी के जोन बी व जे का शिक्षक संवर्धन कार्यशाला

देशप्राण संवाददाता

रांची : डीएवी पब्लिक स्कूल, झारखंड जोन-बी और जे से संबंधित विद्यालयों के शिक्षकों के लिए तीन-दिवसीय शिक्षक संवर्धन कार्यशाला का शुभारंभ सोमवार को हुआ। कार्यशाला रांची स्थित डीएवी पब्लिक स्कूल हेहल, डीएवी कपिलदेव और डीएवी गांधीनगर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है।

कार्यशाला में ईईडीडी, हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान, कम्प्यूटर साइंस, पीएचई, संगीत सहित अन्य विषयों में शिक्षण की प्रक्रिया में आनेवाले ग्रे एरिया (काठिन्य क्षेत्र) पर विषय विशेषज्ञों ने व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए। इसमें डीएवी विद्यालयों के लगभग 300 शिक्षक-शिक्षिकाएं ज्ञान का संवर्धन कर रहे हैं।

इस अवसर पर एमके सिन्हा, प्राचार्य-सह-प्रशिक्षण समन्वयक, डीएवी कपिलदेव, ने कहा कि समय के साथ शिक्षक की भूमिका में न केवल परिवर्तन आया है,बल्कि जिम्मेदारियां भी बढ़ी हैं। इसलिए शिक्षक को निरंतर सीखते रहने की जरूरत है। इस प्रकार की कार्यशालाएं हमें शिक्षण की नवीनतम पद्धतियों और विद्यार्थियों की जरूरतों के अनुसार खुद को ढालने में सक्षम बनाती हैं।

विपिन राय, प्राचार्य-सह-प्रशिक्षण समन्वयक, डीएवी हेहल ने कहा कि शिक्षक एक दिशा-संकेतक होता है, जो विद्यार्थियों के जीवन को उजाले की ओर ले जाता है। यह कार्यशाला शिक्षकों को न केवल एकेडमिक रूप से समृद्ध बनाएगी, बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी नई ऊर्जा देगी। शिक्षण एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें नित नूतन विचारों व प्रयोगों की आवश्यकता होती है। ऐसे आयोजनों से यह परिपक्वता आती है।

एसके मिश्रा, प्राचार्य, डीएवी बरियातू ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र की नींव होते हैं। उन्हें अद्यतन जानकारी और प्रासंगिक शिक्षण पद्धतियों से लैस करना आवश्यक है। यह कार्यशाला शिक्षकों को ज्ञान, मूल्य और दृष्टिकोणझइन तीनों स्तरों पर समृद्ध करेगी। शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों के समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य करें। कार्यशाला में प्रदीप कुमार झा (प्राचार्य, डीएवी, गांधीनगर), तापस घोष (डीएवी, पुंदाग), किरण यादव (डीएवी, नीरजा सहाय), कमलेश कुमार (प्राचार्य, डीएवी, खलारी), एसके पाठक (प्राचार्य, डीएवी, टीसीआई, गोविंदपुर) सहित अन्य विद्यालयों के प्राचार्य सहित अन्य वरीय शिक्षकों की भागीदारी रही।

संक्षिप्त समाचार

समाज ने की मां बाघेश्वरी देवी की पूजा

पूर्वी सिंहभूम : बाराद्वारी स्थित सुर्वण वर्णिक भवन में सोमवार को समाज के प्रदेश, जिला और विभिन्न शाखा कमेटी के सौजन्य से बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर मां बाघेश्वरी देवी की भव्य पूजा-अर्चना का आयोजन किया गया। पूजा का शुभारंभ समाज के पुरुषों और महिलाओं की ओर से स्वर्णरेखा नदी घाट से जल लाकर किया गया। इस अवसर पर समाज के सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे और मां बाघेश्वरी देवी के जयकारों से वातावरण भक्तिमय हो गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद विद्युत वरण महतो ने भाग लिया। उन्होंने मां बाघेश्वरी देवी से समाज के हर परिवार को विपत्तियों से बचाने और सुख-शांति प्रदान करने की प्रार्थना की। सांसद महतो ने अपने संबोधन में सुवर्ण वर्णिक समाज की एकजुटता और सामाजिक कार्यों में सक्रियता की सराहना की। उन्होंने समाज की ओबीसी सूची में शामिल होने की मांग का समर्थन करते हुए हर संभव मदद का आश्वासन दिया। इस मौके पर विधायक मंगल कालिंदी, विधायक पुर्णिमा साहु, समाजसेवी आस्तिक महतो, मोहन कर्मकार, पूर्व मंत्री दुलाल भुइयां सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

उर्सुलाइन कॉन्वेंट स्कूल के विद्यार्थियों ने वुशू प्रतियोगिता में जीता स्वर्ण पदक

देशप्राण संवाददाता

खलारी/डकरा, 12 मई : उसुर्लाइन कॉन्वेंट स्कूल खलारी के विद्यार्थियों ने नामकुम रांची में आयोजित राज्यस्तरीय वुशू प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक जीता। 10 और 11 मई को आयोजित इस प्रतियोगिता में स्कूल के तीन विद्यार्थी कक्षा सात की प्राची कुमारी, कक्षा आठ की विद्या चौहान और कक्षा पांच के कुमार हर्ष ने अपनी - अपनी श्रेणी में स्वर्ण पदक जीतकर अपने विद्यालय, परिवार और क्षेत्र का नाम रोशन किया है।

सोमवार को विद्यालय की प्राचार्या डॉ सिस्टर निर्मला सैमुअल ने विद्यालय की प्रार्थना सभा में तीनों प्रतिभागियों को मेडल पहनाकर सम्मान किया तथा उनका उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि आज खेल के क्षेत्र में भी काफी अवसर हैं तथा खेल में भी विद्यार्थी अपना भविष्य निर्माण कर सकते हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों से शिक्षा के साथ - साथ खेलों में भी रुचि लेने को कहा तथा विद्यालय में प्रत्येक शनिवार होने वाले कराटे क्लास को गंभीरतापूर्वक करने को कहा। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्या के अलावा सभी शिक्षक - शिक्षिकाएं एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

खबर कोना

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के पास बन रही अस्पताल भवन निर्माण में अनियमितता बरतने का आरोप

अड़की : सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के पास बन रही अस्पताल भवन निर्माण कर में स्थानीय ग्रामीणों ने अनियमितता बरतने का आरोप लगाया है आरोप है कि पुराना भवन को गिरकर उसके मलेव से नए बन रहे बिल्डिंग के प्लीज लेबल को भर गया है और छुपाने के लिए ऊपर से मिट्टी डाल दिया गया है। वहीं दूसरी और निमार्णाधीन भवन में पारदर्शिता की कमी देखी जा रहा है। कार्यस्थल पर योजना से संबंधित सूचना बोर्ड नहीं लगाया गया है। जिससे लोगों को योजना के प्राक्कलन से लेकर किसी अन्य तरह की जानकारी नहीं मिल पा रहा है जबकि सरकारी निर्माण के अनुसार योजना स्थल पर सूचना पट्ट लगाकर योजना के संबंध में विस्तार से जानकारी देना है।

बुढ़मू के किसानों को धान उठाव होने के एक माह बाद भी दूसरी किस्त की राशि का नहीं हुआ है भुगतान

बुढ़मू : मिलर द्वारा धान अधिप्राप्ति केंद्र से धान उठाव किये जाने के एक माह बीत जाने के बाद भी किसानो को दूसरी किस्त की राशि का भुगतान नहीं किया गया है जबकि झारखण्ड सरकार के द्वारा घोषणा की गईं है की अधिप्राप्ति केंद्र से धान उठाव हो जाने के उपरांत किसानो को दूसरी किस्त की राशि भुगतान कर दिया जाएगा लेकिन रांची जिला के ठाकुर गाँव लैंप्स मे यहां के किसानो को धान उठाव हो जाने के बाद भी दूसरी किश्त की बकाया राशि का भुगतान नहीं किया गया है जिससे यहाँ के किसान लैंप्स का चक्कर लगाते लगाते थक चुके है। मिली जानकारी के मुताबिक ठाकुरगाव लैंपस मे माह जनवरी मे किसानो के द्वारा धान बिक्री किया गया था एक पखवारा मे आधी रकम का भुगतान तो हो गया लेकिन शेष राशि का भुगतान गोदाम से धान उठाव होने के बाद भुगतान करने की बात कही गईं थी। इस बीच 12 अप्रैल को धान का उठाव हो चूका है लेकिन अभी तक 13 किसानो को दूसरी किश्त की बकाया लंबित राशि का भुगतान नहीं किया गया है। इसके बारे मे जिला प्रबंधक खाध निगम से सम्पर्क करने पर बतलाया गया की फंड की कमी के कारण भुगतान मे बिलम्ब हो रहा है। सरकार की उदासीन रवईया से लंबित बकाया राशि का भुगतान कब होगा? इस पर सवालिया निशान लग गया है। विदित है कि किसान अब खरीफ धान की खेती के लिए तैयारी कर रहे है और सरकारी तंत्र किसानो की सुध नहीं ले रहे है। जिससे बाध्य होकर किसान अब स्थानीय खरीददार के हाथो मे ही धान बेचने का मन बना रहे है।

गांव से जलता पुआल लेकर निकला पिकअप, टला हादसा

पूर्वी सिंहभूम : पूर्वी सिंहभूम जिला के पटमदा थाना क्षेत्र के धूसरा गांव में सोमवार दोपहर एक बड़ा हादसा होते-होते बच गया, जब पुआल से लदे एक पिकअप वैन में आग लग गई। चालक की सतर्कता और ग्रामीणों की तत्परता से बड़ा नुकसान टल गया। घटना सोमवार दोपहर करीब दो बजे की है, जब धूसरा गांव में पुआल से लदी एक छोटा हाथी पिकअप वैन में अचानक आग लग गई। आग लगते ही गांव में अफरा-तफरी मच गई, लेकिन चालक ने घबराने के बजाय सूझबूझ दिखाई और जलते वाहन को गांव के बीच से निकालकर मुख्य सड़क की ओर ले गया, जिससे गांव के घर और लोग सुरक्षित रहे।

चान्हो के ताला में राष्ट्रीय वयोश्री योजना के तहत एक दिवसीय शिविर का हुआ आयोजन

देशप्राण संवाददाता

चान्हो, 12 मई : चान्हो प्रखंड के ताला पंचायत भवन में सोमवार को राष्ट्रीय वयोश्री योजना के अंतर्गत सरकार द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को निशुल्क सहायक उपकरण उपलब्ध कराने हेतु एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर में राष्ट्रीय वयोश्री योजना अंतर्गत सरकार द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को निःशुल्क सहायक उपकरण उपलब्ध कराने हेतु 100 वरिष्ट नागरिकों का जांच एवं पंजीकरण किया गया है। इस शिविर में व्हील चेयर,कमोड व्हील चेयर, वॉकिंग स्टीक, कान की मशीन, वॉकर, कमर बेल्ट, घुटना बेल्ट, इत्यादि सहायक उपकरण जांच एवं पंजीकरण के बाद निःशुल्क वितरण किया जाएगा, शिविर आयोजनकर्ता पुनम उरांव (मुखिया ताला पंचायत) कमस्ती उरांव (पंचायत समिति सदस्य, ताला), अफरोज अंसारी (दिव्यांग समाजसेवी) के द्वारा शिविर आयोजन किया गया है।

इस शिविर में दीप्ति आसरा रांची से जाहिद उपस्थित थे इस शिविर को सफल बनाने में सोमा उरांव, मोजम्मिल अंसारी, एतवा उरांव, दुखना उरांव का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

युवक की धारदार हथियार व पत्थरों से कूचकर हत्या

देशप्राण संवाददाता

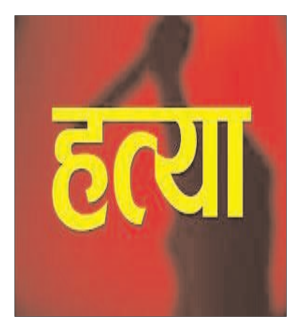

अड़की : थाना क्षेत्र के कोचांग पंचायत के बंकामा गांव के रापुद पुल के समीप कैरेया सड़क के किनारे 10 फीट नीचे झाड़ीयो से सोमवार को पुलिस ने अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद किया है। घटनास्थल अड़की और बंदगांव के सीमा पर है। आशंका व्यक्त की जा रही है कि रविवार की रात को अज्ञात अपराधियों के द्वारा धारदार हथियार और पथ्थर से कुच कर बेरहमी से हत्या कर दिया इसके उपरांत शव को झाड़ियों के बीच फेंक दिया गया। मृतक की उम्र 25 से 30 वर्ष के बीच बताई जाती है। सोमवार को जंगल मे चरवाहों के द्वारा शव देखने पर कोचांग पंचायत मुखिया को सुचित किया गया मुखिया ने पुलिस को सुचना दिया इसके बाद पुलिस की घटना स्थल पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। पुलिस हत्या के कारण की जांच पड़ताल कर रही है।

होटल के कमरे से युवती की संदिग्ध स्थिति में शव बरामद

पूर्वी सिंहभूम : साकची थाना क्षेत्र में एक होटल के कमरे से सोमवार सुबह एक युवती का संदिग्ध स्थिति में फंदे से झूलता शव पुलिस ने बरामद किया। मामले में तीन युवकों-युवतियों को हिरासत में लेकर पुलिस जांच में जुट गई है। घटना साकची थाना अंतर्गत आमबागान स्थित होटल ईआई डोराडो की है, जहां कमरे नंबर 506 में एक युवती का शव पंखे से लटका हुआ मिला। मृतका की पहचान आजाद बस्ती निवासी रुखसार के रूप में हुई है। पुलिस को सूचना मिलते ही मौके पर पहुंच कर शव को कब्जे में लिया गया और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। मिली जानकारी के अनुसार रविवार रात ऋतुराज कुमार सिंह, पंकज कुमार (दोनों राजेन्द्र नगर, साकची निवासी), दीपा दीप (ओल्ड पुरुलिया रोड, मानगो) और रुखसार ने होटल के कमरे नंबर 504 और 506 किराए पर लिए थे। पूरी रात इन लोगों ने शराब पार्टी की। सुबह रुखसार का शव मिला। कमरे से शराब की बोतलों और आपत्तिजनक सामानों की बरामदगी हुई है।

ट्रांसपोर्टिंग रोड पर भारी जल जमाव से हो रही परेशानी, दुर्घटना की आशंका

देशप्राण संवाददाता

खलारी/डकरा : डकरा केडीएच ट्रांसपोर्टिंग रोड पर जल जमाव से वहां से गुजरने वाले लोगों को भारी परेशानी हो रही है और साथ ही दुर्घटना का अंदेशा भी जताया जा रहा है। ट्रांसपोर्टिंग रोड पर भारी वाहनों के परिचालन के कारण हमेशा गुजरने वाले ग्रामीण, दो और चार पहिया छोटे वाहन सहित अन्य वाहनों को इस जल जमाव से काफी परेशानी हो रही है साथ ही उनके दुर्घटना ग्रस्त होने की आशंका बनी हुई है। यह समस्या काफी दिनों से लगातार बनी हुई है और अभी तक रोड पर जमे पानी की निकासी की कोई व्यवस्था नहीं की गई है। रोड पर जमे पानी की निकासी नहीं होने के कारण यह समस्या उत्पन्न हो गई है। वहीं आने वाले मानसून में यह समस्या और बढ़ जाएगी। ग्रामीणों सहित सीसीएल अधिकारी एवं कर्मचारियों का भी इसी रोड से आना जाना लगा रहता है। इस सड़क से रोहिणी, धमधमियां, करकट्टा, पुरनाडीह, डकरा सहित अन्य गांव से सीसीएल कर्मी और ग्रामीणों का रोजाना आनाजाना लगा रहता है और हल्की बारिश में भी इस सड़क पर जलजमाव से उन्हें काफी परेशानी उठानी पड़ती है। इस समस्या से पीड़ित सीसीएल कर्मचारी एवं ग्रामीणों ने प्रबंधन से सड़क से पानी की निकासी का उचित प्रबंध करने का आग्रह किया है ताकि आवगमन में हो रही परेशानी और दुर्घटना से बचा जा सके।

मानव तस्करों के चंगुल से बचायी गयी महिला और नाबालिग

खूंटी : मानव तस्करी की शिकार पीड़िताओं की खोजबीन करने और मानव तस्करी से संबंधित एएचटीयू थाना खूंटी में दर्ज विभिन्न कांडों के आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए दिल्ली, उत्तर प्रदेश और गुड़गांव गई विशेष रेस्क्यू टीम की ओर से मानव तस्करी की शिकार एक महिला और एक नाबालिग लड़की का रेस्क्यू किया गया। वहीं एएचटीयू थाना में दर्ज दो अलग-अलग कांडों के दो आरोपितों को गिरफ्तार किया गया। रेस्क्यू किए गए पीड़िताओं में तोरपा थानांतर्गत रामजय गांव निवासी लॉरेंस भेंगरा की पत्नी मरथा भेंगरा को पश्चिम विहार दिल्ली से और कर्रा थाना क्षेत्र की एक नाबालिग पीड़िता को गुड़गांव से रेस्क्यू किया गया। दोनों पीड़िताओं को वहां घरेलू काम में लगाया गया था।

मेकॉन में इंटर स्कूल कंपटीशन का किया गया आयोजन

देशप्राण संवाददाता

मांडर : पिक्सल लर्न एजुकेशन एकेडमी के तरफ से डोरंडा के मेकॉन में इंटर स्कूल कंपटीशन का आयोजन 11 मई को किया गया। जिसमें विभिन्न प्रकार के इवेंट हुए। इसमें दार अल अरकम स्कूल मांडर के बच्चों ने भाग लियाऔर शानदार सफलता प्राप्त की। इस प्रतियोगिता में जमशेदपुर व अन्य शहरों के लगभग 10 प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया। दार अल अरकम स्कूल मांडर के बच्चों ने सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के जूनियर विंग में ओवैस खान, सादिया फिरदौस, नायाब तबस्सुम, मोहम्मद यूसुफ – राज्य स्तर पर प्रथम स्थान वहीं सीनियर विंग में फातिमा शकीला, बारीरा फिरदौस, आइशा रहमानी, अंबर तारीक – राज्य स्तर पर तृतीय स्थान स्पेलिंग प्रतियोगिता में तनजीम फातिमा, सादिया फिरदौस, नायाब तबस्सुम, मोहम्मद यूसुफ – राज्य स्तर पर तृतीय स्थान, हैंडराइटिंग में जुवैरिया सुंदुस राज्य स्तर पर द्वितीय स्थान तथा इरम सबा ने प्रथम स्थान प्राप्त कर स्कूल का मान बढ़ाया। स्कूल परिवार ने विजेताओं को उनकी मेहनत और सफलता पर हार्दिक बधाई दी।

हजारीबाग : मूलनिवासी संघ ने बुद्ध जयंती पर आयोजित की संगोष्ठी

देशप्राण संवाददाता

हजारीबाग : मूलनिवासी संघ ने बुद्ध पूर्णिमा के मौके पर सोमवार को तथागत बुद्ध की जयंती आयोजित किया। कार्यक्रम का आयोजन शहर के ज्ञान ज्योति बुद्धा पैलेस बैंक्वेट हॉल में यह संगोष्ठी आयोजित किया। संगोष्ठी का विषय बुद्ध के सिद्धांत और भारत का संविधान था। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता मूलनिवासी संघ की कार्यकारी जिलाध्यक्ष मू रजनी वर्मा अधिवक्ता ने किया एवं संचालन प्रदेश मीडिया प्रभारी मू गणेश यादव ने किया। मुख्य वक्ता मूलनिवासी संघ के प्रदेश अध्यक्ष मू निशांत कु सिंहा अधिवक्ता ने विस्तार से बताया कि भारत का संविधान तथागत बुद्ध के दर्शन पर आधारित है एवं संविधान की प्रस्तावना में तथागत बुद्ध के समता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुता के दर्शन परिलक्षित होते हैं। बुद्ध ने मानव कल्याण का उपदेश दिया है। वे कहते हैं कि सदियों से चली आ रही परंपराओं या किसी बात को इसलिए भी नहीं मानते है कि

उसे किसी महापुरुषों ने कहा है या किसी किताबों से लिया गया है। किसी बात को मानने से पहले उसे तर्क की कसौटी पर कसेंगे। लोक कल्याणकारी तथागत बुद्ध के सिद्धांत हैं और उनका पूरा दर्शन ही तर्कवाद, बुद्धिवाद एवं विज्ञानवाद पर आधारित है। तथागत बुद्ध भिक्षुओं से कहते हैं कि जाओ पूरे संसार में ऐसी विचारधारा का प्रयोग करो जो पूरे विश्व का कल्याण करें।

अर्थात तथागत बुद्ध समता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुता पर आधारित समाज की रचना करना चाहते हैं और डॉ अम्बेडकर इस विचारधारा से प्रभावित थे इसलिए उन्होंने बुद्ध को अपना पहला गुरु माना है। संविधान की मूल भावना बुद्ध के सिद्धांतों पर ही तो आधारित है। वक्ताओं में विद्यार्थी संघ के मू प्रवीण प्रियदर्शी, मक्कम के प्रदेश उपाध्यक्ष मू झम्मन महतो, मातृ संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष मू वीणा प्रसाद, मूलनिवासी संघ के प्रदेश संगठन सचिव मू. प्रो भागवत अम्बेडकर एवं पावर विंग जिलाध्यक्ष मू अजीत देव ने बुद्ध के सिद्धांत यानि मध्यम मार्ग को भारत का संविधान में अंतर्निहित बताया कि किस तरह मौलिक अधिकार और नीति निर्देशक तत्व में बुद्ध के सिद्धांत हैं।

इस कार्यक्रम में विनय कुमार, प्रणव प्रियदर्शी , रीना सिंहा, किशना प्रकाश, गौरांगी प्रकाश, शीतल देव, नीना देव, सुषमा देवी, अमित भारती, धनेश्वर रजक, बलदेव दास, अशोक दास गौरांगी प्रकाश, रामेश्वर राम दांगी, इन्द्रनारायण जी, श्रीराम कुशवाहा, गणेश कुशवाहा, अनिल कश्यप, पप्पू दास, सुरेश कुशवाहा, हीरालाल साव, शशिभूषण कुशवाहा, जीतेंद्र दास , रविकांत रवि, मुकेश राज, सावित्री देवी, राजवीर कुमार, विनोद साव, सीताराम प्रसाद, रविकिशोर प्रसाद वगैरह बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

ऊर्जा दक्षता व संरक्षण पर आयोजित की गयी कार्यशाला

देशप्राण संवाददाता

हजारीबाग : झारखंड अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण (जेरेडा) द्वारा 'हरित वृक्ष' (ग्रीन ट्री) संस्था के सहयोग से हजारीबाग के डॉल्फिनो परिसर में लघु, कुटीर एवं मध्यम उद्योगों (एमएसएमई), उद्योग संघों एवं व्यापार मंडलों के प्रतिनिधियों के लिए एक दिवसीय ज्ञानवर्धक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य ऊर्जा की कुशलता, बचत के उपायों तथा ऊर्जा सेवा कंपनी (ईएससीओ) मॉडल की विस्तृत जानकारी प्रदान करना था। इस आयोजन में लगभग 60 उद्यमियों एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हजारीबाग चैंबर ऑफ कॉमर्स के उपाध्यक्ष नीरज अग्रवाल सचिव राकेश ठाकुर ने की। विशिष्ट अतिथियों के रूप में संयुक्त सचिव तारिक अहमद, सदस्य विजय कुमार जैन ने भी अपनी सहभागिता दी और

ऊर्जा से संबंधित नीतियों तथा प्रोत्साहनों पर अपने विचार साझा किए। कार्यशाला का तकनीकी सत्र अत्यंत जानकारीपूर्ण रहा, जिसमें ऊर्जा प्रबंधन विशेषज्ञ जे. के. व्यास और प्रमाणित ऊर्जा लेखापरीक्षक डॉ. चंदन कुमार तिवारी ने ऊर्जा के विवेकपूर्ण उपयोग, अपव्यय को रोकने के आधुनिक उपायों तथा ऊर्जा सेवा कंपनी (ईएससीओ) मॉडल की कार्यप्रणाली पर अपने विचार प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने बताया कि किस प्रकार यह मॉडल ऊर्जा की लागत को घटाते हुए पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक हो सकता है। प्रतिभागियों ने इन प्रस्तुतियों को अत्यंत उपयोगी, सरल एवं व्यवहारिक बताया और यह अपेक्षा जताई कि भविष्य में भी इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए, जिससे क्षेत्रीय उद्योगों को नवाचार,ऊर्जा कुशलता तथा हरित विकास की दिशा में मार्गदर्शन प्राप्त हो सके। झारखंड अक्षय ऊर्जा विकास अभिकरण एवं हरित वृक्ष संस्था की यह पहल हजारीबाग सहित पूरे झारखंड में ऊर्जा जागरूकता को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है, जिससे प्रदेश के लघु और मध्यम उद्यम ऊर्जा आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ सकें।

ट्रेन से टकराकर एक व्यक्ति की मौत

पाकुड़ : काटपाडी रेलवे स्टेशन के पास सोकेन मरांडी, पिता दखिन मरांडी, सा० मंगलपाड़ा, पोस्ट- तोड़ाई, पंचायत- सोनाजोड़ी थाना- नगर, जिला पाकुड़ की ट्रेन से टक्कर हो गई, जिससे उनकी मृत्यु हो गयी। उनका पार्थिव शरीर वेल्लोर के एक अस्पताल में रखा गया है। उसकी पैंट की जेब से आधार कार्ड मिला। यह जानकारी काटपाड़ी रेलवे थाना के सब इंस्पेक्टर वी. पदमाराजा के द्वारा किये गये कॉल के माध्यम से जानकारी मिली। आधार कार्ड में दिए गये एड्रेस के अनुसार उनके परिजन को सूचित किया गया है।

वाणिज्य कर विभाग के नवनिर्मित भवन का मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने किया उद्घाटन

देशप्राण संवाददाता

हजारीबाग : झारखंड सरकार के वित विभाग, वाणिज्य कर विभाग, योजना एवं विकास विभाग के केबिनेट मंत्री राधा कृष्ण किशोर सोमवार को जिले में वाणिज्य कर विभाग के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया। इससे पूर्व मंत्री के यहां पहुंचने पर उनका स्वागत महानगर कांग्रेस कमेटी हजारीबाग के अध्यक्ष मनोज नारायण भगत ने पुष्पगुच्छ देकर किया। इस अवसर पर मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने उपस्थित नेताओं से सरकार के लाभकारी योजनाओं का लाभ अंतिम वर्ग तक मिले और इस कार्य में अपनी सहभागिता निभाने का आग्रह किया। वही कहा कि प्रदेश की हेमंत सरकार गरीबों के विकास के लिए कार्य कर रही है। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता संजय गुप्ता, सेवादल के जिला अध्यक्ष गुड्डू सिंह, जिला महासचिव महेश साव, अनिक भुइया के अलावा अन्य कांग्रेसजन उपस्थित रहे।

रविदास महासभा ने मनायी भगवान बुद्ध की जयंती

देशप्राण संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव के मध्य पंचायत स्थित सभा भवन में सोमवार को रविदास महासभा नगर इकाई द्वारा भगवान गौतम बुद्ध की जयंती मनाई गई। इसकी अध्यक्षता नगर इकाई अध्यक्ष रामेश्वर राम ने किया। जबकि संचालन पूर्व पंचायत समिति सदस्य राजीव रंजन ने किया। मौके पर रविदास महासभा के प्रखंड अध्यक्ष असेश्वर राम, सचिव रघुनाथ राम, नगर अध्यक्ष रामेश्वर राम, नगर सचिव राजू कुमार दास, नगर कोषाध्यक्ष नरेंद्र कुमार राम, वार्ड सदस्य गणेश राम, संजय रवि, शिक्षक संजय निगम, उदय कुमार रवि, आकाश कुमार, मनोज आदि उपस्थित थे।

खबर कोना

सीसीएल की गिद्दी ए परियोजना में हॉलपैक ने ओवरमैन को रौंदा, मौत

रामगढ़ : सीसीएल अरगड्डा प्रक्षेत्र के गिद्दी ए परियोजना की खुली खदान में बीती रात हॉलपैक की चपेट में आने से ओवरमैन की मौत हो गई। आनन-फानन में उन्हें सीसीएल अस्पताल गिद्दी अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने मौत की पुष्टि कर दी। मिली जानकारी के अनुसार ओवरमैन जय कुंवर यादव नाइट शिफ्ट की ड्यूटी पर थे। इस दौरान मेन फेज पर एक हॉलपैक वाहन ने उन्हें चपेट में लेते हुए रौंद दिया। जिससे उनकी घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई। वहीं जय कुंवर यादव की मौत की जानकारी पर परियोजना के वरीय अधिकारी, यूनियन नेता सहित कई सीसीएल कर्मी और स्थानीय लोग अस्पताल पहुंचे। जहां प्रबंधन से मृतक के परिजनों को अविलंब नौकरी देने की मांग की गई। जिस पर प्रबंधन के अधिकारी मृतक के बड़े पुत्र सौरभ कुमार को नौकरी देने की प्रक्रिया में जुट गए। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। इधर हादसे से ओपन कास्ट खदान में कर्मियों की सुरक्षा व्यवस्था सवालों में घिर गई है। प्रोडक्शन से पहले अधिकारी सेफ्टी को लेकर वाकई कितने सजग हैं और माइंस में खान दुर्घटनाओं की रोकथाम को लेकर डीजीएमएस की गाइडलाइंस का अनुपालन कितनी गंभीरता से किया जा रहा है, इसकी जांच जरूर होनी चाहिए। जिससे भविष्य में इस प्रकार की दुर्घटना से कर्मियों की सुरक्षा हो सके। बताया जाता है कि मृतक जय कुंवर यादव गिद्दी बुध बाजार के निकट सीसीएल कॉलोनी में रहते थे और मूल रूप से बख्तियारपुर, जिला औरंगाबाद (बिहार) के निवासी थे। मृतक अपने पीछे पत्नी, दो पुत्र और एक पुत्री छोड़ गये।

बुद्ध पूर्णिमा पर चौपारण में कई बौद्ध स्तूप हैं जिसे सरकार करें विकसित

देशप्राण संवाददाता

चौपारण : चौपारण में कई बौद्ध स्तूप हैं जिसे सरकार को विकसित करना चाहिए। भगवान बुद्ध को हिंदू धर्म में भगवान विष्णु के अवतार के रूप में माना जाता हैं। उन्होंने चार आर्य सत्यों की ज्ञान दिया, जो दुख के कारण और उसके निवारण के बारे में हैं। उन्होंने अष्टांग मार्ग की ज्ञान दी, जो एक नैतिक और आध्यात्मिक मार्ग हैं। उन्होंने कर्म और पुनर्जन्म की अवधारणा की ज्ञान दिया। भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति बोधगया में हुई। उन्होंने अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय मुहाने

नदी के किनारे ईटखोरी और चौपारण में भी बिताई। एक काफी समृद्ध सभ्यता इसकी साक्षी आज भी अवस्थित हैं, जिसके अवशेष हमारे दैहर सोहरा हथिंदर और मानगढ में हैं।

भगवान बुद्ध की ये प्रतिमाएं पांचवीं सदी की हैं यानी पंद्रह सौ साल पहले की इनकी एतिहासिकता इनका महत्व और इनका साक्षात आशीर्वाद लेना हैं तो दर्शन जरूर करें, चौपारण अब केवल एक गांव नहीं रहा यह एक जीवंत ऐतिहासिक प्रमाण हैं, जो मिट्टी के नीचे से उठकर हमारी चेतना में गूंज रहा हैं। यह भूमि अब पुकार रही हैं, अपने अतीत को जानो, उसे संजोओ और आने वाली पीढ़ियों के लिए सहेज कर रखो, जिसे आज भी गांव में भगवान बुद्ध की कथाएं सुनायी जाती हैं।

अपराधियों ने जमीन कारोबारी बंधु यादव को मारी गोली, घायल

देशप्राण संवाददाता

चतरा, 12 मई : चतरा में इन दिनों अपराधियों के हौसले बुलंद है। रविवार की शाम शहर से सटे चतरा हंटरगंज मुख्य सड़क पर बभने में यादव होटल के निकट मनोकामना मंदिर के पास अपराधियों ने एक जमीन कारोबारी बन्धु यादव को गोली मार दी जिससे बंधु यादव गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें तत्काल सदर अस्पताल लाया गया, जहां प्राथमिक उपचार कर तुरंत रांची रिम्स रेफर कर दिया गया। उसकी स्थिति नाजुक बताई जा रही है। फिलहाल हजारीबाग स्थित आरोग्यम हॉस्पिटल में भर्ती किया गया है, जहां ऑपरेशन कर गोली निकाल दी गई है। घटना के बाद अपराधी फरार हो गए। वहीं पुलिस अपराधियों की धर पकड़ के लिए अभियान शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार बंधु यादव बभने स्थित मनोकामना मंदिर के पास खड़ा था, इस दौरान बाइक पर सवार कई हथियारबंद अपराधी आए और उसके ऊपर गोलीबारी कर दी, जिससे बंधु यादव के शरीर में कई गोली लगी है।

हालांकि जमीन कारोबारी पर गोली किस कारण से चलाई गई है, यह स्पष्ट नहीं हो पाया है. घायल बंधु यादव ने गोली मारने वाले कई का नाम बताया है, उसी आधार पर पुलिस गिरफ्तारी को लेकर अभियान चला रही है। वहीं गोलीबारी की घटना से क्षेत्र में दहशत फैल गई हैं।

राष्ट्रव्यापी हड़ताल को लेकर भुरकुंडा में हुई पिट मीटिंग

देशप्राण संवाददाता

रामगढ़, 12 मई : संयुक्त ट्रेड यूनियन सीसीएल बरका-सयाल प्रक्षेत्र ने आगामी 20 मई को घोषित राष्ट्रव्यापी हड़ताल को लेकर सोमवार को भुरकुंडा कोलियरी के बांसगढ़ा माइंस के समीप पिट मीटिंग किया। जिसकी अध्यक्षता अशोक गुप्ता और संचालन संजय वर्मा ने किया। इस दौरान संयोजक विंध्याचल बेदिया ने कहा कि चार लेबर कोड मजदूर हित में नहीं है। यह मजदूरों को उनके अधिकार से वंचित करने वाली नीतियां है। इसके खिलाफ 20 मई को आहूत

राष्ट्रव्यापी हड़ताल को हर हाल में सफल बनाना है।

वहीं पिट मीटिंग में अन्य वक्ताओं ने भी बंद को सफल बनाने का आह्वान किया। मौके पर बासुदेव साव, अशोक शर्मा, डॉ. जीआर भगत, अनिल सिंह, रामनरेश सिंह, रामाकांत दुबे, दशरथ कुर्मी, देवेंद्र सिंह, अर्जुन सिंह, जेपीएन सिन्हा, शैलेंद्र सिंह, शिवशंकर पांडेय, नरेश मंडल, विकास कुमार, शशि भूषण सिंह, लखेंद्र राय, नौशाद, विद्युत लाल, अरविंद पासवान, वासुदेव उरांव, किरण सिंह, सत्यनारायण ठाकुर, जगरनाथ पासवान, बैजनाथ कुमार, दशरथ यादव, रविंद्र आदि मौजूद थे।

फाइड रेटिंग टूर्नामेंट का हो रहा शानदार आयोजन

देशप्राण संवाददाता

हजारीबाग : डिस्ट्रिक्ट चेस एसोसिएशन के तत्वावधान में, ऑल इंडिया चेस फेडरेशन एवं ऑल झारखंड चेस एसोसिएशन की अधिकृत अनुमति से तृतीय एचडीसीए ऑल इंडिया ओपन फाइड रेटिंग चेस टूर्नामेंट 2025 रविवार, 11 मई से एंजेल हाई स्कूल परिसर में आयोजित किया जा रहा है।

प्रतियोगिता में झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश सहित कई अन्य राज्यों से कुल 600 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया है। इस टूर्नामेंट में भाग ले रहे खिलाड़ियों में नए खिलाड़ी, पुराने खिलाड़ी और बरसों से खेलने आ रहे अनेकों खिलाड़ी शामिल है। सोमवार को टूर्नामेंट के दूसरे दिन पूरे उत्साह एवं अनुशासन के साथ आगे बढ़ा। प्रतियोगिता के चौथे राउंड तक की स्थिति में झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल से आए कुल दस खिलाड़ी टॉप-5 की होड़ में बने हुए हैं। इन खिलाड़ियों में अभिषेक दास,

पल्लब बाला, रूपम मुखर्जी, शॉन चौधरी, अंगजीत बनर्जी, सिकंदर अनीस, कुमार गौरव, अभिनव सिंह, अभीर मित्रा एवं अधिराज मित्रा का नाम प्रमुखता से आया है।

इन खिलाड़ियों की चालों में आत्मविश्वास और अनुभव की झलक थी, जो दर्शकों को रोमांचित कर रही थी। अयोजकों ने टूर्नामेंट के संचालन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की व्यवस्था की है जिसमें डिजिटल घड़ियां, निर्णायकों की स्वतंत्र टीम तथा चिकित्सा सुविधा जैसी सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं।

एंजेल हाई स्कूल परिसर को पूरी तरह खेल-अनुकूल वातावरण में तब्दील कर दिया गया है जहां हर आयु वर्ग के प्रतिभागी एक समर्पित मंच पा रहे हैं। टूर्नामेंट के डायरेक्टर करण जायसवाल ने बताया कि यह आयोजन हजारीबाग को राष्ट्रीय शतरंज मानचित्र पर स्थापित करने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। उन्होंने बताया कि विजेताओं को आकर्षक ट्रॉफी, प्रमाण पत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। टूर्नामेंट 15 मई तक चलेगा, जिसके बाद समापन समारोह आयोजित किया जाएगा। इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता के आयोजन ने न केवल हजारीबाग को गौरवांवित किया है, बल्कि जिले में बौद्धिक खेलों को बढ़ावा देने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हो रहा है। कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न करने में टूर्नामेंट से जुड़े सभी अधिकारी तीव्रता के साथ कार्य कर रहे हैं। वही हजारीबाग संघ के सचिव मनमीत अकेला ने बताया की हमारा उद्देश्य है कि स्थानीय प्रतिभाओं को राष्ट्रीय मंच मिले और वे अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंच सकें।

सामाजिक जागरूकता से ही नशा मुक्त बन सकेगा समाज : गौतम महतो

देशप्राण संवाददाता

गोला : पहले नशे के ऐसे खौफनाक मंजर और कारोबार को कभी हमलोग फिल्मों के माध्यम से देखते थे लेकिन अभी रियल लाइफ में देखते हैं आज किसी एक व्यक्ति की नशे की लत से परिवार और समाज पर बेहद नकारात्मक प्रभाव पड़ता जा रहा है। नशा की गिरफ्त में आने वाला व्यक्ति अंदर से नकारात्मक होने लगता और दिमागी हालात ठीक नहीं रहता है और व्यक्ति के अंदर आत्मविश्वास कम होने लगती है साथ ही जीवन में निराशा का भाव आने लगता है। दिनचर्या में व्यक्ति को चिड़चिड़ापन बढ़ने लगता है और किसी के साथ भी कुशलता का व्यवहार बरकरार नहीं रख पाता है। जिस कारण व्यक्ति के सफलता और रोजमर्रा के कामों में यह बाधक साबित होता रहता है। राधा गोविन्द विश्वविद्यालय रामगढ़ के पीएचडी छात्र गौतम महतो ने कहा कि नशा करने वाला किसी भी उम्र का हो वो अपने नशे का सामग्री और इसके

उपयोग का तरीका ढूंढ ही लेता है। नशे के कारोबारी भी प्रतिबंधित सामग्री को बेचने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। उन्हें पैसे कमाने की ऐसी लालच और भूख आन पड़ती है की किसी के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर खुद अपनी जान जोखिम में डालकर ऐसे प्रतिबंधित नशीली पदार्थ के खरीद बिक्री के लिए गैर सामाजिक कार्य करते हैं।

क्षेत्र में फैलता नशा का साम्राज्य रामगढ़ के युवा पीढ़ी टारगेट

आगे गौतम महतो ने कहा कि रामगढ़ शहर और आसपास गोला, दुलमी, चितरपुर, मांडू, पतरातू भुरकुंडा के क्षेत्र में फैलता नशा का साम्राज्य रामगढ़ के युवा पीढ़ी को टारगेट कर उनके नस-नस में जहर घोलने का प्रयास कर रहा हैं।

रामगढ़ जिले में युवा पीढ़ी नशे के गिरफ्त में दिख जा है। युवा पीढ़ी एवं नाबालिग नशे की गिरफ्त में जकड़ते जा रहा है।वही विद्यार्थी अपनी पढ़ाई की जगह नशे में खुद को झोंककर बर्बाद कर रहें हैं। माता- पिता और अभिभावक के अरमान को पूरा करने के बजाय खुद के शरीर के अंदर नशा के सेवन के माध्यम से तरह-तरह की बीमारियों को आमंत्रण देते हैं। रामगढ़ जैसे छोटे शहरो में भी अब ब्राउन शुगर जैसी खतरनाक नशीली पदार्थों बेचे जाने की बात बताई जा रही हैं। कई बार इस बात की पुष्टि पुलिस द्वारा पकड़े गए ब्राउन शुगर के खेप से हुआ है।रामगढ़ के कई युवाओं की जिंदगी नशे की गिरफ्त में आकर बर्बाद हो चुकी है तो कई बबार्दी के कगार पर है। जीने के उम्र में ही कईयों की जिंदगी की जीवनलीला भी समाप्त हो गई।

राफेल विरोधी राग

भारत और पाकिस्तान के बीच फिलहाल शांति है। युद्ध में हार और जीत के आकलन के बीच कुछ कहानियां राफेल की भी सुनवाई जा रही हैं। खासकर फ्रांस से प्राप्त राफेल जेट को लेकर अमेरिकी मीडिया में बहुत सारी बातें बिना सिर-पैर की हो रही हैं। पाकिस्तान ने 7 मई को यह दावा किया था कि उसने तीन राफेल समेत भारत के पांच जंगी जहाजों को गिरा दिया। पाकिस्तान अपने इन दावों के लेकर खुद ही हंसी का पात्र बना, उसके रक्षामंत्री से एक विदेशी मीडिया ने जब पूछा कि सुबूत क्या है, तो उन्होंने जवाब दिया कि सोशल मीडिया में सब चल रहा है। यही नहीं, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने अपनी पार्लियामेंट में यहां तक कह दिया कि पाकिस्तान चाहता तो 12 भारतीय जेट गिरा सकता था, मेहरबानी कर के पांच ही गिराया। जिस देश के हुक्मरान इतने नादान और मूर्ख हों, उस देश का भविष्य क्या हो सकता है। अब यही मूर्खता विदेशी मीडिया के कुछ अन्य प्लेटफार्म से भी हो रही है।

'द वाशिंगटन पोस्ट', 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' और 'सीएनएन' चैनल जैसे बड़े मीडिया हाउस पाकिस्तान के भोपू बने हैं। वह कुछ मनगढ़ंत खबरों के जरिए अमेरिकी हित साधने की कोशिश कर रहे हैं। विश्लेषण की जरूरत है। कहीं यह अमेरिकी हथियार के सौदागरों के एजेंट तो नहीं बन रहे हैं। सीएनएन ने राफेल के गिरने की खबर पाकिस्तानी रक्षा सूत्रों से चला दी, जिसमें दावा किया गया कि उन्होंने पांच भारतीय लड़ाकू विमानों को मार गिराया है, जिनमें तीन राफेल जेट, एक मिग-29 और एक सुखोई 30 फाइटर जेट शामिल हैं। अपनी खबर को पुष्ट दिखाने के लिए सीएनएन ने एक कथित अनजान फ्रांसीसी खुफिया अधिकारी का हवाला भी दे दिया, जिसने कथित रूप से यह स्वीकार किया कि भारतीय वायु सेना को दिये गये राफेल लड़ाकू विमानों में से एक को पाकिस्तान ने मार गिराया है।

दो अनजाने अमेरिकी अधिकारियों का हवाले से यह भी खबर चली कि चीन निर्मित पाकिस्तानी लड़ाकू विमान ने कम से कम दो भारतीय सैन्य विमानों को मार गिराया। इस मामले में 'न्यूयॉर्क टाइम्स' भी पीछे नहीं रहा। इस अमेरिकी मीडिया ने भी वही अज्ञात स्त्रोत का सहारा लिया और खबर चला दी कि भारत ने कम से कम दो विमान खो दिये हैं। बस, उसने राफेल का नाम नहीं लिया। 'वाशिंगटन पोस्ट' ने तो एक फ्रांसीसी विशेषज्ञ का भी हवाला दे दिया है, जो बकौल अखबार के यह स्वीकार करता है कि भारत ने मिराज-2000 और राफेल विमान खो दिये हैं। मालूम हो कि राफेल और मिराज दोनों दोनों फ्रांसीसी हैं।

अमेरिकी मीडिया के इस रुख पर सवाल उठाना लाजिमी है कि जब अभी तक पाकिस्तान ने जहाज गिराये जाने के कोई ठोस सुबूत नहीं दिये हैं और ना भारत ने इस संबंध में कोई पुष्टि की है। फिर अमेरिकी मीडिया अज्ञात स्त्रोतों का हवाला देकर इतनी बड़ी खबर क्यों चला रहा है? क्या उनके उद्देश्य कुछ और हैं? कहीं यह अमेरिकी लड़ाकू विमानों की मार्केटिंग का फंडा तो नहीं है। यह सबको खबर है कि भारत समेत कई देश इस समय लड़ाकू विमानों की खरीदारी के लिए इच्छुक हैं। दुनिया एयरोस्पेस बाजार बहुत बड़ा है और अरबों खरबों डॉलर के सौदे होने हैं। चूंकि अमेरिका भी लड़ाकू विमानों का सौदागर है और वह अपने एफ-35 जेट के लिए कई देशों में लामबंदी कर रहा है। इसलिए उसके लिए सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी फ्रांसीसी राफेल ही है। राफेल के खिलाफ खबरें उसी कंपटीशन का हिस्सा हो सकती हैं।

अमेरिका कभी नहीं चाहेगा पाक का समूल नाश

रामस्वरूप रावतसरे

भारत और पाकिस्तान के बीच लागू हुआ संघर्षविराम चार घंटे से भी कम समय में टूट गया। पाकिस्तान ने शनिवार रात को जम्मू-कश्मीर से लेकर गुजरात तक बड़े पैमाने पर ड्रोन हमले किये, हालांकि, भारत ने इन ड्रोन हमलों को विफल कर दिया। इससे अमेरिका के विश्वास को जरूर धक्का लगा है। अमेरिका ने दावा किया था कि उसकी मध्यस्थता में हुई वार्ता के बाद भारत और पाकिस्तान में संघर्षविराम हुआ है। इसका क्रेडिट खुद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने लिया है। ऐसे में पाकिस्तान के ड्रोन हमलों को सीधे अमेरिका के लिए बेइज्जती माना जा रहा है। डोनाल्ड ट्रंप ने शनिवार को घोषणा की कि अमेरिका की मध्यस्थता से हुई वार्ता के बाद भारत और पाकिस्तान 'तत्काल और पूर्ण' संघर्ष विराम पर सहमत हो गये हैं। उन्होंने साथ ही दावा किया कि ऐसा अमेरिका की मध्यस्थता वाली वार्ता के कारण संभव हो सका है।

अमेरिका नहीं चाहता था कि भारत संघर्ष में पाकिस्तान से उलझ जाए। यह क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ा सकता था। जानकारो के अनुसार अमेरिका भारत के साथ बहुत जल्द एक समझौता करने वाला है। किसी भी तरह का तनाव भारत में निवेश के माहौल को बिगाड़ सकता था।

सरकारी सूत्रों ने हालांकि बताया कि भारत और पाकिस्तान के बीच गोलीबारी और सैन्य कार्रवाई रोकने का मामला सीधे तौर पर दोनों देशों के बीच तय हुआ था। सूत्रों ने बताया कि पाकिस्तान के सैन्य अभियान महानिदेशक (डीजीएमओ) ने भारतीय डीजीएमओ से फोन पर बातचीत की जिसके बाद

चर्चा हुई और सहमति बनी। इस्लामाबाद में पाकिस्तान के उप प्रधानमंत्री एवं विदेश मंत्री इस्हाक डार ने तत्काल प्रभाव से संघर्ष विराम की पुष्टि की।

जानकारों की मानें तो भारत के हमले से नूर खान एयरबेस के तबाह होने के बाद पाकिस्तान बुरी तरह से डर गया था। पाकिस्तान के एयर डिफेंस सिस्टम ध्वस्त हो गये थे और वो भारतीय मिसाइलों को इंटरसेप्ट करने में बुरी तरह से नाकाम साबित हो रहे थे जबकि उस वक्त तक भारत ने अपने काफी कम तबाही मचाने वाले हथियारों का ही इस्तेमाल किया था। ऐसा लग रहा था कि भारत अगले कुछ घंटों में पाकिस्तान के तमाम सैन्य ठिकानों, हथियार भंडार को तबाह करने वाला है। इसी बीच अमेरिका के उप-राष्ट्रपति जेडी वेंस भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को फोन करते हैं और उसके बाद सीजफायर का ऐलान हो जाता है। आखिर टेलीफोन पर जेडी वेंस ने प्रधानमंत्री मोदी को क्या कहा था, ऐसी क्या 'खतरनाक खुफिया' जानकारी थी, जिसे जानने के बाद भारत सीजफायर के लिए तैयार होता है?

सीएनएन ने अमेरिकी अधिकारियों के हवाले इसका खुलासा किया है कि अमेरिका के पास कुछ ऐसी खुफिया जानकारी थी जो काफी खतरनाक बताई जा रही है। ये जानकारी इतनी संवेदनशील थी डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन, जिसने ठीक एक दिन पहले कह दिया था कि उसे इस युद्ध से कोई मतलब नहीं है, उसे अचानक बीच में आना पड़ा और सीजफायर के लिए भारत से बात करनी पड़ी। बताया जा रहा है कि अमेरिकी खुफिया एजेंसियों को आशंका थी कि भारत और पाकिस्तान के बीच स्थिति नियंत्रण से बाहर जा सकती है, संभावित तौर पर एक परमाणु युद्ध की आशंका तक पहुंच सकती थी।

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार खुफिया रिपोर्ट मिलने के बाद अमेरिकी उप-राष्ट्रपति जेडी वेंस ने तत्काल भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को टेलीफोन किया और उस खुफिया जानकारी को देने के बाद उनसे पाकिस्तान के साथ सीधी बातचीत के जरिए सीजफायर का समाधान निकालने का प्रस्ताव रखा। उनके टेलीफोन का मकसद भारत को एक सीधे युद्ध से बचने की सलाह दी गई थी। अमेरिकी अधिकारियों से कहा कि 'खुफिया जानकारी मिलने के बाद सबसे पहले जेडी वेंस तत्काल डोनाल्ड ट्रंप के पास पहुंचे थे और उनसे जानकारियां शेयर की और उसके बाद उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को टेलीफोन किया।' इस दौरान जेडी वेंस ने प्रधानमंत्री मोदी से कहा कि 'अमेरिका का आकलन है कि अगर संघर्ष दो दिनों तक और चलता है तो ये युद्ध नाटकीय अंजाम तक बढ़ सकता है।' हालांकि अमेरिकी अधिकारियों ने ये नहीं बताया कि 'वो खुफिया जानकारी क्या था और युद्ध के नाटकीय अंजाम तक बढ़ने का क्या मतलब था।'

अमेरिकी मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक नूर खान एयरबेस के तबाह होने के बाद पाकिस्तान बहुत ज्यादा डर गया था और उसे लग रहा था अब भारत उसके हाई वैल्यू टारगेट पर हमला करने वाला है। नूर खान एयरबेस, पाकिस्तानी एयरफोर्स का सबसे संवेदनशील एयरबेस है और भारत ने यहां पर डीप स्ट्राइक किए थे जिस के कारण पाकिस्तान के एयर डिफेंस सिस्टम और रडार सिस्टम भारतीय हथियारों को बिल्कुल भी इंटरसेप्ट नहीं कर पा रहे थे जिससे भारतीय हमलों को रोकने के लिए पाकिस्तान के पास कुछ नहीं था जबकि पाकिस्तान के मिसाइल भारत को नुकसान नहीं पहुंचा रहे थे जिससे पाकिस्तान के हाथ पांव फूल गये थे और वो किसी तरह से युद्ध से बाहर निकलना चाहता था।

जानकारों की माने तो अमेरिका का हस्तक्षेप बिना किसी कारण के नहीं था। पाकिस्तान के साथ भारत के बढ़ते संघर्ष से अमेरिका के आर्थिक हित प्रभावित हो सकते थे। अस्थिरता के कारण व्यापार और निवेश पर नकारात्मक असर पड़ सकता था। इसके अलावा, क्षेत्र में संघर्ष बढ़ने से तेल की कीमतें भी प्रभावित हो सकती थीं। इसका वैश्विक अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पहले से ही चुनौतियों का सामना कर रही है। अमेरिका पर मंदी के बादल छाए हुए हैं। ऐसे समय में भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता को और बढ़ा सकता था। इससे अमेरिका सहित तमाम देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता। अपनी तरक?की से भारत ग?लोबल ग्रोथ का इंजन बना हुआ है। भारत तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है। अमेरिका के लिए वह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार भी है। ऐसे हालात में अमेरिका के लिए भारत के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना आर्थिक रूप से अधिक फायदेमंद है। आर्थिक रूप से कमजोर पाकिस्तान के पास कुछ नहीं है। वह पहले ही बर्बाद मुल्क है।

अमेरिका नहीं चाहता था कि भारत संघर्ष में पाकिस्तान से उलझ जाए। यह क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ा सकता था। जानकारो के अनुसार अमेरिका भारत के साथ बहुत जल्द एक समझौता करने वाला है। किसी भी तरह का तनाव भारत में निवेश के माहौल को बिगाड़ सकता था। वहीं पाकिस्तान को लेकर अमेरिका के भी कई एजेण्डे है जिन्हें वह आने वाले समय में पूरा करना चाहेगा। इसलिए उसे उसकी भी जरूरत है। जानकारों का तो यहां तक कहना है कि सत्ता में कौन रहता है किसका खत्मा होता है। इससे अमेरिका को कोई मतलब नहीं है, मतलब है तो बस उसे अपने स्वार्थो को पूरा करने से है। इसके लिए वह किसी भी स्तर तक जा सकता है ।

अपने खिलाफ जारी वैश्विक षड्यंत्रों को समझ पायेगा भारत ?

कमलेश पांडेय

पहले अमेरिका और सोवियत संघ, फिर अमेरिका एवं रूस और अब अमेरिका व चीन के बीच जो दुनिया का थानेदार बनने की होड़ मची है, उससे गुटनिरपेक्ष देश भारत के हित गहरे तक प्रभावित हुए हैं। यह हमारे देश के नेताओं और अधिकारियों की गलत और पक्षपाती नीतियों का ही दुष्परिणाम है कि भारत को न चाहते हुए भी कभी अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर तो कभी आंतरिक भूभाग पर युद्ध जैसे हालातों से गुजरना पड़ता है, जिसमें धन-जन की भारी हानि होती है।

दरअसल, हमारे देश में बढ़ते साम्प्रदायिक विवाद, जातीय विवाद, क्षेत्रीय विवाद आदि का मौलिक कारण यह है कि विदेशी तिकड़मों के चलते आजादी से पहले हमारे 'मानवीय मूल्यों' से 'सियासी बलात्कार' हुए हैं, और उसके बाद उपजे पक्षपाती 'संवैधानिक मूल्यों' से भी 'अनैतिक प्रशासनिक व न्यायिक बलात्कार' हुए हैं! जहां प्रशासनिक और न्यायिक विवेक का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन यह कहते हुए किया गया कि हमारे संविधान में ऐसा कहा गया है अथवा उसकी मूल भावना यह है। यहां पर जीवन एवं प्रशासनिक मूल्यों का भी घोर अभाव महसूस किया गया है।

तल्ख अनुभव बताता है कि जब-जब कोई 'राजा या उसका मंत्री' व्यावहारिकता की जगह परम्परा की दुहाई देता है और 'जनता या पड़ोसी राजाओं' से उसका तालमेल नहीं बैठता तो वह नष्ट कर दिया जाता है, क्योंकि बाह्य आक्रमणकारियों को असंतुष्ट जनता का साथ मिल जाता है। भारतीय इतिहास में ऐसे कई वृतांत

भरे पड़े हैं कि मुस्लिम आक्रमणकारियों या ब्रिटिश कम्पनियों को यहां के हिन्दू राजाओं द्वारा एक दूसरे को कमजोर करने के लिए षड्यंत्र रचकर बुलाया गया और जब वो हिन्दू भारतीयों की कमजोरी पकड़ लिए तो यहां का शासक बन बैठे। जिससे लगभग 1000 वर्षों तक भारतीय गुलामी का दंश झेलते रहे और बमुश्किल आजाद हुए लेकिन हमारे नेताओं की रस्साकशी ने फिर उसी विभाजनकारी घृणित सोच का सहज शिकार बना दिया, जो आज भी जारी है।

वहीं, कांग्रेसियों, वामपंथियों, समाजवादियों, जातिवादी क्षेत्रीय दलों और राष्ट्रवादियों के जनतांत्रिक सत्ता संघर्ष में ये तमाम दुर्गुण मसहूस किए जा सकते हैं। इसी बीच वर्ष 1990 के दशक से भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण की आड़ में जो हिंसक-प्रतिहिंसक पूंजीवादी एजेंडा सियासी आवरण में चलवाया जा रहा है, उसके पीछे निहित उद्देश्य वश इतना है कि औद्योगिक क्रांति के बाद इंग्लैंड के नेतृत्व में जो उपनिवेश बनाये गए थे, वो अब सूचना व तकनीकी क्रांति के बाद अमेरिका के नेतृत्व में तथाकथित नए उपनिवेश में शामिल हो जाएं।

हालांकि इस बीच पूर्वी देशों के साम्यवादी रूस और चीन के उभार ने अमेरिका-इंग्लैंड जैसे पश्चिमी देशों की जोड़ी के लिए 'भस्मासुर' का कार्य किया, जिससे निपटने के लिए भारत का पश्चिमी खेमे या पूर्वी खेमे से जुड़ना पहली शर्त है जबकि गुटनिरपेक्ष भारत सभी धड़े से समान दूरी बनाकर रखता आया है और तीसरी दुनिया के देशों को नेतृत्व देता है। इसके बावजूद समाजवादी सोच वाली कांग्रेस की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने रूस से और पूंजीवादी सोच वाली भाजपा के प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी ने अमेरिका से मजबूत रिश्ते कायम किये।

वहीं, पहले वित्तमंत्री के रूप में और फिर प्रधानमंत्री के तौर पर डॉ मनमोहन सिंह ने अमेरिकी शह पर व भारत के कारोबारियों की कीमत पर, चीन से कारोबारी सम्बन्ध मजबूत किए, जिसकी हवा उनके प्रधानमंत्रित्व काल में ही निकलनी शुरू हो चुकी थी, जो 2014 में उनपर और उनकी पार्टी पर भारी पड़ी। इस प्रकार देखा जाये तो कभी भी अखंड भारत और मजबूत हिंदुस्तान की बुनियाद नहीं रखी गयी और अल्पमत-बहुमत के जनतांत्रिक हिसाब से भारतीयों को परस्पर लड़ाया गया, जिसकी भारी कीमत अब हिंदुस्तानी अवाम चुका रही है।

वहीं, जब 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की कमान संभाली तो उन्होंने अतीत की गलतियों को नए सिरे से सुधारने की एक सकारात्मक पहल की। लेकिन विदेशी प्रलोभनों और दबाव में भारत का प्रतिपक्ष 'इंडिया गठबंधन' बनाकर उनके ऊपर दबाव बनाने में कामयाब हो गया। बावजूद इसके उन्होंने रूस, अमेरिका, जापान, इजरायल, फ्रांस आदि देशों से मजबूत सम्बन्ध स्थापित किये और भारत के पड़ोसियों की नकेल कसी। यही वजह है कि पहले अमेरिका और अब चीन के मार्फत पाकिस्तान को साधकर भारत के खिलाफ भड़काया गया।

रूस और चीन मिलकर जिस तरह से इस्लामिक मुल्कों में अमेरिका को घेर रहे हैं और यूरोप से रणनीतिक दूरी बढ़वा रहे हैं, उसी तरह से अमेरिका भी उन्हें घेरने की चाल चल रहा है। भारत के बजाय पाकिस्तान की ओर झुकाव रखना उसके लिए ज्यादा फायदेमंद रहेगा।

एक तरफ रूस, अपने पड़ोसी यूक्रेन के साथ युद्ध में फंसा हुआ है, दूसरी तरफ इजरायल, अपने पड़ोसी फिलिस्तीन के साथ संघर्षरत है और तीसरा मोर्चा पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ खोल दिया है। वह भी ऐसे समय में जबकि भारत के दो मजबूत सहयोगी और शुभचिंतक अपनी अपनी सीमाओं पर युद्ध लड़ रहे हैं। यह अमेरिकी और चीनी पूंजीपतियों की आंतरिक चाल है, ताकि इनके हथियारों को नए-नए बाजार मिलते रहें। ऊपर से तो इनकी टैरिफ वार चलती रहती है, लेकिन अंदरखाने के दांवपेंच पूरी दुनिया के लिए शोध का विषय है।

यही वजह है कि भारत को इससे ज्यादा सावधान रहना होगा। क्योंकि पहले हमारे खिलाफ कोरोना महामारी की साजिश रची गई, फिर लद्दाख पर चीनी दबाव बढ़ा। उस संकट से निकले हुए अभी 6 माह भी नये हुए हैं कि पाकिस्तान प्रेरित कश्मीर संकट पैदा कर दिया गया। अमेरिका और चीन के कारोबारी सम्बन्ध किसी से छुपे हुए नहीं हैं, वहीं दुनिया का नया थानेदार बनने की इनकी शतरंज की चाल पर भारत-रूस-इजरायल जैसे संघर्षरत अन्य देश सिर्फ मोहरा मात्र हैं, जिन्हें समझने की और एहतियाती रणनीति बनाने की जरूरत है।

जिस तरह से भारत ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के उस प्रस्ताव का विरोध किया जिसमें पाकिस्तान को 2.3 अरब डॉलर का नया कर्ज देने की बात की गयी थी। क्योंकि भारत का कहना है कि यह पैसा पाकिस्तान सरकार सीमापार आतंकवाद फैलाने में इस्तेमाल कर सकती है। इस बारे में वित्त मंत्रालय की ओर से जारी बयान में कहा गया कि भारत ने आईएमएफ बोर्ड की बैठक में हिस्सा तो लिया, लेकिन वोटिंग में भाग नहीं लिया। भारत ने कहा कि अगर ऐसे देश को बार-बार कर्ज दिया जाता है, तो इससे वैश्विक मूल्यों का मजाक बनता है और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं भी जोखिम में आ जाती हैं।

बावजूद इसके, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने 9 मई 2025 दिन शुक्रवार को पाकिस्तान को मौजूदा एक्सटेंडेड फंड फैसिलिटी के तहत लगभग 1 अरब अमेरिकी डॉलर की तुरंत किस्त जारी करने की मंजूरी दे दी है। यह जानकारी पाकिस्तान के पीएमओ ने दी। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने इस पर कहा कि आईएमएफ की ओर से पाकिस्तान के लिए 1 अरब डॉलर की किस्त को मंजूरी मिलना भारत की दबाव बनाने की रणनीति की असफलता है। यह बयान पाकिस्तान के प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से जारी किया गया। इससे साफ है कि जिस अमेरिका और चीन ने पारस्परिक गुप्त सांठगांठ से पाकिस्तान को भारत के खिलाफ भड़काया है, वही लोग अब अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं से उसे धन भी दिलवा रहे हैं, ताकि 'चोर दरवाजे' से वह सैन्य साजोसामान खरीद सके और भारत के मुकाबले हथियारों की होड़ पैदा की जा सके।

वैश्विक मामलों के जानकार बताते हैं कि रूस और चीन मिलकर जिस तरह से अरब और इस्लामिक मुल्कों में अमेरिका को घेर रहे हैं और यूरोप से उसकी रणनीतिक दूरी बढ़वा रहे हैं, उसी तरह से अमेरिका भी उन्हें घेरने की चाल चल रहा है। इससे भारत के बजाय पाकिस्तान की ओर झुकाव रखना उसके लिए ज्यादा फायदेमंद रहेगा क्योंकि वहीं से अफगानिस्तान, तुर्की और अरब देशों के अलावा चीन को संतुलित रखने में भी वह मददगार साबित होगा, पूर्व की तरह क्योंकि भारत उसके बस में रहने वाला नहीं है।

आत्मबोध

स्तोत्र और मंत्र

विभिन्न मन्त्र और उनके लाभ

ॐ गं गणपतये नमः : इस मंत्र के जाप से व्यापार लाभ, संतान प्राप्ति, विवाह आदि में लाभ प्राप्त होता है।

ॐ ह्रीं नमः : इस मन्त्र के जाप से धन प्राप्ति होती है।

ॐ नमः शिवाय : यह दिव्य मन्त्र जाप से शारीरिक और मानसिक कष्टों का निवारण होता है।

ॐ शांति प्रशांति सर्व क्रोधोपशमनि स्वाहा : इस मन्त्र के जाप से क्रोध शांत होता है।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह नमः : इस मंत्र के जाप से सफलता प्राप्त होती है।

ॐ क्लिीं ॐ : इस मंत्र के जाप से रुके हुए कार्य सिद्ध होते हैं और बिगड़े काम बनते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय : इस मंत्र के जाप से आकस्मिक दुर्घटना से मुक्ति मिलती है।

ॐ ह्रीं हनुमते रुद्रात्म कायै हुं फटः : सामाजिक रुतबा बढ़ता है और पदोन्नति प्राप्त होती है।

ॐ हं पवन बंदनाय स्वाहा : भूत प्रेत और ऊपरी हवा से मुक्ति प्राप्त होती है.

ॐ भ्रां भ्रीं भौं सः राहवे नमः : परिवार में क्लेश दूर होता है और शांति बनी रहती है।

ॐ नमः शिवाय : इस मंत्र के जाप से आयु में वृद्धि होती है और शारीरिक रोग दोष दूर होते हैं।

ॐ महादेवाय नमः : सामाजिक उन्नति व धन प्राप्ति के लिए यह मन्त्र उपयोगी है।

ॐ नमो भगवते रुद्राय : मान सम्मान की प्राप्ति होती है और समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है। **(समाप्त)**

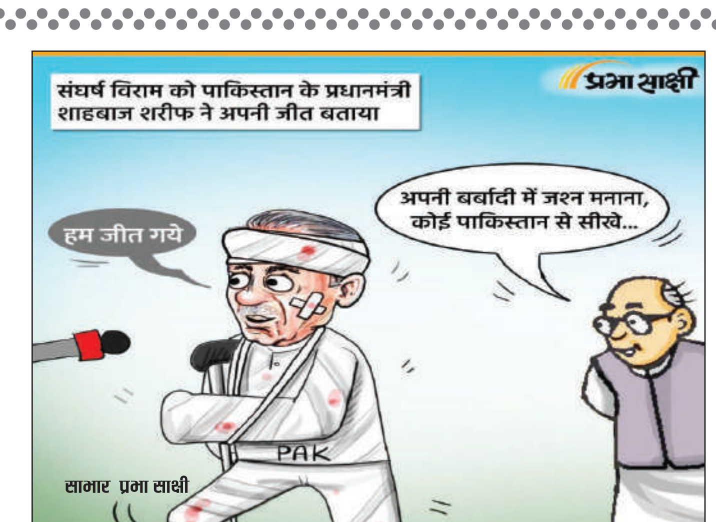

लो सुनो ...

अगर पाकिस्तान भारत पर हमला करता है तो देश उसका कड़ा जवाब देगा। अग वहां से गोली चलेगी तो यहां से गोला चलेगा। भारत का संदेश यह है कि अगर हमें पाकिस्तान से बातचीत करनी है, तो यह केवल पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके), अवैध क्षेत्रों की वापसी और आतंकवादियों को सौंपने पर चर्चा होगी।

नरेन्द्र मोदी (प्रधानमंत्री)

कुछ खास ...

असीसगार्ड सोंगर ड्रोन

जंग के हालात के बीच पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय सीमा और नियंत्रण रेखा पर 36 जगहों पर 300-400 ड्रोनों का इस्तेमाल किया। भारत ने सारे ड्रोन को मार गिराया। जो ड्रोन पकड़े गए उनकी जांच में पता चला कि ये तुर्की के बने हुए थे। पाकिस्तान ने हवाई हमले में तुर्की के बने ड्रोनों का इस्तेमाल किया। इसका नाम असीसगार्ड सोंगर ड्रोन है। भारत के स्ट्रॉन्ग डिफेंस सिस्टम ने इन्हें ध्वस्त कर दिया। एक रिपोर्ट के अनुसार, तुर्की का असीसगार्ड सोंगर ड्रोन उस समय पाकिस्तान पहुंचा जब भारत पहलगाम आतंकी हमले के बाद आतंकियों के ठिकानों पर हमले की योजना बना रहा था। असीसगार्ड सोंगर ड्रोन एक कम ऊंचाई वाला, क्वाड्रोटर, मानव रहित लड़ाकू ड्रोन है जिसे असीसगार्ड नामक कंपनी ने तुर्की सशस्त्र बलों के लिए विकसित किया है। इसे अंकारा में बनाया गया है। इसमें एक क्वाड्रोटर यूएवी, एक ग्राउंड-कंट्रोल स्टेशन और ग्राउंड-सपोर्ट उपकरणों का एक सेट शामिल है।

डिजिटल दुनिया

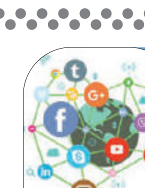

मेटा एआई के लिए शुरू करेगी सब्सक्रिप्शन प्लान

मेटा जल्द ही अपने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) ऐप के लिए एक पेड टियर ला सकती है, जैसा कि ओपेनएआई, गूगल और माइक्रोसॉफ्ट पहले से दे रहे हैं। कंपनी के सीईओ मार्क जुकरबर्ग ने कहा कि जो लोग ज्यादा सुविधा या कंप्यूट चाहते हैं, उनके लिए प्रीमियम सेवा लाई जा सकती है।

यह जानकारी उन्होंने मेटा की पहली तिमाही की कमाई के दौरान दी। मेटा का यह कदम उसे अक की दुनिया में ज्यादा मजबूत बना सकता है। मेटा ने हाल ही में एक नया मेटा एआई ऐप लॉन्च किया है, जिससे यूजर्स चैटबॉट से बात कर सकते हैं और ऐप के अंदर ही तस्वीरें भी बना सकते हैं।

पहले मेटा एआई केवल फेसबुक, व्हाट्सऐप और मैसेंजर में ही मौजूद था। अब इस चैटबॉट के करीब 1 अरब यूजर्स हैं।

यह कदम मेटा को डस्त्रील्लअक के उँ३ऋ्द्धळ और गूगल के जेमिनी जैसी सेवाओं से मुकाबले में लाने की कोशिश का हिस्सा है। मेटा ने पिछले कुछ महीनों में 42 अरब डॉलर (लगभग 3,500 अरब रुपये) की कमाई की और अब अक पर 72 अरब डॉलर (लगभग 6,100 अरब रुपये) तक निवेश करने की योजना बना रही है।

जुकरबर्ग ने कहा कि आने वाले समय में मेटा अक में विज्ञापन या प्रोडक्ट सुझाव भी आ सकते हैं।

हालांकि, उन्होंने साफ किया कि अगले साल तक कंपनी का फोकस यूजर्स की भागीदारी बढ़ाने पर रहेगा, कमाई शुरू करने से पहले।

पीआरजीआई/आरएनआई पंजियन संख्या : 52413/1991 (टाइटल कोड : JHAHIN00860), पोस्टल रजिस्ट्रेशन संख्या : RN/260/2020-22. अध्यक्ष व प्रधान संपादकः **बलबीर दत्त**. देश प्राण (समाचारपत्र, शीर्षक व ट्रेडमार्क) संस्थापक व स्वत्वाधिकारी **बलबीर दत्त** के लिए प्रकाशक **रोहित दत्त*** द्वारा 4/A, तारा टावर, होटल महाराजा के सामने, रेडियम रोड, कचहरी चौक, रांची - 834001 से प्रकाशित तथा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस (डीबी कॉर्प लिमिटेड), 535/1272, लालगुटवा, रांची से मुद्रित. फोन नंबरः 0651 2361181, 0651 2361182. ईमेलः contact@deshpran.in (*पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए जिम्मेवार).

क्यों हिंसक हो जाते हैं पति?

समाज उषा जैन 'शीरीं'

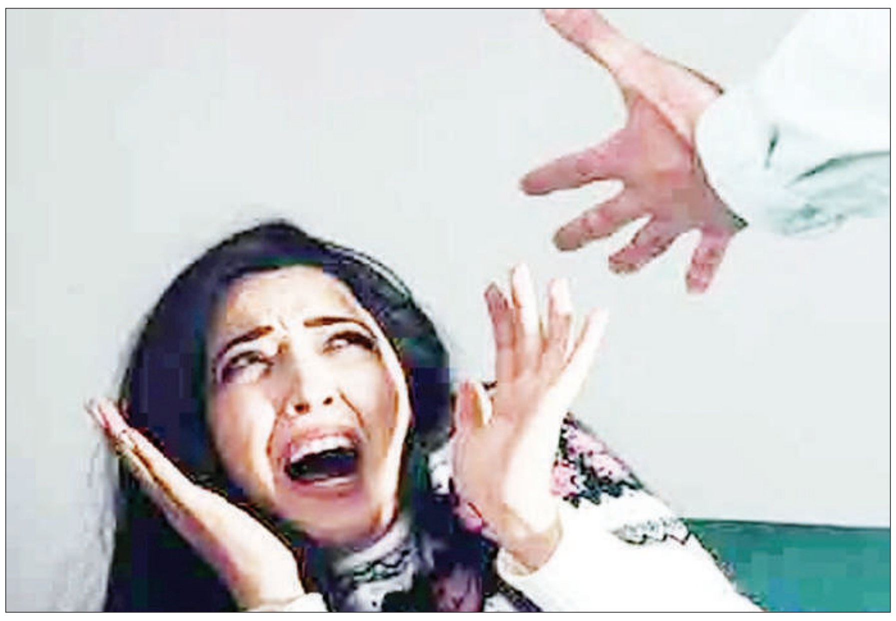

निम्नवर्गीय तबके में पतियों का पत्नी को पीटना एक आम बात है। इसमें किसी को कोई आश्चर्य नहीं होता, कोई शॉक नहीं लगता। यह सब रूटीन है उन लोगों के लिए। इस वर्ग की औरतें भी पिट-पिट कर पक्की हो जाती हैं और उसे बुरा नहीं समझती। आखिर पति है, दो चार लात घूंसे लगा भी दिये तो क्या हुआ। यह तो हुआ वे जब वे होश में रहते हैं। पीकर नशे में वे औरतों पर जो जुल्म करते हैं उनका तो जिक्र ही क्या। नशे में आदमी वैसे भी जानवर बन जाता है।

यहां उसमें बसा पारंपरिक पति इसे अपना अधिकार मान ही पत्नी की पिटाई कर रहा होता है। उसने अपने परिवार में पिता, भाई, चाचा, दादा सभी मर्दों को यही करते देखा है इसलिए महज परंपरा का निर्वाह करते हुए अपने पौरूष को प्रदर्शित करवाने की मानसिकता ही यहां कारण है।

कई बार सास बहू की आपस में न पटने पर सास बेटे को बहू के खिलाफ भडका कर पिटवाती है। कई बार विवाहेत्तर संबंध या दूसरी औरत भी कारण बन जाते हैं।

निम्नवर्ग में जहां इस तरह की वारदातों पर पर्दा नहीं डाला जाता, वहीं उच्च और मध्यमवर्ग के लोग इस तरह की बातों को छिपा जाते हैं।

इधर जब से नारी शिक्षा के प्रचार प्रसार के कारण स्त्रियों में जागरूकता बढ़ी है, ज्यादा से ज्यादा स्त्रियां घर से बाहर कार्य कर नौकरीपेशा बन रही हैं। उनमें आत्मसम्मान बढ़ा है, आर्थिक स्वतंत्रता के कारण आत्मविश्वास जागा है। पुरूष को यह बात असहनीय लगने लगी है। उसकी सोच आज भी वही पुरातनपंथी ही है। स्त्री को वह महज अपने सुख का साधन मानकर ही चलता है।

पढ़ी-लिखी, उच्च ओहदों पर कार्यरत स्त्रियां भी पति की हिंसा चुपचाप झेल जाती हैं। अपनी बेइज्जती की कहानी की वे किसी को हवा तक नहीं लगने देती। स्त्री शोषण के खिलाफ जुलूस निकालकर नारे लगाना, उपदेश देना और बात है लेकिन पति को हिंसक होते देख वे भीगी बिल्ली बन जाती हैं।

हिंसक पति की पत्नी को तलाक दिलवाना, अलगाव कराकर घर तुड़वाना आसान है लेकिन ऐसी स्त्री की जिम्मेदारी कौन उठाये। यहां सभी ओर अक्सर चुप्पी लग जाती है। अपने पैरों पर खड़ी होकर वह अपना खर्च उठा सकती है, लेकिन जीवन में आये एकाकीपन का क्या इलाज है। किस्मत से ही सौ में से दो चार पुनर्विवाह कर सफल जीवन व्यतीत कर पाती हैं, वह भी तब जब पहले पति से संतान न हो।

यह हैरत में डालने वाली बात है कि जहां शिक्षा के प्रसार ने लोगों की सोच विस्तृत कर उनके ज्ञान में वृद्धि की है, उनमें खुलापन, उदारता आयी है, वहीं व्यक्ति भीतर से खोखला होता जा रहा है। हिंसा आज समाज को किस कदर अपने शिकंजे में जकड़ती जा रही है यह सर्वविदित है। पत्र पत्रिकाएं, फिल्में, कहानियां, टीवी सीरियल हिंसा से भरपूर मिलेंगे।

इसके अलावा आज की तनाव भरी जिन्दगी, महत्त्वाकांक्षाओं का पूर्ण न होना, पैसे की हवस, नैतिक मूल्यों का ह्रास होना, यह सब व्यक्ति में कुंठाओं को बढ़ा रहा है जिसके चलते पुरूष अपना सारा फ्रस्टेऊशन अपनी पत्नी पर निकालता है क्योंकि वह उसे आसानी से उपलब्ध है, ईजी टारगेट है। उसे ज्ञात है वह सब्र करती है और बाद में उसे जल्दी ही क्षमा भी कर देती है। उसे उससे किसी तरह का भय या खतरा नहीं है।

पत्नी का उससे डरना उसे अपने पौरूष का प्रदर्शन प्रतीत होता है।

पति की हिंसक प्रवृत्ति से निपटने का हर पति पर एक ही फार्मूला नहीं आजमाया जा सकता। उनकी मानसिकता को परखते हुए ही ऐसे में उनसे निपटा जा सकता है। कई पति गीदड़ भभकी देने वाले होते हैं जो अपनी पत्नी का चंडीरूप देख शांत हो जाते हैं। कई पति समाज से डरते हैं। उनकी पत्नी, अगर घर में बड़े बुजुर्ग हैं, उन्हें कह सुन सकती है। बच्चे बड़े होकर मां के लिए ढाल बन सकते हैं। पत्नी की समझदारी ऐसे में सर्वोपरि है। बजाए गुस्से की आग भडकाने के उसे पति को ठंडा करने के गुर आने चाहिए।

और अंत में, जहां पति वहशी दरिंदे बन जाते हैं, संभव हो तो मनःचिकित्सक को दिखाकर उनकी सलाह लें नहीं तो कुछ समय उनसे दूर रहकर उन्हें अपनी अहमियत का पता चलने दें। पति नहीं सुधरें तो अपने पैरों पर खड़े होकर आर्थिक रूप से सक्षम बनें और पति को छोडकर अलग रहें। जानवर भी पिटने पर प्रतिक्रिया स्वरूप मारनेवाले पर आक्र मण करता है, फिर आप तो इंसान हैं। **(उर्वशी)**

सौन्दर्य शिखा चौधरी

घर पर चमकायें सौन्दर्य

सौन्दर्य का हमारी त्वचा से अटूट रिश्ता है। त्वचा खूबसूरत और निखरी हुई है तो हम भी खूबसूरत लगेंगे मगर त्वचा हमेशा कोमल और तरोताजा रहे, ऐसा भी देखने को नहीं मिलता। अब या तो ब्यूटी पार्लर के चक्कर काटो या महंगी-महंगी क्रीम और उबटन खरीदो।

जरा सोचिए कि आपकी त्वचा का यह रूप किस कारण है। जाहिर है खान-पान के कारण। अब यदि खाने-पीने की चीजों का इस्तेमाल त्वचा के ऊपर किया जाये तो कुछ फायदे तो होंगे ही। ब्यूटी पार्लर जाने से तो मुक्ति मिलेगी ही, महंगे कृत्रिम उपचारों से भी छुटकारा मिल जायेगा।

सामान्यतया त्वचा तीन प्रकार की होती है- तैलीय, शुष्क एवम् सामान्य। यूं तो सामान्य त्वचा परेशान नहीं करती पर हो सकता है किसी मौसम विशेष में उसमें थोड़ा परिवर्तन हो जाये। तब यह परेशानी उत्पन्न कर सकती है। तैलीय त्वचा के साथ कई समस्याएं आती हैं क्योंकि इससे त्वचा तेल की तरह चिकनी रहती है जो चिपचिपाहट का एहसास कराती है। शुष्क त्वचा के कारण त्वचा में खिंचाव आ जाता है और यह फट जाती है।

चेहरे पर झाइयां, मुंहासे अथवा दाग-धब्बे भी घर पर ही दूर कर सकती हैं। जरूरत है थोड़ी मेहनत और सब्र की। तैलीय त्वचा वाली महिलाओं को चिकनाई युक्त चीजें खाने से बचना चाहिए। बेसन को पानी में घोलकर त्वचा पर लगाएं। सूखने के बाद धो दें। पिसी हुई मसूर की दाल में दो बूंद नींबू का रस मिलाकर त्वचा पर लगाएं।

शुष्क त्वचा के लिए खीरे के टुकड़ों को चेहरे पर रगड़ें। ध्यान रहे नरम हाथों से रगड़ें। चेहरे की रंगत बरकरार रखने के लिए एक चम्मच शहद में एक अंडे की सफेदी के साथ थोड़ा सा आटा फेंट कर लगायें। लगभग दो घंटे बाद चेहरे को गुनगुने पानी से धोएं। कच्चे दूध में चावल का आटा घोलकर लेप बनायें। इसे त्वचा पर लगाने से फायदा होगा।

चेहरे की झुर्रियां दूर करने के लिए पके हुए पपीते को काटकर चेहरे पर मलें। लगातार ऐसा करने से फायदा होगा। आधा चम्मच दूध की ठंडी मलाई में नींबू के रस की चार बूंदें मिलाकर चेहरे पर रात को लगायें। हाथों पर ठंडी मलाई में नींबू का रस मिलाकर लगाएं। इससे हाथों में नयी चमक आ जायेगी।

कील मुहांसों से छुटकारा पाने के लिए कई लेप घर पर बनाकर ही लगायें। संतरे के छिलकों को फेंकें नहीं। उन्हें छाया में सुखाकर बारीक पीस लें। अब उसमें बराबर मात्र में बेसन मिलाकर पानी में पन्द्रह मिनट भिगोएं। अब गाढ़ा घोल बनाकर चेहरे के मुहांसों पर लगाएं। दस मिनट लगाये रखने के बाद गुनगुने पानी से चेहरे को धो लें। लगातार एक डेढ़ महीने तक ऐसा करने से फायदा होगा।

झाइयों को खत्म करने के लिए शहद और नींबू को चेहरे पर लगायें तथा दूध में चावल का आटा फेंटकर भी लगा सकती हैं। कई अन्य फायदे भी होंगे।

ध्यान रखें

- त्वचा को अत्यधिक रगड़ें नहीं।
- सुबह उठकर एक गिलास पानी में नींबू का रस डालकर पिएं।
- दिन में कम से कम दस-ग्यारह गिलास पानी पिएं।
- फलों का रस पिएं एवम् हरी सब्जियां खाएं।
- अत्यधिक चिकनाईयुक्त भोजन न करें।
- त्वचा पर कृत्रिम सामग्री का प्रयोग कम से कम करें।
- मुहांसों को नोंचकर उखाड़ने की गलती न करें। **(उर्वशी)**

टिप्स दुर्गा प्रसाद शुक्ल 'आजाद'

बाहों की सुंदरता निखारें

हर औरत की खूबसूरती को निखारने में हर शारीरिक अंग का कुछ न कुछ सहयोग होता है। उन सभी की देखभाल सही रूप से की जाती हो, ऐसा ज्यादा स्त्रियों के बारे में कहा नहीं जा सकता। बाहों की खूबसूरती के प्रति स्त्री की सजगता हमेशा समान रही हो, ऐसी बात नहीं है परन्तु जब से बाहों के बिना के कपड़ों का फैशन चला है, सौंदर्य की नजर से बांहों का महत्त्व स्वीकारा जाने लगा है।

ऐसे कपड़ों में अनावृत्त बाहें यदि थुलथुल, खुरदरी तथा सौंदर्यविहीन हों तो वे खूबसूरत लगने की जगह भद्दी नजर आयेंगी। बांहों को खूबसूरत बनाने के लिए सख्त मेहनत करनी पड़ती है, ऐसी बात नहीं है। रोजाना देखभाल, व्यायाम, मालिश, उबटन आदि ही इस दिशा में आपको अपेक्षित सफलता देंगे।

बाहें यदि बेडौल और मोटी हों तो इनको सुन्दरता देने के लिए आपको विभिन्न खेलों का सहारा लेना उचित होगा। आपकी बाहें यदि ज्यादा पतली होने की वजह से अनाकर्षक हैं तो आपको पौष्टिक खाद्य पदार्थों को खास रूप में खाना होगा। साथ ही रोज मालिश और उबटन भी जरूरी है। मालिश के लिए जैतून का तेल अच्छा है अन्यथा तिल के तेल से भी काम चलाया जा सकता है। अनावश्यक रोम अथवा रोयें भी बांहों की खूबसूरती को कम करते हैं।

उबटन इस नजर से सहयोगी भूमिका निभाने में सक्षम हैं, साथ ही इससे त्वचा स्निग्ध बनती है। बगलों से भी बालों को समय-समय पर साफ कर देना जरूरी है। इतना याद रखें कि बाहों पर भूलकर भी रेजर का उपयोग न करें। बाल यदि हल्के हों और उन्हें हटाने की इच्छा या जरूरत न हो तो ब्लीचिंग विधि से उनका रंग हल्का किया जा सकता है लेकिन हाथों के लिए अमोनिया की मात्र चेहरे की तुलना में कुछ ज्यादा लेनी होगी। अनावृत्त रहने की वजह से बाहें, मौसम धूल-मिट्टी व धूप आदि से ज्यादा प्रभावित होती हैं लेकिन घरेलू ढंग से देखभाल और इलाज करके उन्हें खूबसूरत बनाया जा सकता है।

कुछ आसान उपाय

कुहनियां यदि सख्त हों व काली पड़ जाती हों तो एक रूमाल को गर्म जल में भिगोकर वहां कुछ देर रखें ताकि मैल फूल जाये। फिर सूखे तौलिए से रगड़ कर साफ करें और नींबू का रस मल कर रगड़ें।

टमाटर के रस में कच्चा दूध एवं थोड़ा-सा नींबू का रस मिलाकर बांहों पर लेप करें। आधे घंटे बाद साफ कर लें। इससे कोमलता और निखार आयेगा।

मसूर की दाल को दूध में गलाकर फुला लें और पीसकर उबटन करें। रोयें कम होंगे तथा कोमलता आयेगी। **(स्वास्थ्य दर्पण)**

औरतें सैक्सी क्यों लगती हैं?

वामा कर्मवीर अनुरागी

मर्द और औरत दोनों ही उस खुदा की देन हैं। फिर भी औरतें, मर्द से ज्यादा सैक्सी क्यों लगती हैं और वह क्या है जो औरतों को सैक्सी दर्शाता है?

मैंने साक्षात्कार से, अनुभव और पठन-पाठन से इस सैक्स आकर्षण पर काफी अध्ययन किया है पर सैक्स अपील या आकर्षण किसमें है और किसमें नहीं है, इसके लिए मैंने निम्न प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये हैं जो आपको बता रहे हैं।

प्रारंभिक दिनों में जो महिला आंदोलन हुए हैं, उनमें महिलाएं मेकअप और मोहक परिधानों का बहिष्कार करती थीं क्योंकि उन्हें सैक्सी वस्तु समझा जाता था और उस समय वे काफी परेशान और थक गयी थीं, पर आज बहुत-सी औरतें सैक्सी दिखना पसंद करती हैं पर दूसरे उद्देश्यों से। वे सिर्फ पुरुषों की नजर में सैक्स दिखना पसंद नहीं करती बल्कि अपने लिए भी वैसी अनुभूति चाहती हैं। सैक्सी होना अब उन्हें अच्छा लगता है, उन्हें शक्ति प्रदान करता है, अतः सैक्स आकर्षण निम्न कुछ बातों को एकदम सच सिद्ध करता है।

आत्मविश्वास स्त्री के सैक्स आकर्षण के लिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह सब गुणों में सर्वोपरि है। अगर किसी स्त्री में यौन आत्मविश्वास है, तब उसे बहुत अधिक सजने-संवरने की आवश्यकता नहीं होती और अगर

उसमें विश्वास की कमी होती है, तो दिल की धडकन को रोक देने वाला सौंदर्य भी सैक्स विहीन है।

स्त्री और पुरुष सैक्स आकर्षण को अलग-अलग तरह से परिभाषित करते हैं। स्त्री सैक्स आकर्षण को निजी और व्यावहारिक शैली समझती है, इसलिए सैक्सी दिखना पसंद करती है पर पुरुष अक्सर आंतरिक गुणों या विशेषताओं को सैक्स आकर्षण के रूप में परिभाषित करते हैं। अंदरूनी चमक को ही सैक्स अपील का प्रदर्शक समझते हैं।

कुछ पुरुष ऐसा मानते हैं कि कुछ स्त्रियों में सैक्स की जबरदस्त सुगन्धि होती है जो एक विशिष्ट कंपायमान लहर को प्रवाहित करती है। पुरुषों ने भी ध्यान दिया होगा कि जो स्त्रियां सेक्स कारणों से उनसे संबंध स्थापित करती हैं, वे कितनी आसानी से समर्पण कर देती हैं और कुछ इस तरह का प्रभाव डालती हैं कि उनका साथी सैक्स के सिवाय कुछ सोच ही नहीं पाता।

हममें से बहुत लोग सैक्स अपील या आकर्षण के प्रति कुछ भ्रांतियों को गले लगा बैठते हैं कि सैक्सी होने के लिए युवा और सुंदर होना जरूरी है या लड़की का पतली होना, छरहरी होना ही सेक्स आकर्षण का द्योतक है। जब मैंने इस भ्रांति के निवारण के लिए कई पुरूषों से उक्त प्रश्न पूछा तो अधिकतर लोगों ने खंडन किया कि सैक्स आकर्षण में उम्र और सुंदरता कोई मायने नहीं रखती। 50 वर्ष की औरत भी 20 वर्ष की युवती की तरह सैक्स अपील रख सकती है।

आज स्त्रियों में एक स्वस्थ सैक्स अपील का पदार्पण हो रहा है। औरतें मर्दों के लिए ही नहीं, अपने लिए भी सैक्स आकर्षण रखना पसंद करती हैं। **(उर्वशी)**

सौन्दर्य पूनम दिनकर

यूं करिए अपनी आंखों का मेकअप

आंखें मन का आइना होती हैं, जो बिन बोले बहुत कुछ बता देती हैं। हर स्त्री की आंखें तो 'मृगनयनी' सी नहीं होती परन्तु कुछ कोशिश व सुघड़ता से अपने नयनों में निखार लाया जा सकता है। अगर आप भी अपनी आंखों में निखार लाना चाहती हैं तो आजमाइए इन उपायों को-

आंखों के ऊपरी मेकअप से पहले आप अपनी आंखों की नियमित देखभाल सुरक्षा तथा पोषण पर ध्यान अवश्य दें। इसके लिए 24 घंटे में कम से कम 6 घंटे की सुकून भरी नींद, मंद प्रकाश में आंखों पर जोर न पड़ने देना, स्वच्छता रखना तथा पौष्टिक आहार का सेवन करना, ये अति महत्त्वपूर्ण बिन्दु हैं जो नेत्रों की ज्योति व जीवन में सहायक हैं।

आंखों के मेकअप से पहले फाउंडेशन की एक हल्की परत भली-भांति फैलाकर एकसार कर लें। यदि आंखों पर कालिमा हो तो कंसीलर का प्रयोग करें, परन्तु ध्यान रहे कि यह भाग शेष चेहरे से मेल खाता हो।

गर्मी के मौसम में प्रसाधन सामग्री पाउडर वाली ही लें। लाइनर का प्रयोग दिन में ऊपरी पलक पर बहुत पतली रेखा के रूप में करें। निचली पलक को ऐसे

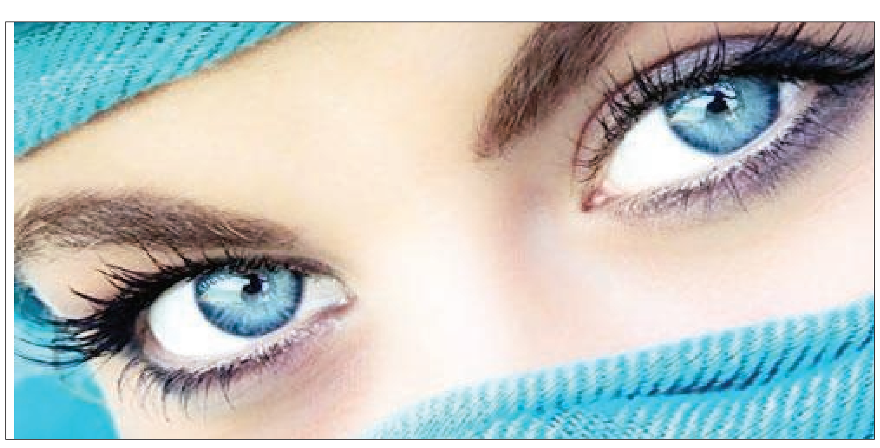

ही रहने दें। आजकल यही प्रचलन भी है। रात्रि में दोनों ओर लाइनर लगाएं। यदि आंखें अधिक दूर-दूर हों तो लाइनर पलकों के एकदम अंदर कोर के भी अंदर से शुरू करें ताकि दूरी कम लगे। अधिक निकट स्थित आंखों के माध्यम से शुरू करें। छोटी आंखों पर लाइनर मध्य में थोड़ी मोटी रेखा के रूप में बनाएं। सर्दी के दिनों में दिन में भी लाइनर दोनों ओर लगाया जा सकता है।

सर्दियों में क्रीम, फ्रास्टेड प्रसाधन व गहरे रंग का ही शैडो प्रयोग करें।

बारिश के मौसम में आंखों का मेकअप बहुत सावधानी से करें। लाइनर का तरल व पाउडर दोनों रूप में प्रयोग करें जो कई रंगों में उपलब्ध हैं। आई शैडो भी 'क्रीम' प्रयोग करें। मस्कारा उच्च कोटि का रंगहीन अथवा 'वाटरप्रूफ' ही प्रयोग करें वरना चेहरे पर फैल जाता है। अधिक हो तो कोल्ड क्रीम को अंगुली पर फैला कर 'आई लैश ब्रश' से पलकों को संवार दें।

गर्मी के वक्त पाउडर, आई शैडो जो 'फ्रोस्टेड' हो, का प्रयोग करें। गीले या सूखे शैडो ब्रश की मदद से अपनी पलकों के, नाक की ओर के छोर से आंखों के बाहरी कोने तक मत्स्याकार देते हुए शैडो लगाएं। सूखने दें तथा रूई से एकसार कर लें। दो रंगों का सामंजस्य भी सूखने पर रूई से स्थापित करें। गर्मियों में शैडो को लाइनर के रूप में भी प्रयोग कर सकती हैं। पतली नोक वाली ब्रश से शैडो की रेखाएं बनाएं। ऊपरी व निचली दोनों पलकों पर हल्के-से काजल से और निखार लाएं।

आंखों के साथ भौंहें भी आकार में हों। उन पर उपयुक्त रंग की पेंसिल से स्ट्रोक दें, ब्रुश से संवार दें। समुचित प्रकाश व हाथ के शीशे की निकटता में ही मेकअप करिए। विशेष अवसरों पर कुछ अलग दिखने के लिए लाइनर का परंपरागत काला रंग त्यागकर ब्लू या ब्राउन रंग से आंखें सजाइए। **(उर्वशी)**

मालिश से बनायें अपनी त्वचा को खूबसूरत

सौन्दर्य शिखा चौधरी

ऐसे प्रदूषित माहौल में अपनी चमक-दमक बनाये रखने के लिए आजकल की नारी क्या कोशिशें नहीं करती मगर सिर्फ मेकअप कर लेने से बात नहीं बनती। सिर्फ उबटन लगा लेने से त्वचा कांतिमय रहेगी, यह भी जरूरी नहीं। त्वचा को भी पोषण की जरूरत होती है। इसके लिए उसे मालिश चाहिए। अपनी त्वचा पर मालिश करके देखिए। फिर जो निखार सामने आयेगा, वह आपकी त्वचा को और भी ज्यादा खूबसूरत बना देगा।

- मालिश के लिए किसी अच्छी क्रीम या लेप का इस्तेमाल करें।
- सबसे पहले हाथों की दूसरी और तीसरी उंगलियों को होंठों के बाहरी किनारों की ओर रखकर गालों से लेते हुए कानों तक ले जाएं।
- फिर दाएं हाथ की चारों उंगलियों को माथे के बीच में रखकर भौहों को धीरे से ऊपर उठाते हुए मालिश करें और उंगलियों को कान की तरफ ले जाएं। इसी तरह बायें हाथ से भी करें।
- मध्यमा और कनिष्ठा उंगलियों से माथे के दोनों ओर भौंहों के ऊपर अर्धवृत्ताकार मालिश करें। मालिश करते वक्त आंखों को हमेशा बंद रखें।
- कनिष्ठा उंगली से हल्के दबाव से आंखों की पलकों और भौंहों के बीच अंदर की ओर से बाहर की ओर ले जाते हुए मालिश करें।
- गर्दन और गले पर कई बार एक के बाद दूसरे हाथ से ठोडी से नीचे गर्दन की ओर ले जाते हुए मालिश करें। फिर गले पर करें।
- हथेलियों को नीचे की ओर रखते हुए तर्जनी और मध्यमा उगंलियों से अपनी ठोड़ी को पकड़ें। तेजी से जबड़े के बाहरी भाग की ओर ले जाते हुए ठोड़ी की मालिश करें।
- बीच की दोनों उंगलियों से गालों को ऊपर की ओर उठाते हुए ऊपर की दिशा की ओर मालिश करें।
- दोनों हाथों की दूसरी और तीसरी उंगलियों से ठोड़ी, मुंह के ऊपरी भाग पर ऊपर, मध्य और नीचे की ओर लाते हुए मालिश करें।
- कुछ अन्य जरूरी बातों का भी ख्याल रखें।
- रात को माइल्ड सोप से चेहरा साफ करें।
- सुबह टिश्यू पेपर से चेहरा साफ करें। यदि टिश्यू पेपर पर तेल की बूंदें बनी हों तो समझें कि आपकी त्वचा तैलीय है। यदि कहीं कहीं तेल की बूंदें हों तो आपकी त्वचा शुष्क और तैलीय त्वचा का मिलाप होगी। यदि कोई तैलीय बूंद नहीं बनती, तब आपकी त्वचा शुष्क होगी।
- दिन में लगभग दस-बारह गिलास पानी जरूर पिएं।
- हमेशा सनस्क्रीन लगाकर ही बाहर जायें।
- संतुलित आहार लें।
- सीजनल (मौसमी) फल लें।
- नियमित दूध पिएं।
- मेकअप हटाकर सोएं।
- नरिशिंग क्रीम लगाकर सोएं। **(उर्वशी)**

लेबर कोड के खिलाफ व मांगों को लेकर 20 मई की देशव्यापी हड़ताल के लिए सीटू ने कसी कमर

देशप्राण संवाददाता

झुमरीतिलैया : सीटू सहित 10 केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों और केन्द्र व राज्य सरकार के अंतर्गत कर्मचारी फेडरेशनों के संयुक्त आह्वान पर लेबर कोड के खिलाफ एवं 17 सूत्री मांगों को लेकर 20 मई को देशव्यापी हड़ताल को सफल बनाने के लिए मजदूर संगठनों ने कमर कस लिया है। तैयारियों को लेकर सीटू की विस्तारित बैठक परिवहन मजदूर यूनियन के जिलाध्यक्ष मो रफीक अंसारी की अध्यक्षता में सोमवार को साहु धर्मशाला में संपन्न हुई।

बैठक में जिला सचिव ने सचिव रमेश प्रजापति ने हड़ताल की तैयारियों की रिपोर्ट करते हुए कहा कि इसके लिए व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार किया जा रहा है। हड़ताल की विधिवत सूचना भी विभिन्न सेक्टरों में दिया गया है. बैठक में निर्णय लिया गया कि कोडरमा जिला में व्यापक रूप से हड़ताल सफल किया जाएगा और सड़कों पर उतरकर केन्द्र सरकार की मजदूर विरोधी नीतियों का विरोध किया जाएगा। मुख्य वक्ता और सीटू के राज्य सचिव संजय पासवान ने कहा कि केन्द्र सरकार अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठनों की सिफारिशों को लागू नहीं कर रही है, न ही 2015 के बाद भारतीय श्रम सम्मेलन बुलाया गया है।

ट्रेड यूनियनों की मांगों को नकारा जा रहा है, जो एनडीए सरकार की मजदूर विरोधी चेहरा को उजागर करता है। निजीकरण के नाम पर लाखों नौकरी पैदा करने वाली देश की सरकारी संस्थाओं को बेचा जा रहा है। आंगनबाड़ी यूनियन की प्रदेश अध्यक्ष मीरा देवी ने कहा कि आंगनबाड़ी में एफआरएस के तहत डिजिटलीकरण के नाम पर सेविका सहायिकाओं का उत्पीड़न हो रहा है। पहले आधार सत्यापन के मामले की तरह, एफआरएस द्वारा सत्यापित न हो पाने वाले लाभार्थियों को सूची से हटाकर राशन से वंचित कर दिया जाएगा। यह पूर्णतः गैरकानूनी है तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम का घोर उल्लंघन है। जिसके विरोध में 20 मई की हड़ताल में हमलोग भी शामिल हो रहे हैं।

सीटू के जिलाध्यक्ष प्रेम प्रकाश ने हड़ताल को सफल करने का आह्वान किया। बैठक में ढ़िबरा मजदूर यूनियन के संयोजक महेन्द्र तुरी, अशोक रजक, डीवीसी श्रमिक यूनियन के राजमोहन, आंगनबाड़ी यूनियन की जिलाध्यक्ष शोभा प्रसाद, जिला सचिव वर्षा रानी, कोषाध्यक्ष संतोषी कुमारी, संयुक्त सचिव मंजू मेहता, संध्या वर्णवाल, बेबी देवी, विमला कुमारी, संध्या कुमारी, सुनीता मेहता, रानी, संजू, मीना एक्का, पिंकी, बबीता, सोनी, रीता, रेखा, उषा, रिंकी सहित दर्जनों लोग मौजूद थे।

खबरकोना

मां गंधेश्वरी की पूजा आमटाल में गंधक बनिक समाज ने धूमधाम से किया

बलियापुर : आमटाल पंचायत के गंधक बनिक समाज में बड़े ही हरसोलस के साथ एवं विधि विधान के साथ मां गंधेश्वरी का पूजा अर्चना शुरू हुआ। 3 दिन तक चलने वाले मां की पूजा में पूरे आमटाल पंचायत के बनिक समाज के सभी बच्चे, बुजुर्ग, महिला एवं नवयुवक तथा ग्रामीण शामिल हुए। यह पूजा बनिक समाज का सबसे बड़ा त्यौहार में से एक माना जाता है। सर्वप्रथम पुरोहित ने विधि विधान के साथ चक्रवर्ती तालाब से वारी (घट) लाकर मंदिर में स्थापित किए। इस दौरान परिवार गांव और समाज की खुशहाली की कामना की जाती है 'मौके पर मानिक दे, गौतम चंद्र, मंटू दे, सुनील दत्ता,उज्जवल दे ,शीतल दत्ता ,गोपीनाथ चंद्र, विष्णु दे, रवि दे, हाबू चंद्र,काजल दे ,विक्रम चंद्र, सुरजीत चंद्र, तूफान चंद्र, सजल चंद्र, आकाश चंद्रा, विजय दत्ता, वीर दत्ता, सौरव चटर्जी, सत्यजीत चंद्र, हिमानी देवी सुलेखा देवी मोना देवी, ज्योति दत्ता, सनातन दत्ता, राहुल दे, अमित चंद्रा,शीतल चंद्रा, द्वारकानाथ चंद्र, इंद्रजीत चंद्र, सोना दे, अपर्णा दे, माधुरी दे, मिलन चक्रवर्ती, संजय पाल, अभिषेक दे ,अरूप चंद्र पायल दे,हबलू दास ,डब्लू दास, बबलू दे, दुलाल दत्ता, दीनबंधु चंद्र,मिंटू चंद्र, रीना पाल,मृणाल चक्रवर्ती, संकेत एवं तमाम तमाम बनिक समाज के लोग एवं ग्रामीण उपस्थित थे।

सेंट जेवियर्स इंटरनेशनल स्कूल में मदर्स डे सेलिब्रेशन में पहुँची पूर्णिमा नीरज सिंह

सिंदरी : जीजीसीइटी सेंट जेवियर्स इंटरनेशनल स्कूल, नावाडीह धनबाद में ₹मोमेंट्स विथ मोम₹ मदर्स डे सेलिब्रेशन का भव्य आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस विशेष अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में झरिया की पूर्व विधायक पूर्णिमा नीरज सिंह ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम को और भी यादगार बना दिया। श्रीमती सिंह न सिर्फ एक सम्माननीय सामाजिक कार्यकर्ता हैं, बल्कि एक प्रेरणादायी महिला व्यक्तित्व भी हैं, जिन्होंने समाज सेवा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनकी प्रखरता, कार्यशैली और सकारात्मक दृष्टिकोण ने उपस्थित सभी अभिभावकों और बच्चों को अत्यंत प्रभावित किया। कार्यक्रम में बच्चों द्वारा माताओं के लिए विशेष गीत, नृत्य, नाटिका और खेलों का आयोजन किया गया, जिनमें माताओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस आयोजन का उद्देश्य मातृत्व के प्रति आभार प्रकट करना एवं माता - पुत्र/पुत्री के संबंधों को सुदृढ़ करना था। माताओं को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया और विद्यालय परिवार ने उनके योगदान को खुले हृदय से सराहा। यह संध्या न केवल भावनाओं से परिपूर्ण रही, बल्कि सभी के दिलों में एक सुंदर याद के रूप में बस गई।

वाहन की चपेट में आने से बाइक सवार महिला घायल

कोडरमा : कोडरमा थाना के बजरंगबली चौक के समीप सोमवार को अज्ञात वाहन की चपेट में आने से बाइक सवार एक महिला घायल हो गई। घायल की पहचान सकीना प्रवीण उम्र 30 वर्ष पति मो जफर ग्राम ढोलाकोला के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार बाइक से तिलैया की तरफ आने के क्रम में बजरंगबली चौक के समीप वाहन के चपेट में आ जाने से बाइक सवार महिला घायल हो गयी। इसके बाद आनन- फानन में महिला को कोडरमा सदर अस्पताल लाया गया जहां इलाज चल रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर आशी केयर अस्पताल में नर्सों को किया गया सम्मानित

मेदिनीनगर (पलामू) : स्थानीय पांकी रोड जनकपुरी स्थित आशी केयर अस्पताल में मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मौके पर अस्पताल के निदेशक मनीष तिवारी ने अपने संस्थान की दर्जनों नर्सों के साथ मिलकर लाइट जलाई व केक काटे। साथ ही नर्सों के योगदान की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान अस्पताल के निदेशक व वरिष्ठ स्टाफ ने नर्सों को फूल के साथ उपहार भेंट कर सम्मानित किया। निदेशक मनीष तिवारी ने कहा कि नर्सें निस्वार्थ सेवा, धैर्य व करुणा की प्रतिमूर्ति होती हैं। आज का दिन उनके त्याग व समर्पण को याद करने का अवसर है। समारोह के दौरान नर्सिंग स्टाफ ने भी अपने अनुभव साझा किए। साथ ही एक-दूसरे को शुभकामनाएं दीं। आयोजन का उद्देश्य नर्सिंग पेशे के महत्व को उजागर करना व नर्सों के मनोबल को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित स्टाफ ने सामूहिक रूप से सेवा भाव को समर्पित रहने का संकल्प लिया।

मुस्कान हॉस्पिटल में डॉक्टरों के उपस्थिति में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस

देशप्राण संवाददाता

बोकारो : फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जन्म की सालगिरह पर पूरी दुनिया में प्रतिवर्ष 12 मई को अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस मनाया जाता है इस वर्ष 2025 के अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस का थीम है .....हमारी नर्स हमारा भविष्य। नर्सों की देखभाल से अर्थव्यवस्था मजबूत होती है.... इसी सिलसिले में उपनगर चास के मुस्कान हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में एक सादे समारोह में अस्पताल के चिकित्सक डॉक्टर इरफान अंसारी डॉक्टर शाहनवाज अनवर डॉक्टर अवनीश श्रीवास्तव डॉक्टर मनोज श्रीवास्तव आदि की उपस्थिति में नर्स दिवस मनाया गया इस कार्यक्रम में अस्पताल के नर्सिंग इंचार्ज उत्तम खवास, संतोषी, पुष्पा बसंती, रोशनतारा, निमाई इत्यादि ने मिलकर केक काटा और कार्यक्रम की शुरूआत की। बाद में नर्स की महत्ता व उनके कार्यकलापों की सराहना करते हुए अस्पताल के वरीय निदेशक डॉक्टर एस सी मुंशी ने कहा कि चिकित्सा जगत में नर्स के साथ काम करना उनके लिए सौभाग्य और खुशी की बात है आपकी दयालुता सहानुभूति और विशेषज्ञता हमारे कार्य स्थल को एक बेहतर स्थान बनाती हैं आपको सराहना और खुशी भरे नर्स दिवस 2025 की ढेरों शुभकामनाएं भी दी।

ईंट भट्ठे के मजदूर की हत्या, दो साथियों पर पत्थर से कुचलकर मारने का आरोप

देशप्राण संवाददाता

मेदिनीनगर : पलामू जिले में एक ईंट भट्ठा मजदूर की पत्थर से कूच कर हत्या कर दी गई। चैनपुर थाना क्षेत्र के चोटहांसा गांव में सोमवार को मृतक की पहचान तालापारा गांव निवासी 45 वर्षीय राजेश भुइयां के रूप में हुई। मृतक की पत्नी सुखमनिया देवी ने बताया कि वह और उनके पति इटको गांव स्थित अजय मेंटल ईट भट्ठा पर काम करते थे। शनिवार दोपहर 12 बजे राजेश भुइयां कोयला फोड़ने वाले दो मजदूरों के साथ गए थे। उसके बाद वह लौटकर नहीं आए।परिजनों ने खोजबीन की। रविवार को चैनपुर थाना में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। सोमवार को करीब 11 बजे भुतहा पहाड़ी के पास राजेश का शव मिला। घटनास्थल से हत्या में प्रयुक्त पत्थर भी बरामद किया गया।ईंट भट्ठा संचालक अजय चौधरी के अनुसार, आरोपी दोनों मजदूर लातेहार जिले के मनिका थाना क्षेत्र के रहने वाले हैं। घटना की रात से ही दोनों फरार हैं। चैनपुर थाना प्रभारी श्रीराम शर्मा ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए एमएमसीएच भेजा।

मेदिनीनगर : मोहम्मदगंज के कई गांवों में अंधविश्वास की जड़ें जमा रहे ओझा-गुणी

देशप्राण संवाददाता

मेदिनीनगर : 21वीं सदी के भारत में विज्ञान एक तरफ तरक्की कर रहा है। वही दूसरी ओर आज भी लोग अंधविश्वास के मकड़जाल में फंसे हुए। विज्ञान के इस युग में भी ग्रामीण इलाकों में अंधविश्वास की जड़ें काफी गहरी हैं। पलामू जिले के मोहम्मदगंज प्रखंड क्षेत्र के कई गांवों में भूत-प्रेत के नाम पर ओझा-गुणी चांदी काट रहे हैं। झाड़ फूंक कराने के लिए पलामू व गढ़वा जिला के अलावा दूसरे राज्यों से भी लोग ओझा-गुणी के पास पहुंचते हैं।

हालांकि प्रशासन, सरकार व न्यायपालिका अंधविश्वास को सच नहीं मानती। समाज के लोगों के दिलों दिमाग में घर करने वाले अंधविश्वास की भ्रांतियों को दूर करने के लिए लोगों को जागरूक किया जा रहा है। सरकार व न्यायपालिका अंधविश्वास की भ्रांति को कानूनी अपराध की श्रेणी में रखा है। इसके बावजूद आज भी खुलेआम प्रखंड के कई गांवों में ओझा-गुणी के घर दरबार सजता है और लोग झाड़ फूंक कराते है। इससे अंधविश्वास की जाल में फंसे लोगों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। साथ ही वे शारीरिक व मानसिक रूप से परेशान होते हैं। अंधविश्वास की कमजोरी का नाजायज फायदा उठा कर इसे संचालित करने वाले ओझा गुणी मालामाल हो रहे हैं। दूसरी तरफ अंधविश्वास से जकड़े लोग परेशान हैं। ओझा गुणी की दुकानदारी धड़ल्ले से चल रही है।

प्रखंड के भजनिया, सोनबरसा का नवकटोला, गोलापत्थर, बैरिया टोला, बटौवा, सिघना, हाथदाह, मोहम्मदगंज का सिंचाई कॉलोनी, राजनडीह समेत अन्य कई गांव में ओझा-गुनियों के दरबार सजते हैं। जिसमें आसानी से इसके चक्कर में पड़ने वाले लोग पहुंचते हैं। सप्ताह का रविवार, मंगलवार, गुरुवार का दिन का झाड़ फूंक का विशेष दिन माना जाता है। भजनिया गांव में चार घर चिह्नित किये गये हैं। जबकि अन्य गांव में कई लोग ऐसे हैं, जो भूत-प्रेत के नाम पर झाड़फूंक कर आर्थिक शोषण कर रहे हैं। बताया जाता है कि सोनबरसा का नवकटोला में लगनेवाला अंधविश्वास का दरबार का स्वयंभू व्यक्ति कभी पुरुष नर्तक के रूप में था। आज वह अंधविश्वास व रूढ़िवादी परंपरा में महारत हासिल कर लिया है। इसके दरबार में पलामू, गढ़वा सहित छत्तीसगढ़, यूपी, बिहार व कैमूर जिला के गांव से लोग पहुंचते हैं। जानकारी के मुताबिक लोगों से पूजा सामग्री उपलब्ध कराने के नाम पर मनमाना रकम वसूला जाता है। इस तरह ओझा-गुणी मनमाने तरीके से धन कमाते हैं। अंधविश्वास में फंसे लोगों की बाधा दूर नही होती। लेकिन वे लोग शरीरिक, मानसिक व आर्थिक रूप से अधिक परेशान हो जाते है।

नौडीहा बाजार में मां की झाड़फूंक कराने गई बेटी से छेड़खानी

नौडीहा बाजार (पलामू) : पलामू जिले के नौडीहा बाजार थाना क्षेत्र में युवती के साथ छेड़खानी व मारपीट का मामला सामने आया है। इस संबंध में पुलिस से शिकायत की गई है। बताया जाता है कि शनिवार की रात मां को बिच्छू काटने के बाद उसका झाड़फूंक कराने के लिए बेटी लेकर गई थी। इसी दौरान आरोपी लवकुश ने छेड़खानी की। पीड़िता के भाई ने बताया कि जब मां को बिच्छू ने काटा था, उस समय घर में सिर्फ मां और बहन ही थी। झाड़फूंक के लिए मां को ले जाने पर आरोपी ने बहन का हाथ पकड़ लिया और अभद्र तरीके से व्यवहार करने लगा। शोर मचाने पर लोगों ने आरोपी को डांट कर भगा दिया। इसकी जानकारी मिलने पर मैं अपने भाई के साथ आरोपी के घर उसे समझाने गया था, लेकिन वे लोग झगड़ने लगे। इसके बाद वे लोग घर से टांगी निकाल कर वार कर दिया। जिससे बहन को चोट लगी। इसके बाद हम लोग दोनों बाइक छोड़कर भाग गए पुलिस को सूचना दी। लेकिन आरोपियों ने दोनों बाइक जला दी। इस संबंध में नौडीहा बाजार थाना प्रभारी अमित कुमार द्विवेदी ने बताया कि मामले में आवेदन आया है। दोनों तरफ से मारपीट का आरोप है। मामले की जांच की जा रही है।

जय माता दी का जयघोष, नगर भ्रमण के पश्चात पूजा अर्चना कर किया झंडारोहण

देशप्राण संवाददाता पी6

जयनगर : प्रखंड के तिलोकरी पंचायत अंतर्गत ग्राम बेहराडीह में 17 मई से आयोजित होने वाले पांच दिवसीय श्री श्री 108 श्री देवी दुर्गा प्राण प्रतिष्ठा सह नव शतचंडी महायज्ञ को लेकर सोमवार को झंडारोहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान श्रद्धालुओं ने हाथों में भगवा ध्वज तथा गाजे बाजे के साथ जय श्री राम, हर हर महादेव, जय माता दी, धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो, गौ माता की जय आदि की जयकारे लगाते हुए नगर भ्रमण करते हुए पुनः यज्ञ स्थल पहुंचे। जहां यज्ञाचार्य आचार्य बसंत शास्त्री जी महाराज, पंडित विष्णु कांत शास्त्री के द्वारा विधिवत वैदिक मंत्रों उच्चारण के साथ पूजा-अर्चना कर यज्ञ के मुख्य पुजारी रामचंद्र साव के द्वारा ध्वजारोहण किया।

मौके पर आचार्य बसंत शास्त्री जी महाराज ने कहा कि यज्ञ करने से वातावरण शुद्ध होता है साथ ही साथ क्षेत्र का कल्याण होता है। मनुष्य को अपने जीवन में धर्म व कर्म करना जरूरी है, जिससे आपका जीवन शुद्ध बन सके। इस दौरान बेहराडीह के ग्रामीण श्रद्धालुओं ने यज्ञ समाप्त होने तक मांस, मदिरा सेवन नहीं करने का संकल्प लिया। यज्ञ समिति के रामचंद्र साव ने बताया कि 17 मई को यज्ञ के शुभारंभ जल यात्रा के साथ होगा। वहीं 21 मई को पूणाहुति एवं भंडारा एवं प्रतिमा विसर्जन के साथ यज्ञ संपन होगा। उन्होंने बताया कि यज्ञ प्रतिदिन संध्या 7 बजे से संगीतमय प्रवचन का आयोजन किया गया है। जिसमें कथावाचिका के रूप में भागलपुर बिहार के मानस की सुश्री संगीता सुमन शामिल होंगी। रामचंद्र साव ने बताया कि मां दुर्गा मंदिर निर्माण को लेकर भूमिदान सीताराम यादव, लक्ष्मण यादव, दीपक यादव, राधेश्याम यादव के सहयोग मिला है।

यज्ञ को सफल बनाने में बाजो साव, महेंद्र साव, अर्जुन साव, छत्रु यादव, किशोर साव, भुवनेश्वर साव, डेगलाल साव, सुरेश साव, छोटू साव, ज्योति कुमारी, केसिया देवी, कौशल्या देवी सहित दर्जनों श्रद्धालु शामिल थे।

''इस पॉलिसी में निवेश पोर्टफोलियो में निवेश का जोखिम पॉलिसीधारक द्वारा वहन किया जायेगा''
सबसे पहले लाइफ इंश्योरेंस
ऑनलाइन भी उपलब्ध
एक सीप - दो फायदे
बचत भी : सुरक्षा भी

एलआईसी की सीप
योजना सं.: 852 UIN 512L334V01
यूनिट लिंक्ड, असहभागी, व्यक्तिगत जीवन बीमा योजना

चुनने की आजादी:
बचत धनराशि: आपकी बचत रु. 4000/– प्रति माह या रु. 40000/– प्रति वर्ष से शुरू हो कर जीवन के बड़े लक्ष्यों के लिए उससे अधिक हो सकती है।
4 फंड विकल्प: आप बांड, सुरक्षित, संतुलित एवं वृद्धि में से कोई भी विकल्प चुन सकते हैं।
नि:शुल्क फंड परिवर्तन: आप अपना धन वर्ष में चार बार नि:शुल्क एक फंड से दूसरे फंड में परिवर्तित कर सकते हैं।
आवश्यकता पर निकासी : 5 वर्ष उपरांत आप आंशिक निकासी कर सकते हैं।*

पॉलिसी के लाभ:
- जोखिम सुरक्षा उपलब्ध
- गारंटीकृत लाभ: यूनिट फंड वैल्यू के साथ गारंटीकृत लाभ*
- पॉलिसी परिपक्वता: यूनिट फंड वैल्यू

पात्रता :
प्रवेश की आयु: न्यूनतम आयु: 90 दिन; अधिकतम आयु: 65 वर्ष
परिपक्वता आयु: न्यूनतम आयु: 18 वर्ष; अधिकतम आयु: 85 वर्ष
पॉलिसी अवधि: 10 – 25 वर्ष

एसएमएस करें अपने शहर का नाम 56767474 पर
कॉल सेंटर सेवा (022) 6827 6827
डाउनलोड करें एलआईसी मोबाइल एप "MyLIC"
विज़िट करें www.licindia.in पर; हमें फॉलो करें LIC India Forever

*शर्तें लागू : अधिक विवरण के लिए अपने अभिकर्ता/एलआईसी की नजदीकी शाखा से संपर्क करें
भ्रामक/धोखाधड़ी वाले फोन कॉल्स से सावधान
आईआरडीएआई बीमा पॉलिसी विक्रय, बोनस की घोषणा अथवा प्रीमियम निवेश संबंधी गतिविधियों से संबंध नहीं रखता है। ऐसे फोन कॉल्स के प्राप्त होने पर आपसे निवेदन किया जाता है कि तुरन्त पुलिस से शिकायत दर्ज करवायें।
करार के प्रथम पाँच वर्ष में यूनिट से संबद्ध बीमा पॉलिसियां समाप्त नहीं की जा सकती। पाँचवे वर्ष के अंत तक यूनिट से संबद्ध बीमा पॉलिसियों को पॉलिसीधारक न समर्पण कर सकता है और न ही उनमें निवेश किये गए धन को आंशिक या पूर्ण रूप से निकाल सकता है।
नियम व शर्तों की विस्तृत जानकारी के लिए बिक्री समापन से पूर्व बिक्री-पुस्तिका ध्यानपूर्वक पढ़ लें।
LIC भारतीय जीवन बीमा निगम LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA
हर पल आपके साथ
LIC/AR/19-20/40/HIN

कमरा के फर्श में बना था नकली शराब का कारखाना

टाइल्स हटाते ही मिला गुप्त कमरा, एक से 6 बोतल बनाकर बेचता था आरोपी

देशप्राण संवाददाता

मेदिनीनगर : पलामू में पुलिस ने एक नकली शराब फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया है। पाटन थाना क्षेत्र के कुंदरी गांव में एक मकान के अंदर कमरे की जमीन के नीचे गुप्त कमरा बनाकर यह धंधा चलाया जा रहा था। पुलिस को सूचना मिली थी कि जितेंद्र प्रसाद अपने घर में अवैध शराब का कारोबार कर रहा है। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर एक टीम का गठन किया गया। टीम ने जब आरोपी के घर की तलाशी लेने पहुंची तो काफी देर बाद जितेंद्र ने घर का दरवाजा खोला और पुलिस को अंदर जाने दिया। पूरे घर को खंगालने के बाद भी पुलिस को शराब बनाने का कोई सबूत हाथ नहीं लगा। फिर बारीकी से पूरे घर को देखने पर पुलिसकर्मियों को एक कमरे में लगी टाइल्स में हुक लगा मिला।

टाइल्स हटाते ही नीचे एक गुप्त कमरा मिला।

ब्रांडेड शराब का लेवल लगा नकली शराब भारी मात्रा में जब्त किया गया। तीन लोगों पर एफआईआर की गई। इस कमरे से बड़ी मात्रा में अंग्रेजी शराब और उसे बनाने के उपकरण बरामद हुए। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह दूसरे व्यक्ति से शराब खरीदता था। फिर अलग-अलग कंपनियों के नकली लेबल लगाकर एक बोतल से 5-6 बोतलें तैयार करता था। पुलिस ने सभी सामान जब्त कर आरोपी जितेंद्र प्रसाद को गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले में तीन लोगों पर एफआईआर की गई है और ब्रांडेड शराब का लेवल लगा नकली शराब भारी मात्रा में जब्त किया है।

मनरेगा की राशि से बागवानी को प्रोत्साहित करने की पहल तेज

देशप्राण संवाददाता

मेदिनीनगर : पलामू जिले में हमेशा बनी रहने वाली सुखाड़ की आशंका को दूर रखने और हरित क्षेत्र के विकास के लिए मनरेगा की राशि से बागवानी की योजना को लगातार प्रोत्साहित किया जा रहा है। वित्तीय वर्ष 2025-26 में भी इस दिशा में प्रयास तेज कर दिया गया है। पहले चरण में मनरेगा अंतर्गत पौधरोपण से जुड़े किसानों को फलदार पौधों की नर्सरी तैयार करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उप विकास आयुक्त शब्बीर अहमद की अध्यक्षता में शनिवार को समाहरणालय के विकास शाखा स्थित सभागार में मनरेगा अंतर्गत पौधरोपण से जुड़े किसानों को फलदार पौधों की नर्सरी तैयार करने का प्रशिक्षण दिया गया।

रविवार को इस दिशा में किसानों ने पहल शुरू कर दी है। उप विकास आयुक्त ने किसानों को नर्सरी तैयार कर गुणवत्ता पूर्ण व अच्छी किस्मों का पौधरोपण करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि फलों की अच्छी गुणवता प्राप्त करने और अधिक उपज हासिल करने की दिशा में भी सफलता मिलेगी। मनरेगा अंतर्गत फलदार नर्सरी बनाने के लिए प्रत्येक प्रखंड से पांच-पांच मनरेगा के बागवानी के लाभुकों को एक दिवसीय प्रशिक्षण के लिए चयन किया गया था। मेदिनीनगर नगर निगम क्षेत्र से सटे चियांकी स्थित बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिक प्रमोद कुमार, प्रदान सीएसओ लंकेश कुमार ने किसानों को प्रशिक्षण दिया। इस दौरान उन्होंने किसानों को फलदार पौधों की नर्सरी तैयार करने की तकनीकी जानकारी दी गई। उन्हें पौधा से ग्राफ्टिंग कर नया पौधा तैयार करने की विधि बताई गई। प्रशिक्षण में पूर्व से मनरेगा की बागवानी योजना से जुड़े 105 किसानों ने भाग लिया। प्रत्येक प्रखंड से पांच-पांच मनरेगा के बागवानी के लाभुक प्रशिक्षक शामिल हुए।

प्रशिक्षकों के अलावा मनरेगा के परियोजना पदाधिकारी उपेंद्र राम, तकनीकी सहायक संजीत कुमार, जेएसएलपीएस की डीपीएम अनिता केरकेट्टा सहित प्रखंडों के प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि पलामू में रसदार फलों यथा संतरा, नींबू, आंवला, आम, अमरूद आदि फलों की काफी संभावना है। इस दिशा में प्रशासन स्तर से पहल की जा रही है। दशकों पहले पलामू आंवला की खेती के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र रहा है।

खबर कोना

भाजपा के नेत्री स्मिता आनंद ने किया गौशाला का निरीक्षण

मेदिनीनगर : भाजपा नेत्री स्मिता आनंद ने आज मेदिनीनगर के बैरिया हाउसिंग कोलनी में अवस्थित गौशाला का निरीक्षण किया और समिति के सदस्यों के साथ विस्तृत चर्चा के दौरान इसके सर्वांगीण विकास तथा मजबूती हेतु हर संभव मदद का आश्वासन दिया। उन्होंने गौशाला की सुंदरता और साफ-सफाई पर भी विशेष जोर देते हुए कहा कि गौशाला के सर्वांगीण विकास से न सिर्फ गौ माता की बेहतर सेवा सुनिश्चित होगी, अपितु क्षेत्र में आवारा गौ वंश की समस्याओं से भी राहत मिलेगी। उक्त अवसर पर उपस्थित गणमान्य लोगों ने गौ सेवा को बढ़ावा देने और गौ वंश की सुरक्षा सुनिश्चित करने का संकल्प लिया। आनंद ने कहा कि गौमाता की सेवा हमारी संस्कारों का हिस्सा है और सरकार भी इस दिशा में हरसम्भव कदम उठा रही है। इस अवसर पर जिला सांसद प्रतिनिधि विजय ओझा, जिला परिषद सदस्य प्रमोद सिंह, वरिष्ठ नेता भाजपा ईश्वरी पांडेय, सांसद के निजी सचिव अलख दुबे, मंडल अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी श्रवण गुप्ता, अविनाश कुमार सिन्हा, विकास तिवारी, सत्येंद्र पाण्डेय,नरेन्द्र मेहता सहित कई लोग उपस्थित थे।

सामुहिक रूप से किया राजा मेदनीराय के प्रतिमा का अनावरण

मेदिनीनगर : सोमवार को बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर शाहपुर किला जीर्णोद्धार समिती के तत्वावधान मे शाहपुर किला के प्रांगण मे पलामू के प्रसिद्ध राजा महाराजा मेदिनीराय जी का आदमकद प्रतिमा की स्थापना समिती के पदाधिकारी द्वारा किया गया। जिसमे आदिवासी मूलवासी समाज के प्रभुत्व आगुआ गण उपस्थित रहे। सभी उपस्थित गण मान्य लोगों ने चेरो वंश के पराक्रमी राजा मेदनीराय के विचार पर चर्चा की गई।

चैनपुर नेउरा रोड को पूर्व महापौर ने निजी खर्च से कराया रिपेयर

मेदिनीनगर : पूर्व महापौर अरुणा शंकर ने चैनपुर - नेउरा रोड में बने बड़े-बड़े गढ्ढे को निजी खर्च से जेसीबी मंगवाकर भरवा कर समतल करवाया ' कहा कि हमारे सांसद आने वाले हैं मैं उनसे इस मार्ग को तत्काल रिपेयर कराने को अनुरोध करूंगी, ताकि बरसात से पहले यह मार्ग चलने योग्य बन सके ' प्रथम महापौर ने दुख भरे शब्दों में कहा आखिर प्रशासन इस मार्ग को बनाने में खामोश क्यों है। धरना प्रदर्शन हुए कई आश्वासन मिले पर स्थिति यथावत है ' पूर्व महापौर ने कहा लगता है प्रशासन किसी बड़ी घटना का इंतजार कर रहा ' मैं इस मुद्दे को सांसद एवं वित्त मंत्री के संज्ञान में दी हूं जिसका निराकरण जल्द होने का आश्वासन मिला है। मैं एक बार पुनः सबों से अनुरोध करूंगी। इस मार्ग का कार्य यथाशीघ्र बनाया जाए

बराही महोत्सव की तैयारी में सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर जायजा लेने पहुंची पलामू एसपी

हुसैनाबाद, पलामू : हुसैनाबाद के बराही धाम में 551 फिट ऊंची मां दुर्गा मंदिर निर्माण और तृतीय बराही महोत्सव को लेकर झारखंड व देश के कई नेता साधु संत व गणमान्य लोगों के अलावा लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं के आने को लेकर पलामू की पुलिस अधीक्षक रिष्मा रमेशन बराही धाम पहुंची। उन्होंने बराही धाम परिसर के हेलीपैड, मंच, टेंट एवं भूमि पूजन स्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने आयोजन समिति के साथ-साथ अधिकारियों को कई दिशा निर्देश दिए। इस दौरान हुसैनाबाद एसडीओ गौरांग महतो, आईपीएस दिव्यांश शुक्ला, राजीव रंजन, छतरपुर एसडीपीओ अवध प्रसाद यादव, थाना प्रभारी अफजाल अंसारी, हुसैनाबाद थाना प्रभारी सोनू कुमार चौधरी, महिला एवं बाल संरक्षण थाना प्रभारी पार्वती कुमारी, ओपी प्रभारी सोनू गुप्ता, बबलू कुमार सहित पुलिस बल के जवान मौजूद थे।

भवनाथपुर में मोबाईल चोरों का बढ़ा आतंक

भवनाथपुर (गढ़वा) : भवनाथपुर में इन दिनों मोबाईल चोरों का आतंक बढ़ गया है।आये दिन रविवार और बुधवार को साप्ताहिक बाजार के दिन मोबाईल चोरों का गिरोह किसी का मोबाईल उड़ा लेते हैं या फिर किसी का पॉकेट ही साफ कर देते हैं। कानूनी पचड़े में फंस कर परेशान होने के डर से अधिकांश लोग थाना में सूचना देने से भी कतराते हैं। हालात यह है कि कई लोग चोरी होने के डर से साप्ताहिक बाजार के दिन अपना मोबाईल घर में ही छोड़कर बाजार जाते हैं। पुलिस प्रशासन की कार्रवाई नहीं होने से मोबाईल चोरों का मनोबल बढ़ता ही जा रहा है। रविवार 11 मई को साप्ताहिक बाजार के दिन सब्जी बाजार में सब्जी खरीदने के दौरान मोबाईल चोर गिरोह के शातिर चोरों ने पत्रकार अरविन्द कुमार पाठक के पॉकेट से उनका रेडमी 12/5जी मोबाईल फोन उड़ा लिया। मोबाईल फोन चोरी होने का पता चलते ही पत्रकार अरविन्द पाठक ने दूसरे व्यक्ति के फोन से तत्काल अपने नंबर पर फोन लगाया। परन्तु घंटी बजने के बावजूद चोर ने फोन नहीं उठाया और बाजार से कुछ ही दूरी पर प्लस टू उच्च विद्यालय के पास पहुंच कर फोन को स्वीच ऑफ कर दिया। पत्रकार अरविन्द कुमार पाठक ने तत्काल इस घटना की सूचना भवनाथपुर थाना प्रभारी को दिया। साथ थाने में लिखित आवेदन देकर चोरी हुए मोबाईल फोन का पता लगाने का आग्रह किया है। परन्तु समाचार लिखे जाने तक चौबीस घंटे बीत जाने के बावजूद भी चोरी हुए मोबाईल फोन का कुछ पता नहीं चल सका है।

सरकारी स्कूलों में आज से शुरू होगा चार दिनी समर कैंप

देशप्राण संवाददाता

मेदिनीनगर : पलामू के सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में कक्षा एक से 10वीं तक के छात्र-छात्राओं के लिए मंगलवार से 16 मई तक ग्रीष्मकालीन शिविर(समर कैंप)-2025 का आयोजन किया जाएगा। चार दिनों तक चलने वाले शिविर में बच्चों के बीच कई गतिविधियों का संचालन किया जाएगा। शिविर का उदेश्य विद्यार्थियों में शारीरिक साक्षरता को बढ़ावा देना, शारीरिक क्षमता तथा उसका संतुलन और साथ नियंत्रण विकसित करना, रचनात्मता, टीवर्क, समस्या, समाधान के साथ ही साथ बच्चों द्वारा खुद के बनाये गए खेल पासपोर्ट, खेल सामग्री और कलात्मक अभिव्यक्तियों के जरिए उनके आत्म विश्वास को निखारना है। जिला शिक्षा पदाधिकारी सह जिला कार्यक्रम पदाधिकारी सौरभ प्रकाश ने सभी प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी सह समन्वयक, प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी, प्रखंड साधन सेवी, संकुल साधन सेवियों को स्कूलों में ग्रीष्मकालीन शिविर का अनुपालन कराने का निर्देश दिया। ग्रीष्मकालीन शिविर पलामू जिले के 2564 सरकारी स्कूलों में आयोजित किया जाएगा। खेल संबंधित फोटोग्राफ, प्रतिवेदन डीइओ कार्यालय को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है। चार दिनों तक चलने वाले ग्रीष्मकालीन शिविर में पहला दिन जुम्बा, डांस, मास ड्रिल, देशी खेल, दूसरे दिन अपना खेल बनाओ (मिट्टी, लकड़ी, कागज आदि से खेल सामग्री बनाना और नियम तय कर टीम में खेलना), देशी खेल, तीसरे दिन नृत्य एवं क्राफ्ट, चित्रकला और चौथा दिन अपना सर्टिफिकेट बनाना, खेल उत्सव आदि जैसे कार्यक्रमकों का आयोजन किया जाना है। समग्र शिक्षा अभियान के एपीओ राजेश कुमार ने कहा कि सभी स्कूलों को पत्र प्रेषित कर दिया गया है। इस तरह के आयोजन से बच्चों को नया कुछ सीखने का अवसर भी प्राप्त होगा, जिससे बच्चों का आत्म विश्वास भी बढ़ेगा।

पलामू के सरकारी अस्पतालों में नकली दवाओं का भंडाफोड़

सरकारी लैब में 20 में से 18 दवाएं निम्नस्तरीय, 42 की जांच जारी

देशप्राण संवाददाता

मेदिनीनगर : पलामू में स्वास्थ्य विभाग द्वारा कराई गई दवाओं की जांच में बड़ा खुलासा हुआ है। सरकारी अस्पतालों में वितरण के लिए आई दवाओं में से अधिकतर नकली पाई गई हैं। स्वास्थ्य विभाग ने कुल 62 दवाओं के सैंपल जांच के लिए भेजे थे। कोलकाता स्थित केंद्रीय प्रयोगशाला में भेजे गए सैंपल में से 20 दवाओं की जांच रिपोर्ट आई है। इनमें से 18 दवाएं निम्नस्तरीय पाई गई हैं। ये सभी कैल्शियम कार्बोनेट और विटामिन डी थ्री कंपोजिशन की दवाएं हैं। शेष 42 दवाओं की रिपोर्ट अभी आनी बाकी है। औषधि निरीक्षक कैलाश मुंडा के अनुसार, जिला भंडार गृह से 47 और तरहसी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से 15 दवाइयों के सैंपल फरवरी में जांच के लिए भेजे गए थे। रिपोर्ट आने के बाद इन दवाओं का वितरण रोक दिया गया है।ये दवाएं गुजरात की एक फार्मा कंपनी द्वारा निर्मित हैं, जिन्हें जमशेदपुर के सप्लायर ने पलामू में सप्लाई किया था। सिविल सर्जन अनिल कुमार सिंह ने बताया कि सप्लायर केके फार्मास्यूटिकल ने प्राइवेट लैब की जांच रिपोर्ट दिखाकर दवाओं को सही बताया था। इस पर शक होने के बाद सरकारी लैब में जांच कराई गई।

स्वास्थ्य विभाग ने कंपनी के खिलाफ कार्रवाई के लिए राज्य सरकार को पत्र भेजा है। सिविल सर्जन के अनुसार, निम्नस्तरीय पाई गई दवाओं का वितरण जिले के किसी भी अस्पताल में नहीं किया गया है।

सड़क दुर्घटना में आर्मी के जवान की हुई मौत

देशप्राण संवाददाता

विश्रामपुर (पलामू) : ब्रहमोरिया-गुरहा मुख्य पथ स्थित घघुआ गांव के समीप दो मोटरसाइकिल की आमने सामने की टक्कर में आर्मी के जवान की मौत हो गई। यह घटना रविवार की रात लगभग 9:00 बजे की है। मृतक जवान की पहचान पलामू जिले के चैनपुर थाना क्षेत्र स्थित बरांव गांव निवासी चंद्रधन ठाकुर के पुत्र 34 वर्षीय राजेंद्र कुमार ठाकुर के रूप में हुई है। जो लेह लद्दाख के इलाके में आर्मी में पदस्थापित था।

जानकारी के अनुसार मृतक जवान राजेंद्र कुमार ठाकुर रविवार की रात वह अपने मोटरसाइकिल से रेहला थाना क्षेत्र के तोलरा गांव स्थित अपने ससुराल शादी समारोह में भाग लेने जा रहा था। इसी बीच ससुराल से थोड़ी दूर घघुआ गांव स्थित मुख्य पथ पर एक अन्य मोटरसाइकिल सामने से टक्कर मारी दिया। बताया जाता है कि इस दुर्घटना में सेना का जवान गंभीर रूप से घायल हो गया।

स्थानीय लोगों के द्वारा घटना की जानकारी रेहला थाना को दी गई। वहीं मौके पर पहुंची पुलिस, स्थानीय ग्रामीण व परिजनों के सहयोग से इलाज के लिए विश्रामपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में ले जाया गया। जहां गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल रेफर कर दिया गया। जहां डॉक्टरों ने राजेंद्र कुमार ठाकुर को मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने बताया कि मृतक 11 मार्च को छुट्टी लेकर घर आया था। लेकिन सगे संबंधियों में शादी विवाह या अन्य जरूरी कार्यों को लेकर अपनी छुट्टी का विस्तार लिया था।

साइबर क्राइम नशा अंधविश्वास तथा महिला सशक्तिकरण को लेकर थाना प्रभारी ने किया जन जागरूकता कार्यक्रम

देशप्राण संवाददाता

छतरपुर : छतरपुर महिला थाना प्रभारी मुन्नी ने प्रखंड क्षेत्र के लठेया पिकेट प्रभारी धर्मवीर यादव तथा थाना के महिला आरक्षियों के साथ ग्राम सुशीगंज, लठैया तथा अन्य कई जगहों पर जाकर नशाखोरी महिला सशक्तिकरण साइबर अपराध इत्यादि के बारे जन जागरूकता अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के तहत गांव के कई छात्र छात्राओं और महिलाओ तथा पुरुषो के बीच नशा का दुष्प्रभाव का जानकारी दिया तथा नशा मुक्ति की ओर बढ़ने का अनुरोध किया। साथ ही साईबर अपराध के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए उससे बचने का उपाय बताया।

इस दौरान उन्होंने बताया कि साइबर अपराध के बारे में उसके टोल फ्री नंबर 1930 पर शिकायत दर्ज कर सकते हैं। साथ ही महिला सशक्तिकरण, मोबाइल का सदुपयोग, डायन कुप्रथा जैसे अंधविश्वास एवं बच्चों के खिलाफ हो रहे अपराधों, यौन शोषण, घरेलु हिंसा पर जानकारी देते हुए उससे बचने और अपराधों का विरोध करने का उपाय बताया। इस दौरान उन्होंने उनके समस्याओं को भी सुना। बच्चों को बाल विवाह और नशा से बचाने एवं उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए पढ़ाई पर विशेष ध्यान केंद्रित कराने के लिए प्रोत्साहित किया। बताया कि किसी प्रकार की समस्या होने पर बेझिझक पुलिस का टोल फ्री नंबर 112 संपर्क करने की जानकारी दिया। बताया कि पुलिस के तोल फ्री नंबर पर किसी भी शिकायत की सूचना मिलते ही उस पर त्वरित करवाई जाएगी।

धूमधाम से मनाया गया श्री श्री आनंदमूर्ति जी का 104वां जन्मोत्सव

भव्य शोभायात्रा, साधना, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और भाषायी विविधता में गूंजा आनंद का स्वर

देशप्राण संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : आनंद मार्ग जागृति, नई मुहल्ला में सोमवार को प्रभात रंजन सरकार ह्यश्री श्री आनंदमूर्ति जीह्ल का 104वां जन्मदिवस आनंद पूर्णिमा उत्सव के रूप में पूरे उत्साह, श्रद्धा और भक्ति भाव से मनाया गया। यह शुभ दिन आनंद पूर्णिमा का था, जिस पर 1921 में जमालपुर (बिहार) में उनका जन्म हुआ था।

वरिष्ठ आनंदमार्गी अधिवक्ता लक्ष्मण सिंह ने बताया कि श्री श्री आनंदमूर्ति जी ने मानव मात्र के शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास के लिए तांडव, कोशिकी नृत्य और साधना का मार्ग प्रशस्त करते हुए आनंद मार्ग मिशन की स्थापना की। आज यह मिशन दुनिया के कोने-कोने में समाज के चतुर्दिक विकास हेतु कार्यरत है। सुबह जागृति परिसर में भजन, कीर्तन और सामूहिक साधना के साथ कार्यक्रम की शुरूआत हुई। इसके उपरांत एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जो जागृति से स्टेशन रोड, चर्च रोड, कचहरी चौक, सरकारी बस डिपो, छव मुहान, शदिक चौक होते हुए स्टेशन चौक से पुनः जागृति लौटकर सम्पन्न हुई। जिले भर से आए सैकड़ों आनंदमार्गियों ने इसमें भाग लिया और ₹मानव-मानव एक है, मानव का धर्म एक है₹ जैसे उदात्त नारों के साथ प्रेम, शांति और एकता का संदेश दिया।

कार्यक्रम में कोशिकी नृत्य और तांडव प्रतियोगिता ने विशेष आकर्षण बटोरा। बच्चों के लिए पेंटिंग, क्विज आदि प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं, जिससे पूरा वातावरण आनंदमय हो उठा।

कार्यक्रम के दौरान श्री श्री आनंदमूर्ति जी द्वारा प्रदत्त आनंदवाणी का विभिन्न भाषाओं– मगही, हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, बंगाली, नागपुरी, मैथिली आदि में वाचन किया गया।

एक भावप्रवण वाणी में कहा गया कि उनकी कृपा का एक कण समझ पाने पर जीव-मानस की सारी ग्लानि क्षण भर में दूर हो जाती है। तब भी मनुष्य उनकी कृपा को समझने की चेष्टा नहीं करता। उनकी इस कृपा को समझने का नाम ही तो साधना है। यदि तुम साधना नहीं करते, तो दोष तुम्हारा ही है। अपने सुख-दुख के लिए उस करुणा-सिन्धु परमब्रह्म को दोष मत दो।

इस अवसर पर भुक्ति प्रधान मधेश्वर जी, विश्वनाथ जी, बैजनाथ जी, सरोज, गोपाल, अखिलेश, धीरज जी ,अरविंद, प्रदीप, रामस्वरूप, मणिकांत, दीपक, शंकरसन, सहज प्रिया, रेणु, मधुबाला, शारदा, पूनम ,सुजाता सहित सैकड़ों श्रद्धालु उपस्थित रहे। यह उत्सव न केवल एक आध्यात्मिक आयोजन था, बल्कि मानवता के उत्थान और आत्मविकास के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बना।

परशुराम जन्मोत्सव पर भारत के दुश्मनों के नाश के लिए हुआ हवन

देशप्राण संवाददाता

मेदिनीनगर : राष्ट्रीय परशुराम युवा वाहिनी ने पहलगाम में हुए हिंदू पर्यटकों के नरसंहार के खिलाफ आक्रोश प्रदर्शन कर पाकिस्तान का पूतला दहन किया, वहीं जिम्मेदार संगठन होने के नाते ऐतिहासिक कार्यक्रम को भव्य करने के बजाय भारतवंशीयों की सुख, शांति, समृद्धि की मंगलकामना के लिए श्री परशुराम जन्मोत्सव पर दुष्टों के नाश हेतु विशेष पूजन आयोजित की गई।

हर वर्ष पावन अक्षय तृतीया तिथि पर परमपिता परमेश्वर श्री हरि विष्णु के छठे अवतार, ब्राह्मण शिरोमणि, दुष्टों के नाशक, सनातन धर्म संरक्षक, कालजयी, चिरंजीवी भगवान श्री परशुराम का जन्मजयंती ऐतिहासिक मनाने वाली राष्ट्रीय परशुराम युवा वाहिनी ने पहलगाम हमले के बाद सादे समारोह में पूजन अर्चन हवन एवं प्रसाद वितरण कर जन्मोत्सव मनाया। महादेव भगवान शंकर द्वारा

प्राप्त वरदान के अनुसार कलयुग के अवतार भगवान कल्कि के गुरु बनकर भगवान परशुराम मानव जाति का कल्याण करेंगे, ऐसी मनोकामना की जाएगी। जिनकी अपरंपार महिमा से उनके भक्त अवगत हैं।

राष्ट्रीय परशुराम युवा वाहिनी की झारखंड प्रदेश ईकाई ने परशुराम जयंती पर राष्ट्र को सुरक्षित, सशक्त, समृद्ध बनाने के लिए एकजुट होकर हर घर, हर मंदिर, हर शिवालय एक दीप जलाने का अपील की है साथ ही जय श्री परशुराम नाम का उद्घोष गुंजायमान करने का आह्वान किया है।

प्रदेश अध्यक्ष देवेंद्र तिवारी ने बताया कि भगवान श्री परशुराम का पराक्रम एवं जीवन चरित्र राष्ट्र निर्माण में अनुकरणीय रहा है। परशुराम वंशजों का इतिहास भी चाणक्य से लेकर संत महर्षि ने देश की सेवा में जीवन समर्पित कर दिया है। उसी राह पर राष्ट्रीय परशुराम युवा वाहिनी के पदाधिकारी युवा वाहक धार्मिक एवं सामाजिक कार्य में समर्पित हैं। आने वाला वक्त संगठन का है संगठन की शक्ति कलियुग में कदम कदम पर पड़ेंगी। इस अवसर पर देवेंद्र तिवारी ने विप्रजनों से एकजुट होकर युवा वाहिनी बैनर के नीचे जय श्री परशुराम का उद्घोष करने का आह्वान किया।

टेस्ट क्रिकेट से एक दिग्गज की विदाई

यादों की गठरी, विराट रिकॉर्ड्स की चमक

नयी दिल्ली, 12 मई (हि.स.) : भारतीय क्रिकेट टीम के वरिष्ठ खिलाड़ी विराट कोहली ने सोमवार को टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी, जिससे लंबे फॉर्मेट में उनके अपार योगदान और नेतृत्व की गाथा पर विराम लग गया। 36 वर्षीय कोहली का यह फैसला उनके 14 साल लंबे टेस्ट करियर का अंत है, जिसमें उन्होंने कठिन हालातों में शानदार प्रदर्शन करते हुए खुद को एक महान बल्लेबाज और कप्तान के रूप में स्थापित किया। कोहली ने सोमवार को अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर इस बात की जानकारी दी कि वह अब टेस्ट क्रिकेट नहीं खेलेंगे।

एक प्रेरणादायक करियर

विराट कोहली का करियर संघर्षों और कामयाबियों की कहानी रहा है–चाहे वह 2014 में ऑस्ट्रेलिया में मिशेल जॉनसन की अगुवाई वाले तेज गेंदबाजी आक्रमण के खिलाफ 692 रन बनाना हो या फिर 2018 में इंग्लैंड में रिडेंप्शन सीरीज खेलना हो। सेंचुरियन, एडिलेड, पर्थ, मेलबर्न, एजबेस्टन जैसे मैदानों पर उनके शतक हमेशा याद रखे जाएंगे। टेस्ट क्रिकेट में कोहली का योगदान हमेशा भारतीय क्रिकेट के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा।

विराट कोहली का यादगार टेस्ट सफर

- कोहली ने अपने 14 साल के टेस्ट करियर में 123 मैच खेले और 46.85 की औसत से 9,230 रन बनाए, जिसमें 30 शतक और 31 अर्धशतक शामिल हैं। उन्होंने 7 दोहरे शतक भी जड़े, जिसमें सर्वोच्च स्कोर नाबाद 254 रहा। वह भारत की ओर से टेस्ट में चौथे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। उनसे आगे सिर्फ महान खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर (15,921 रन), राहुल द्रविड़ (13,288) और सुनील गावस्कर (10,122) हैं।
- कोहली ने 2011 में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट डेब्यू किया था। हालांकि शुरूआती दौरा कुछ खास नहीं रहा, लेकिन 2012 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एडिलेड में 116 रनों की पारी ने उनकी प्रतिभा को पूरी दुनिया में पहचान दिलाई।
- 2011 से 2015 के बीच उन्होंने 41 टेस्ट में 2,994 रन बनाए, जिसमें 11 शतक शामिल रहे। खास बात यह रही कि 2014-15 में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर कप्तान बनने के साथ ही उन्होंने 600 से अधिक रन बनाए, जिसमें चार शतक थे। यह वही समय था जब इंग्लैंड दौरे पर बुरी तरह फ्लॉप होने के बाद उन्होंने वापसी की और अपने करियर को एक नया मोड़ दिया।
- 2016 से 2019 तक कोहली ने टेस्ट क्रिकेट में सर्वश्रेष्ठ दौर बिताया। इस दौरान उन्होंने 43 टेस्ट में 4,208 रन बनाए, जिनमें 16 शतक, 10 अर्धशतक और 7 दोहरे शतक शामिल थे। यह दौर उनकी बल्लेबाजी के स्वर्णिम वर्षों में से एक माना जाता है।
- कोहली ने इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया में शतक जमाकर साबित किया कि वह सिर्फ एशिया के नहीं, बल्कि दुनिया के हर कोने में रन बना सकते हैं। 2018 इंग्लैंड दौरा इस बात का गवाह बना, जब उन्होंने 593 रन बनाए और प्लेयर ऑफ द सीरीज बने। हालांकि 2020 के बाद उनका प्रदर्शन अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर सका। इस दशक में उन्होंने 39 टेस्ट में केवल 2,028 रन बनाए, औसत 30.72 रहा। 2023 में उनका प्रदर्शन बेहतर रहा, जिसमें 671 रन बनाए, लेकिन 2024 फिर निराशाजनक रहा और उन्होंने 10 टेस्ट में केवल 382 रन बनाए। उनका आखिरी टेस्ट शतक पर्थ में आया, जबकि भारत में आखिरी टेस्ट शतक 2023 में अहमदाबाद में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ रहा।

भारत के सबसे सफल टेस्ट कप्तान विराट

- कोहली ने 2014 में जब भारत की कप्तानी संभाली, तब टीम आईसीसी रैंकिंग में 8वें स्थान पर थी लेकिन उनके नेतृत्व में भारत ने आक्रामक क्रिकेट खेला और जल्द ही नंबर एक टीम बन गई। उन्होंने श्रीलंका में 22 साल बाद टेस्ट सीरीज जीत दिलाई, वेस्टइंडीज में ऐतिहासिक जीत दिलाई और 2018-19 में ऑस्ट्रेलिया में पहली बार टेस्ट सीरीज जीतने वाली भारतीय टीम के कप्तान बने।
- कोहली की कप्तानी में भारत ने 68 टेस्ट में से 40 जीते, जिससे वह भारत के सबसे सफल टेस्ट कप्तान बने। दुनिया भर में सिर्फ ग्रेम स्मिथ (53 जीत), रिकी पोंटिंग (48) और स्टीव वॉ (41) उनसे आगे हैं।
- कोहली को भारतीय क्रिकेट में फिटनेस और तेज गेंदबाजी संस्कृति की क्रांति का श्रेय भी जाता है। उनके नेतृत्व में भारत ने लगातार तीन साल टेस्ट चैंपियनशिप की मेस जीती और 2021 में डब्ल्यूटीसी फाइनल तक पहुंचा।

एफआईएच प्रो लीग 2024-25: यूरोपीय चरण के लिए 24 सदस्यीय भारतीय महिला हॉकी टीम घोषित

सलीमा टेटे करेंगी कप्तानी, नवनीत कौर को बनाया उपकप्तान

नई दिल्ली, 12 मई (हि.स.) : हॉकी इंडिया ने एफआईएच प्रो लीग 2024-25 के यूरोपीय चरण के लिए 24 सदस्यीय भारतीय महिला हॉकी टीम की घोषणा कर दी है। यह चरण 14 से 29 जून तक लंदन, एंटवर्प और बर्लिन में आयोजित होगा, जिसमें भारत चार प्रतिभागी टीमों– ऑस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना, बेल्जियम और चीन के खिलाफ दो-दो मैच खेलेगा। भारत अपना अभियान 14 जून को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मुकाबले से शुरू करेगा। टीम की कमान मिडफील्ड की स्टार खिलाड़ी सलीमा टेटे को सौंपी गई है, जबकि फॉरवर्ड लाइन की अनुभवी खिलाड़ी नवनीत कौर को उपकप्तान बनाया गया है।

भारतीय टीम ने प्रो लीग के घरेलू चरण में दो जीत और दो ड्रॉ के साथ कुल नौ अंक हासिल किए और अंकतालिका में छठे स्थान पर रही। इंग्लैंड के खिलाफ 3-2 की जीत और एक ड्रॉ से शानदार शुरूआत की, लेकिन इसके बाद स्पेन से दो और जर्मनी से एक हार मिली। हालांकि, जर्मनी के खिलाफ 1-0 की वापसी जीत ने टीम का मनोबल बढ़ाया।

24 सदस्यीय भारतीय महिला हॉकी टीम

गोलकीपर : सविता, बिचू देवी खारिबम।
डिफेंडर्स : सुशीला चानू पुखरंबम, ज्योति, सुमन देवी थौडम, ज्योति सिंह, ईशिका चौधरी, ज्योति छेत्री,
मिडफील्डर्स : वैष्णवी विट्ठल फालके, सुजाता कुजुर, मनीषा चौहान, नेहा।
मिडफील्डरः सलीमा टेटे (कप्तान), लालरेमसिआमी, शर्मिला देवी, सुनेलीता टोप्पो, महिमा टेटे।
फॉरवर्ड : दीपिका, नवनीत कौर (उपकप्तान), दीपिका सोरेन, बलजीत कौर, रुतुजा दडासो पिसाल, ब्यूटी डुंगडुंग, साक्षी राणा।
स्टैंडबाय : बंसरि सोलंकी (गोलकीपर), अजमीना कुजुर (डिफेंडर)।

विश्व की नंबर 1 टीम नीदरलैंड्स के खिलाफ अंतिम दो मैचों में भारत ने दमदार जज्बा दिखाया। पहले मुकाबले में भले ही 2-4 से हार मिली, लेकिन भारत ने 13 पेनल्टी कॉर्नर हासिल कर डच टीम को कड़ी टक्कर दी। आखिरी मैच में भारत ने नीदरलैंड्स को 2-2 से ड्रॉ पर रोका और शूटआउट में जीत हासिल कर बोनस अंक भी अर्जित किया।

भारतीय महिला हॉकी टीम के मुख्य कोच हरेंद्र सिंह ने कहा, हमने अनुभव और युवा जोश का संतुलन साधते हुए यह टीम चुनी है। यूरोपीय चरण प्रो लीग का अहम हिस्सा है और यहां दुनिया की टॉप टीमों से कड़ी चुनौती मिलेगी।

उन्होंने आगे कहा, भुवनेश्वर में हुए मुकाबलों से हमें अपनी ताकत और कमजोरियों का आकलन करने का मौका मिला है। टीम ने हालिया कैंप और ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान बेहतरीन प्रतिबद्धता दिखाई है। अब लक्ष्य यही है कि हर मैच में खुद को बेहतर करते हुए टीम को आगे बढ़ाएं।

झारखंड की शेरनियों ने जूनियर नेशनल कबड्डी में दिलाया ब्रॉन्ज

तेलंगाना को दी 29 अंकों से करारी शिकस्त दी

वार्धा (महाराष्ट्र), 12 मई (संवाददाता) : 51वीं जूनियर नेशनल कबड्डी चैंपियनशिप में झारखंड की बेटियों ने पूरे देश को दिखा दिया कि जुनून और मेहनत के सामने कोई भी दीवार टिक नहीं सकती। महाराष्ट्र के वार्धा में आयोजित इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में झारखंड की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। खास बात यह रही कि कांस्य पदक के लिए खेले गए मुकाबले में झारखंड ने तेलंगाना को 29 अंकों के बड़े अंतर से हराकर अपनी ताकत का लोहा मनवाया।

इस ऐतिहासिक जीत के पीछे टीम की अथक मेहनत और समर्पण रहा, जिसका नेतृत्व किया कोच शिव सागर और मैनेजर दिव्यांश राज ने। इन दोनों की रणनीति और खिलाड़ियों का उत्साह ही था, जिसने टीम को विजय पथ पर आगे बढ़ाया।

टीम की इस उपलब्धि पर झारखंड राज्य कबड्डी संघ के सचिव संजय कुमार झा और अध्यक्ष तपन कुमार राउत ने पूरी टीम को बधाई दी और उनका उत्साहवर्धन किया। संघ के अन्य अधिकारियों और खेल प्रेमियों ने भी खिलाड़ियों को ढेर सारी शुभकामनाएं दीं।

क्रिस्टियानो रोनाल्डो की टीम प्रो लीग की खिताबी दौड़ से बाहर

नई दिल्ली, 12 मई (हि.स.) : क्रिस्टियानो रोनाल्डो की अगुवाई वाली अल नास्त्र टीम को सऊदी प्रो लीग खिताब के लिए अब अगले सीजन तक इंतजार करना होगा। रविवार को मिली ताजा हार के बाद टीम 2024-25 सीजन के खिताबी दौड़ से बाहर हो गई है। अब एएफसी चैंपियंस लीग एलीट में क्वालीफाई करना ही उसका प्रमुख लक्ष्य रह गया है।

अल इत्तिहाद की जीत ने तोड़ी अल नास्त्र की उम्मीदें

लीग में टॉप पर चल रही अल इत्तिहाद ने करीम बेंजेमा के दो गोलों की मदद से अल फैहा को 3-0 से हराकर अपने शीर्ष स्थान को और मजबूत कर लिया। 31 मैचों के बाद इत्तिहाद के 74 अंक हो चुके हैं, जबकि अल नास्त्र अधिकतम 72 अंक ही हासिल कर सकती है। इस तरह वह खिताब की दौड़ से बाहर हो गई है।

गौरतलब है कि अल नास्त्र ने पिछली बार 2018-19 सीजन में सऊदी प्रो लीग खिताब जीता था। इसके बाद अल हिलाल ने चार बार और इत्तिहाद ने एक बार खिताब पर कब्जा जमाया है।

चैंपियंस लीग एलीट में कैसे पहुंचेगी अल नास्त्र?

2024-25 एएफसी टूर्नामेंट के अनुसार, सऊदी प्रो लीग की शीर्ष तीन टीमें एएफसी चैंपियंस लीग एलीट के लिए क्वालीफाई करेंगी। इसके अलावा, किंग्स कप का विजेता एएफसी चैंपियंस लीग टू (एसीएल 2) में जाएगा, जो एशिया की द्वितीय श्रेणी की प्रतियोगिता है। अगर किंग्स कप विजेता पहले से लीग की टॉप-3 में है, तो चौथे स्थान की टीम को एसीएल 2 का टिकट मिलेगा।

इस साल के किंग्स कप फाइनल में पहुंची अल इत्तिहाद और अल कदीसिया दोनों ही लीग की टॉप तीन की दौड़ में हैं। ऐसे में अगर इनमें से कोई एक कप जीतता है और लीग में भी टॉप-3 में रहता है, तो चौथे स्थान वाली टीम एसीएल 2 में पहुंचेगी।

अभी अल नास्त्र अंक तालिका में पांचवें स्थान पर है। टीम को एएफसी चैंपियंस लीग एलीट में जगह बनाने के लिए अपने बाकी बचे चारों मुकाबले जीतने होंगे और साथ ही टॉप टीमों के नतीजे भी उसके पक्ष में आने चाहिए।

नीरज चोपड़ा समेत चार भारतीय एथलीट्स दोहा डायमंड लीग में लेंगे हिस्सा

नई दिल्ली, 12 मई (हि.स.) : भारत के स्टार जैवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा 16 मई को दोहा में होने वाली प्रतिष्ठित डायमंड लीग मीटिंग में तीन अन्य भारतीय एथलीट्स के साथ हिस्सा लेंगे। यह पहली बार होगा जब डायमंड लीग के किसी एक इवेंट में भारत की तरफ से चार एथलीट्स भाग लेंगे।

नीरज चोपड़ा 2023 में दोहा डायमंड लीग का खिताब जीत चुके हैं, जहां उन्होंने 88.67 मीटर भाला फेंका था। वहीं, 2024 में वह 88.36 मीटर की थ्रो के साथ

दूसरे स्थान पर रहे थे। इस बार भी उनसे गोल्डन थ्रो की उम्मीद की जा रही है।

नीरज के साथ पुरुषों की जैवलिन थ्रो स्पर्धा में किशोर जेना भी नजर आएंगे। जेना ने 2024 में भी हिस्सा लिया था और 76.31 मीटर की थ्रो के साथ नौवें स्थान पर रहे थे। इस बार वह अपने प्रदर्शन में सुधार की कोशिश करेंगे।

अन्य दो भारतीय एथलीट्स का ट्रैक पर होगा दमदार प्रदर्शन

इस बार ट्रैक इवेंट्स में भी भारत की दमदार मौजूदगी देखने को मिलेगी। पुरुषों की 5000 मीटर दौड़ में राष्ट्रीय रिकॉर्डधारी गुलवीर सिंह अपना डायमंड लीग डेब्यू करने जा रहे हैं। वहीं, महिलाओं की 3000 मीटर स्टीपलचेज में पारुल चौधरी उतरेंगी, जो इस इवेंट की भारतीय रिकॉर्डधारक हैं।

नीरज और जेना को इस बार सशक्त प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा। मैदान में दो बार के वर्ल्ड चैंपियन एंडरसन पीटर्स (ग्रेनेडा), 2024 के विजेता याकुब वाडलेच (चेक गणराज्य), जूलियन वेबर और मैक्स डेनिंग (जर्मनी), जूलियस येगो (केन्या) और रोडरिक डीन (जापान) जैसे दिग्गज होंगे।

रियल मैड्रिड को हरा ला लीगा खिताब के करीब पहुंचा बार्सिलोना

4-3 की शानदार जीत, राफिन्हा ने दागे दो गोल, मबाप्पे की हैट्रिक बेकार

बार्सिलोना, 12 मई (हि.स.) : ला लीगा में रविवार को खेले गए एल क्लासिको मुकाबले में बार्सिलोना ने रियल मैड्रिड को 4-3 से हराकर खिताब की ओर मजबूत कदम बढ़ा दिए। इस जीत के साथ बार्सिलोना ने तालिका में मैड्रिड पर सात अंकों की बढ़त बना ली है और अब सिर्फ तीन मैच बाकी हैं।

मबाप्पे की हैट्रिक पर भारी पड़ा बार्सिलोना का जज्बा

रियल मैड्रिड की ओर से किलियन मबाप्पे ने शानदार प्रदर्शन करते हुए हैट्रिक लगाई, लेकिन बार्सिलोना की तरफ से राफिन्हा के दो गोल और लामिन यमाल व एरिक गार्सिया के एक-एक गोल ने

मैच का पासा पलट दिया।

चैंपियंस लीग से बाहर होने के बाद यह मैच बार्सिलोना के लिए ह्यकरो या मरोह्ण जैसा था, लेकिन कोच हैंसी फ्लिक की टीम ने शानदार वापसी करते हुए चौथे क्लासिको में भी जीत दर्ज की।

मबाप्पे ने दिलाई शुरुआती बढ़त

रियल मैड्रिड ने दमदार शुरुआत की और महज चौथे मिनट में मबाप्पे ने पेनल्टी पर गोल करके टीम को बढ़त दिला दी। यह पेनल्टी तब मिली जब गोलकीपर वोज्शेच शेचनी ने मबाप्पे को गिराया, हालांकि बार्सिलोना ने ऑफसाइड की मांग की थी।

14वें मिनट में मबाप्पे ने दूसरा गोल किया, जिससे मैड्रिड ने 2-0 की बढ़त ले ली। यह उनका 26वां लीग गोल था, जिससे उन्होंने रॉबर्ट लेवांडोव्स्की को पीछे छोड़ते हुए टॉप स्कोरर बन गए।

राफिन्हा की जोड़ी और यमाल का जलवा

मैड्रिड की बढ़त ज्यादा देर टिक नहीं सकी। राफिन्हा ने दो मिनट बाद ही गोल दागा, फिर पहले हाफ के अंतिम क्षणों में उन्होंने लुकास वाजक्वेज से गेंद छीनकर दूसरा गोल भी कर डाला। लामिन यमाल ने भी मैच में शानदार खेल दिखाया। उन्होंने एक गोल भी किया, जबकि एक हैडर पर राफिन्हा को शानदार क्रॉस दिया जो गोल में तब्दील नहीं हो सका।

दूसरे हाफ में मबाप्पे ने विनीसियस जूनियर की सहायता से तीसरा गोल करते हुए हैट्रिक पूरी की, लेकिन बार्सिलोना की डिफेंस और मिडफील्ड ने इसके बाद कोई बड़ी चूक नहीं की।

नॉर्वे चेस में समान इनामी राशि से महिलाओं को खेल अपनाने की प्रेरणा मिलती हैः जू वेनजून

स्टावेंगर (नॉर्वे), 12 मई (हि.स.) : नॉर्वे चेस वूमेन 2025 टूर्नामेंट के दूसरे संस्करण को लेकर मौजूदा चैंपियन जू वेनजून ने अपनी उत्सुकता और उम्मीदें साझा की हैं। यह टूर्नामेंट 26 मई से 6 जून के बीच स्टावेंगर सिटी के फिनान्सपार्कन (एसआर-बैंक) में आयोजित होगा।

चीनी ग्रैंडमास्टर जू वेनजून ने कहा, मैं नॉर्वे चेस वूमेन 2025 में हिस्सा लेने को लेकर बहुत रोमांचित हूं। यह मेरा इस टूर्नामेंट में दूसरा अनुभव होगा। इस बार कई मजबूत शतरंज खिलाड़ी हिस्सा ले रही हैं। मुझे लगता है कि अब लोग अमार्गेडन और टाइम कंट्रोल फॉर्मेट से ज्यादा परिचित हैं, जिससे टूर्नामेंट और भी रोमांचक होगा।

जू वेनजून, जिन्हें मौजूदा समय में शतरंज की निर्विवाद महारानी कहा जाता है, इस साल की शुरूआत में अपना लगातार पांचवां वर्ल्ड चैंपियनशिप खिताब जीत चुकी हैं। उन्होंने सात साल की उम्र में शतरंज खेलना शुरू किया, 2004 में प्रोफेशनल बनीं, 2014 में ग्रैंडमास्टर की उपाधि पाई और 2018 में पहली बार विश्व चैंपियन बनीं। तब से लेकर अब तक वह महिलाओं की क्लासिकल शतरंज में अजेय रही हैं। वह वर्तमान वूमेन्स वर्ल्ड ब्लिट्ज चैंपियन भी हैं और दो बार की वर्ल्ड रैपिड चैंपियन भी। अपनी यात्रा को याद करते हुए 34 वर्षीय वेनजून ने कहा, हर मुकाबला मेरे लिए एक यादगार और अनोखा अनुभव होता है। मेरा मानना है कि हर खेल को एक-एक कर फोकस के साथ खेलना चाहिए, कड़ी मेहनत करनी चाहिए और टीमवर्क जरूरी है। जब मैं खेल रही होती हूं, तो सबसे अच्छा होता है सिर्फ शतरंज पर ध्यान देना और मैच का आनंद लेना। पिछले साल जू वेनजून ने नॉर्वे चेस वूमेन के पहले संस्करण का खिताब जीतकर इतिहास रच दिया था। यह टूर्नामेंट महिलाओं के लिए समान इनामी राशि देने वाला पहला टूर्नामेंट बना, जिससे शतरंज के भविष्य की दिशा में एक अहम कदम माना गया।

वेनजून ने टूर्नामेंट आयोजकों की सराहना करते हुए कहा, मुझे लगता है कि यह एक बड़ी सफलता है और बेहद प्रेरणादायक भी सिर्फ शतरंज में ही नहीं, बल्कि पूरे खेल जगत में महिलाओं के लिए।

मातृ दिवस उत्सव-दैवीय शक्ति और भावनात्मक क्षणों का अद्भुत संगम

देशप्राण संवाददाता

पाकुड़ : दिल्ली पब्लिक स्कूल पाकुड़ में मातृ दिवस के अवसर पर मातृ- शक्ति के प्रति समर्पण, नैतिक मूल्यों को बढ़ाने ,उनके द्वारा किए जाने वाले अथक प्रयासों ब त्याग एवं समस्त मातृशक्तियों को आभार प्रकट करने के उदेश्य से एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत विद्यालय के निदेशक अरुणेंद्र कुमार, प्रधानाचार्य जे.के.शर्मा एवं कई माताओं ने सामूहिक रूप से दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना से हुई। इसके बाद विद्यालय द्वारा संचालित तानसेन क्लब के तत्वाधान में स्कूल के बच्चों ने ऑर्केस्ट्रा के विभिन्न वाद्य यंत्रों पर शानदार प्रस्तुति दी। प्रधानाध्यापक जे के. शर्मा ने अपने सम्बोधन में

माताओं के महत्व और उनके प्रति सम्मान को व्यक्त करते हुए माँ को दुनिया की सबसे सर्वश्रेष्ठ कृति बताई। निदेशक अरुणेंद्र कुमार ने माताओं के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करते हुए कहा कि 'माताएं हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने कहा कि मां एक दैवीय शक्ति हैं, जिसे आज तक सम्पूर्ण रूप से कोई भी परिभाषित नही कर पाया। छात्रों ने समूह गीत 'मेरी मां' और 'ये तो सच है कि भगवान है' प्रस्तुत कर शमां बाँध दिया। छोटे छात्रों ने सामूहिक नृत्य में भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। ततपश्चात विद्यालय के अंतर सदनीय नृत्य नाटिका प्रतियोगिता में चारों सदनों - एडवेंचर, कैलिबर, चैलेंजर और डिस्कवरी हाउस के बच्चों ने 'मां' विषय वस्तु पर आधारित नृत्य प्रतियोगिता में भाग लिया और अपनी अद्भुत प्रस्तुतियों से दर्शकों का मन मोह लिया। प्रतियोगिता में एडवेंचर और कैलिबर सदन प्रथम, डिस्कवरी सदन द्वितीय तथा चैलेंजर सदन ने तृतीय स्थान प्राप्त किए।

अंत में, प्रधानाचार्य जे के शर्मा ने पहलगांव में अकारण आतंकी हमले में मारे गए दिवंगतों की आत्मा की शांति हेतु सभागार में उपस्थित सभी अविभावकों, शिक्षकगणों एवं बच्चों ने दो मिनटों का मौन धारण करके अपनी श्रद्धांजलि प्रेषित की। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ हुआ। मातृ दिवस कार्यक्रम एक भावुक कर देने वाला यादगार और भावनात्मक क्षण था, जिसे सभी लंबे समय तक याद रखेंगे।

संक्षिप्त समाचार

वन विभाग ने लकड़ी का चौखट लदे पिकअप वैन को किया जब्त

लिट्टीपाड़ा (पाकुड़) 12 मई : थाना क्षेत्र के साहिबगंज गोविंदपुर एक्सप्रेस हाइवे पर सोनाधनी गांव के समीप वन विभाग ने सोमवार को एक पिकप भेन लकड़ी का चौखट व तख्ता को जब्त किया है. वन गार्ड अनुपम कुमार यादव ने बताया कि सोनाधनी के समीप पिकअप भैन संख्या बीआर11जी एफ4148 तेज गति से अमडापाड़ा की ओर जा रहे पिकप वेन को रोक जांच करने पर अवैध रूप से सैकड़ों पीस तकता व चौखट लोड था. जिसका कागजात चालक से दिखाने को कहने पर,उन्होंने कोई कागज नही दिखाया. और चालक ने बताया यह लकड़ी बिजिआर कोल कंपनी का है. बिहार के कटिहार से ला रहे जिसे बिजिआर कोल कंपनी अमाडापाड़ा ले जा रहे है.वन कर्मियों ने वाहन को जप्त कर लिट्टीपाड़ा वन विभाग परिसर में रखा है और चालक को भी गिरफ्तार कर रखा गया है.वन गार्ड अनुपम कुमार यादव ने बताया कि चालक पर वन अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर जेल भेजा जाएगा.साथ ही वाहन मालिक पर भी मामला दर्ज किया जाएगा।

बेमौसम बारिश से लोगों को मिली गर्मी से राहत

पाकुड़, 12 मई : सोमवार को पाकुड़ सहित जिले के सभी प्रखंडों में सूर्यदेव की प्रचंडता ने धरती को तपाया, तापमान 40. डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। दिनभर की तपिश और शाम की उमस ने जनजीवन को कष्टप्रद बनाया, लेकिन दोपहर बाद चार बजे मेघों की कृपा से अमड़ापाडा प्रखंड में एक आधे घंटे की बारिश ने लोगों को राहत दी। प्रखंड में बे मौसम बारिश से लोगों को गर्मी से बड़ी राहत मिली है। इस मई महीने गर्मी से लोगों को परेशान हो रहे थे अचानक बादल में करवट लिया और लोगों को गर्मी से राहत मिली है।

खबर कोना

जिला प्रशासन के निर्देशों की अनदेखी को लेकर पुलिस ने किया आठ हाइवा जब्त

हिरणपुर (पाकुड़): विभागीय निर्देशों की अवहेलना करते हुए परिवहन को लेकर सोमवार को पुलिस ने आठ खाली कोयला हाइवा को जब्त किया गया। सभी हाइवा पाकुड़ रेलवे साइडिंग में कोयला उतारकर हिरणपुर के रास्ते अमड़ापाड़ा की ओर जा रहा था कि पुलिस ने सभी हाइवा को जब्त किया। बताते चले कि प्रशासन के द्वारा खाली कोयला हाइवा की हिरणपुर के रास्ते परिचालन को लेकर रात 11 बजे से सुबह छह बजे तक कि समयावधि सुनिश्चित की गई है। इसके बावजूद हाइवा चालको की मनमानी चरम पर है। जो सरकारी निदेशों को धता बताते हुए निर्दिष्ट समय को ताक में रख हाइवा की परिचालन की जा रही है। प्रशासन द्वारा बाजार क्षेत्र में निरन्तर हो रहे सड़क जाम की स्थिति को देखते हुए दिन को नो इंट्री लगाया गया है। इसके बावजूद भारी वाहनों का परिचालन जारी है। इसको लेकर बीते दिनों सड़क सुरक्षा अभियान के तहत 11 खाली कोयला हाइवा के ऊपर हजारो की आर्थिक जुमार्ना लगाया गया था। पर अभी तक इस पर किसी प्रकार का अंकुश नही लग पाया है। वही प्रशासन ने भी साफ संकेत दे दिया है कि नियम तोड़ने वालों को किसी भी हालात में बख्शा नही जाएगा। उधर मोहनपुर , डांगापाड़ा के रास्ते भी दिन व शाम को खाली कोयला हाइवा की परिचालन की जा रही है। जहां स्थानीय लोगो ने भी इसको लेकर विरोध जताया है। आये दिन हाइवा की तेज गति से हो रहे दुर्घटनाओं को लेकर लोग काफी भयाक्रांत है। इस पर कड़ी कार्रवाई होना आवश्यक है। इस सम्बंध में थाना प्रभारी गोपाल कुमार महतो ने बताया कि जब्त हाइवा को लेकर आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। नियमो की अनदेखी बर्दास्त नही की जाएगी।

बसंतराय में धड़ल्ले से वाहनों में हो रही ओवरलोडिंग, प्रशासन मौन

गोड्डा : बसंतराय की सड़कों पर ओवरलोड वाहनों के संचालन पर खाद आपूर्ति विभाग के अधिकारियों की चुप्पी से किसी बड़े खतरे की संभावना बन गई है। मालूम हो कि प्रखंड क्षेत्र के मेदनीचक एफसीआई गोदाम से क्षमता से दोगुना लोड लेकर यमराज की तरह सड़क पर वाहनों की आवागमन से आम लोगों की परेशानी बढ़ गई है वहीं दूसरी तरफ प्रखंड के विभिन्न सड़कों पर दौड़ते इन वाहनों द्वारा यातायात नियमों की सरे आम धज्जी उड़ाई जा रही है बाबजूद विभाग यातायात नियमों का पालन कराने में अक्षम साबित हो रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि जब संबंधित विभाग के अधिकारी इतनी सुस्ती बरत रहे हैं तो अन्य क्षेत्र की कल्पना की जा सकती है। ऐसे अधिकारियों की उदासीनता के कारण क्षमता से अधिक माल लदे होने के कारण प्रखंड वासियों की जान परेशानी में आ जाती है। सुबह होते ही सड़कों पर ओवरलोड ट्रैक्टर का काफिला शुरू हो जाता है जहां लोग ओवरलोड वाहन को देखकर सड़क दुर्घटना और जाम की समस्या को लेकर सशंकित हो जाते हैं। बताते हैं कि नियम के अनुसार एक ट्रैक्टर पर अधिकतम 40 क्विंटल निर्धारित क्षमता है लेकिन यहां 50 से 60 क्विंटल तक एक ट्रैक्टर पर ढुलाई किया जाता है। ओवरलोड के इस खेल पर ना तो संबंधित विभाग के अधिकारी ध्यान देते हैं और ना ही प्रखंड के अन्य अधिकारी संज्ञान लेते हैं। सोमवार को सुबह से लेकर शाम तक प्रखंड मुख्यालय स्थित सदर बाजार में अनाज लदे ओवरलोड वाहनों का काफिला का संचालन धड़ल्ले से होते देखा गया। ऐसे में तमाम बातों को नजर अंदाज कर ओवरलोड वाहन संचालक मुनाफा के लिए नियम कानून की धज्जियां उड़ा रहे हैं जिसे देखने वाला कोई नहीं है।

बीडीओ सह सीओ ने विभिन्न पंचायत के विकास योजनाओं का किया निरीक्षण

देशप्राण संवाददाता

साहिबगंज : राजमहल प्रखंड विकास पदाधिकारी- सह- अंचल अधिकारी मो. यूसुफ ने राजमहल प्रखंड के पंचायत कसवा, लालमाटी एवं खुटहरी का दौरा कर ग्रामीण विकास विभाग की विभिन्न योजनाओं का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पंचायत कसवा और लालमाटी में अबुआ आवास योजना के अंतर्गत लंबित आवास निर्माण कार्यों की समीक्षा की गई। प्रखंड विकास पदाधिकारी ने लाभुकों से व्यक्तिगत रूप से बातचीत की और निर्देश दिया कि वे जल्द से जल्द आवास निर्माण कार्य पूर्ण करें। साथ ही पंचायत सचिव राकेश कुमार को निर्देशित किया गया कि दो दिनों के भीतर सभी पात्र लाभुकों को कार्य की प्रगति

के अनुसार अगली किस्त का भुगतान सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि कार्य में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इसके अलावा पंचायत खुटहरी में मनरेगा अंतर्गत संचालित बिरसा सिंचाई कूप संवर्धन योजना एवं बिरसा हरित ग्राम योजना का भी निरीक्षण किया गया। बीडीओ ने इस वर्ष चयनित लाभुकों को गड्ढा खुदाई के पश्चात घेराबंदी शीघ्र पूर्ण करने का निर्देश दिया। साथ ही उन्होंने रोजगार सेवक को निर्देशित किया कि आवास योजना के अंतर्गत कार्य कर रहे लाभुकों को मनरेगा मद से मिलने वाली मजदूरी का भुगतान समय पर सुनिश्चित किया जाए। निरीक्षण के दौरान बीपीओ गगन बापू, आवास कोऑर्डिनेटर रविकांत रवि, पंचायत सचिव सिराजुल हक, राकेश कुमार, राहुल कुमार सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।

लबदा में आग लगने से हजारों का पुआल जलकर राख

देशप्राण संवाददाता

बरहरवा (साहिबगंज) : बरहरवा नगर पंचायत अंतर्गत लबदा ग्राम में सोमवार को दोपहर छत पर रखे पुआल के पल्ले में अचानक आग लग जाने से अफरा तफरी का माहौल हो गया। वहीं आनन फानन में स्थानीय लोगों की मदद से बोरिंग के पानी के माध्यम आग पर काबू पाया गया।

जानकारी के मुताबिक लबदा ग्राम निवासी गोपाल महतो पिता चिंतामणि महतो के पुआल के पल्ले में सोमवार को दोपहर अचानक आगे की लपटें उठने लगी, जिसे देख लोगों में अफरा तफरी का माहौल हो गया और आनन फानन में बोरिंग के पानी के माध्यम लोगों के द्वारा आग पर काबू पाया गया। बता दे कि आग अपना विकराल रूप धारण करता, इससे पहले ही लोगों की नजर पड़ गई और पुआला पल्ला के अलावा किसी अन्य को नुकसान नहीं पहुंचा पाया। हालांकि आग कैसे लगी, इसका जानकारी किसी के द्वारा नहीं दी जा सकी, लेकिन लोगों ने आशंका व्यक्त किया है कि पास ही मौजूद शादी समारोह के टेंट खोलने वाला मजदूर के द्वारा बीडी या सिगरेट पीकर फेंका गया होगा, जिससे आग लगी है।

उक्त आगलगी से किसान गोपाल महतो का हजारों का नुकसान हो गया ।उन्होंने बताया कि उक्त पुआल सालभर मवेशी को खिलाने के लिए रखे थे, जो पूरी तरह नष्ट हो गया, पुआल का कुछ अंश बचा भी है जो अब मवेशी ग्रहण नहीं करेगा।

सरस्वती विद्या मंदिर में संकुल प्रमुखों एवं संयोजकों की एक दिवसीय बैठक सम्पन्न

रजरप्पा : रजरप्पा स्थित सरस्वती विद्या मंदिर में सोमवार को विद्या विकास समिति, झारखंड के तत्वावधान में संकुल प्रमुख एवं संयोजकों की एक दिवसीय महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में झारखंड प्रांत के विभिन्न क्षेत्रों से आए कुल 39 संकुल प्रमुखों एवं संयोजकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विद्या भारती के क्षेत्रीय मंत्री रामअवतार नारसरिया, विद्या विकास समिति के प्रदेश सचिव नकुल कुमार शर्मा, प्रदेश मंत्री डॉ. ब्रजेश कुमार एवं प्रांतीय समिति सदस्य डॉ. भारती प्रसाद द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया गया। अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्र भेंट कर किया गया। विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

उद्घाटन सत्र में प्राचार्य उमेश प्रसाद ने अतिथियों का परिचय कराया। कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए प्रदेश सचिव नकुल कुमार शर्मा ने संगठन की रीति-नीति के अनुरूप कार्यों की समीक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। तत्पश्चात उत्तर-पूर्व क्षेत्र के क्षेत्रीय मंत्री रामअवतार नारसरिया ने बुद्ध पूर्णिमा एवं अंतरराष्ट्रीय नर्स डे की शुभकामनाएं देते हुए नई शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सभी संकुलों के विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं की पूर्ति आवश्यक है। साथ ही शिक्षकों के लिए समय-समय पर अपग्रेडिंग असेस्मेंट की व्यवस्था की जानी चाहिए।

विद्यालय प्रबंधकारिणी समितियों की सक्रियता तथा उनकी कार्यक्षमता का मूल्यांकन भी समय-समय पर आवश्यक है। उन्होंने विद्यालयों को सरकारी तंत्र से जोड़ने पर भी बल दिया। प्रदेश मंत्री डॉ. ब्रजेश कुमार ने आरएसएस के सौ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर प्रस्तावित पांच परिवर्तनों पर विशेष बल दिया।

अज्ञात वाहन की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत

हिरणपुर (पाकुड़) : शहरग्राम-डांगापाड़ा मुख्य पथ के तेलोपाडा गांव निकट सोमवार दोपहर को अज्ञात वाहन के चपेट में आने से दलदली गांव निवासी मरांग मुर्मू (45) की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। जिसकारण आक्रोशित ग्रामीणों ने कुछ देर के लिए सड़क जाम कर दिया। सूचना पाकर पहुंचे अंचलाधिकारी मनोज कुमार, थाना प्रभारी गोपाल कुमार महतो, एएसआई गोविंद मण्डल ने ग्रामीणों से वार्ता कर दाह संस्कार को लेकर आर्थिक सहयोग किया। इस दौरान बाबूपुर पंचायत के मुखिया जन्तु सोरेन व केंदुआ मुखिया स्टीफन मुर्मू भी उपस्थित थे। इसके बाद पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सोनाजोरी स्थित सदर अस्पताल भेजा। घटना करीब दिन के 12 बजे की बताया जा रहा है। स्थानीय लोगो ने गांव के प्लांट निकट सड़क किनारे झाड़ी में एक व्यक्ति को मृत अवस्था मे पड़ा हुआ देखा। जिसकी सूचना तुरन्त पुलिस को दी गई। शव के दाहिने पैर में गम्भीर जख्म देखा गया। जो निकटवर्ती गांव आसनजोला में किसी रिश्तेदार के घर मे आये पत्नी बिटिसूनी मरांडी से मिलने आया था। मृतक का दो पत्नी व तीन बच्चे है। कयास लगाया जा रहा है कि किसी अज्ञात वाहन से धक्का मारे जाने से सड़क से दूर जा गिरा होगा। वही कुछेक लोगो का कहना था कि मृतक बाइक में सवार था, पर घटनास्थल पर बाइक नहीं पाया गया।

अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस पर नर्सों को किया गया सम्मानित

देशप्राण संवाददाता

गोड्डा, 12 मई : अंतर्राष्ट्रीय नर्स दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन, गोड्डा के अंतर्गत संचालित शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, रौतारा में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस मौके पर शहरी क्षेत्र के दर्जनों नर्स नसों के अलावा स्वास्थ्य विभाग के पदाधिकारी मौजूद थे। कार्यक्रम में मौजूद नर्स मीरा कुमारी, जूली कुमारी, सोनम कुमारी, अल्बीना सोरेन, रूपम कुमारी एवं पुष्पा कुमारी रीनाकुमारी द्वारा केक काटकर नर्सिंग सेवा की जननी मानी जाने वाली नाइटिंगेल फ्लोरेंस को श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया और नर्सिंग सेवा के उच्च आदर्शों को अपनाते हुए सभी नर्सों ने फ्लोरेंस नाइटिंगेल के पदचिह्नों पर चलने और सेवा भावना से समाज की सेवा करने की सामूहिक शपथ ली गई कार्यक्रम के मुख्य रुप से वरिष्ठ एएनएम अराधना कुमारी द्वारा सभी

नर्सों को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके निःस्वार्थ सेवा और समर्पण को एक सराहनीय श्रद्धांजलि के रूप में प्रदान किया गया। बताया गया कि यह कार्यक्रम न केवल नर्सों के योगदान को सम्मानित करने का अवसर बना, बल्कि स्वास्थ्य सेवा के प्रति जागरूकता और प्रेरणा का माध्यम भी रहा। मौके पर जिला शहरी स्वास्थ्य प्रबंधक जयशंकर, लैब टेक्नीशियन प्रभात कुमार झा एवं शहरी स्वास्थ्य मिशन के ढेर सारे हेल्थ स्टाफ उपस्थित थे।

साफा होड़ समुदाय के लोगों ने बुद्ध पूर्णिमा पर किया गंगा स्नान

देशप्राण संवाददाता

पाकुड़ : जिले के अमड़ापाड़ा प्रखंड मुख्यालय के बांसलोई में नदी पर आदिवासी समाज के साफा होड़ समुदाय के लोगों ने बुद्ध पूर्णिमा के मौके पर गंगा स्नान किया। जिले सभी प्रखंड पाकुड़, हिरणपुर, लिट्टीपाड़ा, पाकुड़िया, महेशपुर, अमड़ापाड़ा में श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगया। बुद्ध पूर्णिमा के मौके पर जिले के विभिन्न गांव से आए श्रद्धालुओं ने बांसलोई नदी पर डुबकी लगाई प्रखंड के कोलकीपाड़ा, बरमसिया, आलूबेड़ा, बलियाडांगा, गोपीकांदर, सिंगारसी एवं महेशपुर, पाकुरिया प्रखंड के विभिन्न गांव के आदिवासी साफा हो ने अपने भगवान की पूजा-अर्चना किया। मौके पर रूपेश मडैया, सुनीराम हांसदा, स्टीफन हांसदा, चंदन मुरमू, बरखा मुर्मू,

वकील मरांडी, सुरेश मडैया आदि ने बताया कि हम लोग अपने अपने भगवान की पूजा अर्चना कर आशीर्वाद मांगा। वही पाकुड़ में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर पाकुड़ रेलवे कॉलोनी स्थित सिद्धार्थ नगर में स्थापित भगवान गौतम बुद्ध की प्रतिमा पर आमजनों सहित मोहल्ले वासियों में निवर्तमान नगर परिषद अध्यक्ष सम्पा साहा के नेतृत्व में माल्यार्पण कर नमन करते हुए विश्व शांति की लिए प्रार्थना की।मौके पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन पाकुड़ विधानसभा के प्रत्याशी अजहर इस्लाम, भाजपा के वरिष्ठ नेता हिसाबी राय मौजूद थे। माल्यार्पण के क्रम में बुद्धं शरणं गच्छामि,धम्मं शरणं गच्छामि,संघं शरणं गच्छामि का उद्घोष किया गया।

इस अवसर पर अजहर इस्लाम ने कहा कि बुद्ध पूर्णिमा को ही बैसाख पूर्णिमा कहा जाता है। इस दिन महात्मा बुद्ध का जन्म नेपाल के लुंबिनीवन में ईसा पूर्व 556 में हुआ था। भगवान बुद्ध ने नई दिशा दी। भगवान बुद्ध ने छुआछूत सामाजिक बुराइयों की भावना को खत्म करने के लिए लोगों को जागरूक किया। छठी ईशा पूर्व में भगवान बुद्ध ने धार्मिक सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया। विश्व शांति अहिंसा और करूणू का संदेश दिया। निवर्तमान नगर परिषद अध्यक्ष सम्पा साहा ने कहा कि बुद्ध पूर्णिमा ज्ञान शांति और आत्मनिरीक्षण का प्रतीक है। लोग बहुत श्रद्धा पूर्वक मानते हैं।बुद्ध पूर्णिमा का पर्व उनके आदर्शों और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

डीएमओ ने जब्त किया बिना माइनिंग चालान के दो हाइवा

हिरणपुर (पाकुड़) : अवैध रूप से की जा रही खनिज पदार्थो की परिवहन को लेकर प्रशासन द्वारा निरन्तर सख्ती बरती जा रही है। सोमवार को जिला खनन पदाधिकारी राजेश कुमार के द्वारा चौड़ा मोड़ निकट बिना माइनिंग चालान के पत्थर लदे दो हाइवा को जब्त किया। पत्थर लदे हाइवा संख्या डब्लूबी 93 बी 7995 व जेएच 16 जी 1394 मुख्य सड़क होते हुए कोटालपोखर की ओर जा रहा था कि डीएमओ ने दोनों वाहनों को रोका। दोनों वाहनों में ओभरलोड पत्थर पाया गया। वही पत्थर से सम्बंधित माइनिंग चालान तत्काल प्रस्तुत नही किया गया। इसको लेकर तत्काल दोनों वाहनों को जब्त कर पुलिस को सुपुर्द किया गया। बताते चले कि बिना माइनिंग चालान के डांगापाड़ा - चीतलों (लिट्टीपाड़ा) पथ में धड़ल्ले से पत्थरो की अवैध परिवहन की जा रही है। इस पर विभाग द्वारा त्वरित कार्रवाई करना आवश्यक है। डीएमओ ने बताया कि जब्त पत्थर लदे वाहनों की जांच की जा रही है। जल्द ही आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

ठाकुरगंगटी में जलमीनार के खराब होने से लोगों में पेयजल को लेकर मचा त्राहिमाम

गोड्डा, 12 मई : ठाकुरगंगटी प्रखंड अंतर्गत फुलबडिया पंचायत के कई गांवों में इन दिनों पेयजल की घनघोर समस्या उत्पन्न होने से लोगों में त्राहिमाम मची है। ग्रामीण बताते हैं कि पंचायत के गमराह, फुलबड़िया और सोनपुर गांव में लगा सोलर जलमीनार वर्षों से से खराब पड़ा है जिससे गांव के लोग इस तपिश भरी गर्मी में पीने के पानी को लेकर हर है हाल बेहाल हैं बाबजूद विभाग पेयजल को लेकर गंभीर नहीं दिख रहा है। बताते हैं कि तीनों गांव के लगभग तीन हजार की आबादी इस भीषण गर्मी में पेयजल को लेकर हलकान है। गांव के ग्रामीण जीतराम हांसदा, तल्लु टुड्डू, भागवत हांसदा, मनोज टुड्डू, होपना टुड्डू ने बताया की यह गांव सड़क के दोनों किनारे लंबी दूरी तक तीनों गांव बसा हुआ है जहां सभी आदिवासी समुदाय के लोग रहते है। गमराह गांव के शास्त्री टुड्डू घर के सामने, फुलबड़िया गांव के कालिदास हेंब्रम घर के सामने एवं फुलबड़िया गांव के लखीराम घर के पास लगाया गया सोलर जलमीनार विगत आठ महीनों से खराब पड़ा हुआ है जिससे गांव में लोगो को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बताते हैं कि तीनों जलमीनार पर गांव की आधी आबादी आश्रित है जिसे अब अन्यत्र स्थानों से पीने का पानी अपने माथे पर लेकर आना पड़ता है। अधिकांश परिवार गांव के खुले कुएं का पानी तो कुछ लोग गांव के बगल में अवस्थित नदी का पानी भी पीने को मजबूर हो गए है। ग्रामीणों ने बताया की इतनी लंबी आबादी वाले इस आदिवासी बहुल क्षेत्र में पेयजल की स्थिति को लेकर लोग संकट में है और भीषण गर्मी में चल रही लू से लोगों का जीना मुश्किल हो रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि निर्माण कार्य के समय काफी घटिया किस्म का मोटर और सामग्री को लगाया जाता है जो कुछ दिनों तक चलने के बाद खराब हो जाता है जिसकी सुधि लेने वाला कोई नहीं होता है। ग्रामीणों ने बताया की काफी पिछड़ा हुआ गांव जिसमें काफी गरीब परिवार के लोग रहते जो मजदूरी कर अपना जीवन यापन करने का काम कर रहे है। गरीबी रहने के कारण गांव के लोग इतनी परेशानी झेलने को विवश है जो खुद की राशि से मरम्मती कराने में असफल हो रहे है। ग्रामीणों ने बताया की घरों में भोजन बनाने के लिए महिलाएं पानी को लेकर अपनी जुगाड में पसीना बहाती है जिन्हें की घर के छोटे छोटे बच्चे को देखना पड़ता है इसके बाबजूद भी विभाग उदासीन है। तीनों जलमीनार हांथी का दांत बनकर रह गई है। ग्रामीणों ने बताया कि इस तपतपाती लू में भोजन से ज्यादा जरूरी प्यास बुझाने के लिए पानी की आवश्यकता पड़ती है। सरकार की ओर से लाखों लाख रुपए खर्च कर गांव के ग्रामीणों को पीने के पानी को लेकर जलमीनार तैयार किया जाता है पर निर्माण कार्य के कुछ दिनों के बाद यह जलमीनार ठेकेदार की भेट चढ़ जाती है जिसकी सुधी तक लेने वाला कोई नहीं है। इस संबंध मे बीडीओ विजय कुमार मंडल से पूछे जाने पर उन्होंने बताया की मामले की जानकारी मिली है जल्द ही खराब पड़े जलमीनार को दुरुस्त करवाने का काम किया जाएगा ताकि भीषण गर्मी में लोगो को राहत मिल सके।

संक्षिप्त समाचार

राष्ट्रपति ने छत्तीसगढ़ में हुए सड़क हादसे पर जताया दुख

नई दिल्ली : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सोमवार को छत्तीसगढ़ में बलौदाबाजार–रायपुर मार्ग पर सारागांव के नजदीक हुए सड़क हादसे पर दुख जताया है। राष्ट्रपति ने एक्स पर पोस्ट किया, 'रायपुर, छत्तीसगढ़ में एक सड़क दुर्घटना में बच्चों एवं महिलाओं सहित कई लोगों की मृत्यु का समाचार अत्यंत दुखद है। मैं शोक संतप्त परिवारजनों के प्रति गहन संवेदनाएं व्यक्त करती हूं और घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करती हूं।' उल्लेखनीय है कि छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से लगे खरोरा में रविवार को रायपुर–बलौदाबाजार रोड पर सारागांव के पास माजदा की पहले ट्रेलर फिर डंपर से टक्कर होने से 13 लोगों की मृत्यु हो गई और 10 लोग घायल हो गए।

विदेश सचिव विक्रम मिस्री और उनके परिवार को ट्रोलिंग की एनसीडब्ल्यू ने की निंदा

नई दिल्ली : भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम की घोषणा के बाद सोशल मीडिया पर विदेश सचिव विक्रम मिस्री और उनके परिवार को ट्रोलिंग का सामना करना पड़ रहा है। राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष विजया रहाटकर ने इसे निंदनीय बताया है। रहाटकर ने सोमवार को एक बयान में कहा कि विदेश सचिव विक्रम मिस्री के परिवार, विशेष रूप से उनकी बेटी के खिलाफ किए गए निंदनीय ऑनलाइन दुर्व्यवहार की राष्ट्रीय महिला आयोग कड़े शब्दों में निंदा करता है। विदेश सचिव की बेटी की व्यक्तिगत संपर्क जानकारी साझा करना गंभीर रूप से गैर–जिम्मेदाराना काम है। यह गोपनीयता का गंभीर उल्लंघन है, जो उनकी सुरक्षा को खतरे में डालता है। उन्होंने कहा कि विक्रम मिस्री जैसे देश के वरिष्ठतम सिविल सेवकों के परिवार के सदस्यों पर इस तरह के व्यक्तिगत हमले न केवल अस्वीकार्य हैं, बल्कि नैतिक रूप से भी अक्षम्य हैं। उन्होंने अपील की कि लोग शालीनता, सभ्यता और संयमित व्यवहार करें।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए भाजपा ने भारतीय सेना का जताया आभार

एजेंसी

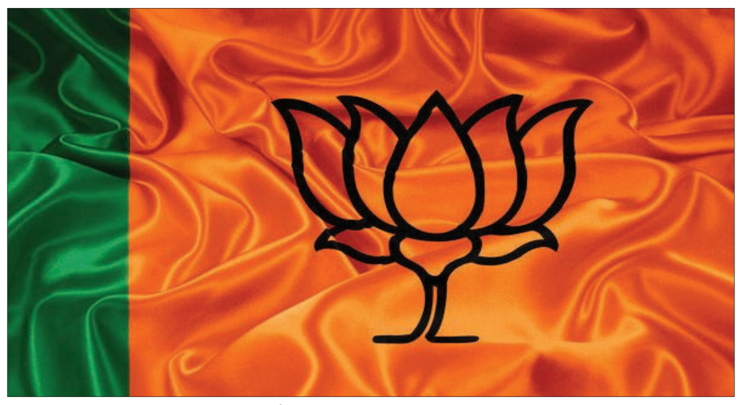

नई दिल्ली, 12 मई : भाजपा ने आतंकवाद के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए भारतीय सुरक्षा बलों को धन्यवाद दिया है। भाजपा ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर 100 फीसदी सफल रहा। जितने हमारे जांबाज पायलट राफेल के साथ गए थे, वह सभी आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करके आए, लेकिन किसी नागरिक को नहीं मारा। भाजपा मुख्यालय में सोमवार को हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस में पार्टी प्रवक्ता ओर सांसद संबित पात्रा ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर 100 प्रतिशत सफल रहा। जितने हमारे जांबाज पायलट गए थे राफेल के साथ, उतने लौटकर आए। सभी आतंकी ठिकानों को ध्वस्त करके आए, लेकिन किसी नागरिक को नुकसान नहीं पहुंचाया। इस सिंदूर ऑपरेशन के तहत सेना ने पाकिस्तान के नौ आतंकी शिविरों को नष्ट कर दिया, जिनमें से पांच पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू और कश्मीर (पीओके) में और चार पाकिस्तान में थे। उन्होंने राष्ट्र की सुरक्षा में सुरक्षा बलों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि सेना ने अदम्य साहस का परिचय दिया है। संबित पात्रा ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर में लश्कर-ए-तैयबा का आतंकी मुजस्सर उर्फ अबू जिंदाल मारा गया।

इसके जनाजे में पाकिस्तान के आर्मी चीफ और आर्मी अधिकारी, पंजाब सीएम मरियम नवाज शामिल हुईं। इससे साबित होता है कि आतंकवाद और आतंक को बढ़वा देने वाले एक साथ काम करते हैं। दूसरा जैश-ए-मोहम्मद का आतंकी यूसुफ अजहर व हाफिज मुहम्मद जमील मारा गया। उन्होंने कहा कि 22 अप्रैल को पहलगाम में पाकिस्तान द्वारा प्रशिक्षित आतंकियों ने 26 लोगों की नृशंस हत्या कर दी गई थी।

तब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वादा किया था कि आतंकवाद के खिलाफ हमला होगा, हम पहलगाम के इस आतंकवादी हमले का बदला लेंगे। ये जो बदला होगा वो आतंकवादियों की कल्पना से परे होगा और जो बदला हमने लिया वो आतंकवादियों की सोच से परे था। उन्होंने कहा कि पानी और खून एक साथ नहीं बहेगा। 50 वर्षों तक जो संभव नहीं हुआ था, वो इस बार संभव हुआ। किसी भी युद्ध में सिंधु नदी के पानी को रोका नहीं गया था, ये असंभव काम इस बार संभव हुआ। अटारी बाघा बॉर्डर को बंद कर दिया गया। दोनों देशों के बीच कोई ट्रेड नहीं होगा और इसका खामियाजा पाकिस्तान की इकोनॉमी भुगतेगी। ऑपरेशन सिंदूर में सैन्य और गैर-सैन्य दोनों घटक शामिल हैं।

गैर-सैन्य रणनीति के हिस्से के रूप में सिंधु जल संधि को खत्म करने के पाकिस्तान को काफी नुकसान होगा। क्योंकि पाकिस्तान की 80 प्रतिशत कृषि जल संसाधनों पर निर्भर करती है। जल प्रवाह को रोकने से पाकिस्तान की जीडीपी में संभावित रूप से एक-चौथाई की कमी आ सकती है। संबित पात्रा ने कहा कि पाकिस्तान को अलग-थलग करने और आतंकवाद से निपटने के लिए आम सहमति बनाने के लिए पीएम मोदी ने 20 देशों के नेताओं से सीधे बातचीत की। खास बात यह है कि इन सभी देशों ने भारत के रुख का समर्थन किया। सऊदी अरब, यूएई, अमेरिका और यहां तक कि कई इस्लामिक देशों समेत प्रमुख देशों ने भारत के पक्ष में खुलकर खड़े हुए।

अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस पर जेपी नड्डा ने नर्सों की करुणा, शक्ति व प्रतिबद्धता को किया सलाम

नई दिल्ली, 12 मई (हि.स.) : केंद्रीय स्वास्थ्यमंत्री जेपी नड्डा ने आज अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस पर स्वास्थ्य सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली नर्सों को बधाई देते हुए उनकी करुणा, शक्ति और प्रतिबद्धता को सलाम किया। नड्डा ने आज एक्स पर अपने संदेश में कहा कि इस वर्ष के विषय, 'नर्सों की देखभाल कि वजह से देश को अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है' पर जोर दिया जा रहा है। नर्सों की भलाई सीधे हमारी स्वास्थ्य प्रणालियों और राष्ट्रीय विकास की ताकत से जुड़ी हुई है। नर्स पेशे को मजबूत करने में निवेश करने का मतलब है स्वस्थ समाज, उत्पादक समुदाय और अधिक लचीले भविष्य में निवेश करना।

उन्होंने आह्वान किया कि आज और हर दिन, उन लोगों को महत्व दें, उनकी रक्षा करें और उन्हें सशक्त बनाएं जो दूसरों की देखभाल करने के लिए अपना जीवन समर्पित करते हैं। उल्लेखनीय है कि नर्सिंग पेशे को सम्मान देने के लिए और नर्सेस के काम की सराहना करते हुए हर साल 12 मई के दिन दुनियाभर में अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस मनाया जाता है।

नर्स मरीजों की देखरेख ही नहीं करतीं बल्कि डॉक्टर और मरीजों के बीच की एक मजबूत कड़ी का भी काम करती हैं। इस दिन को मनाने का प्रस्ताव इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ नर्सेस ने साल 1953 में रखा था और साल 1974 में जाकर 12 मई को औपचारिक तौर पर अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस के लिए चुना गया। साल 1820 में 12 मई के ही दिन मॉडर्न नर्सिंग की जन्मदाता कही जाने वाले फ्लोरेंस नाइटिंगल का जन्म हुआ था। इस दिन को फ्लोरेंस नाइटिंगल के सम्मान में चुना गया था।

प्रधानमंत्री ने देशवासियों को बुद्ध पूर्णिमा की शुभकामना दी

नई दिल्ली, 12 मई (हि.स.) : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज सुबह देशवासियों को बुद्ध पूर्णिमा की शुभकामना दी। उन्होंने कहा कि भगवान बुद्ध का जीवन सभी को करुणा और शांति के लिए प्रेरित करता रहेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स संदेश में कहा कि भगवान बुद्ध के संदेश मानवता के पथ-प्रदर्शक रहे हैं। उन्होंने एक्स पर लिखा, "सभी देशवासियों को बुद्ध पूर्णिमा की ढेरों शुभकामनाएं। सत्य, समानता और सद्भाव के सिद्धांत पर आधारित भगवान बुद्ध के संदेश मानवता के पथ-प्रदर्शक रहे हैं। त्याग और तप को समर्पित उनका जीवन विश्व समुदाय को सदैव करुणा और शांति के लिए प्रेरित करता रहेगा।" उल्लेखनीय

है कि बुद्ध पूर्णिमा को कई वजहों से विशेष माना जाता है। बुद्ध पूर्णिमा भगवान बुद्ध के जन्म, सत्य का ज्ञान और महापरिनिर्वाण के तौर पर मनाई जाती है। वैशाख पूर्णिमा के दिन ही गौतम बुद्ध का जन्म हुआ, इसी दिन ज्ञान की प्राप्ति हुई। बुद्ध पूर्णिमा (वेसक या हनमतसूरी) बौद्ध धर्म में आस्था रखने वालों का एक प्रमुख त्यौहार है।

खबरें नेपाल की

विश्व मानव अस्तित्व और पृथ्वी की सुरक्षा के लिए बुद्ध के संदेश को फैलाना जरूरी है : प्रधानमंत्री ओली

काठमांडू : प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने कहा है कि बातचीत के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध फिलहाल बंद हो गया है। उन्होंने यह बात आज लुंबिनी में आयोजित 2569वें बुद्ध जयंती मूल समारोह में कही। प्रधानमंत्री ओली ने संयम बरतने के लिए भारत और पाकिस्तान को धन्यवाद भी दिया। उन्होंने कहा, 'अभी कुछ दिन पहले हमारे पड़ोस में थोड़ी अशांति हुई थी। लेकिन वह ज्यादा आगे नहीं बढ़ी। आपके धैर्य के लिए धन्यवाद।' प्रधानमंत्री ओली ने कहा कि वह शुरू से चाहते थे कि स्थिति आगे न बढ़े और लड़ाई में तब्दील न हो। उन्होंने यह भी उम्मीद व्यक्त की कि आरोप प्रत्यारोप और बाकी सभी मुद्दों का हल बातचीत और शांतिपूर्ण तरीके से निकल जाएगा। प्रधानमंत्री ओली ने कहा कि विश्व मानव अस्तित्व और पृथ्वी की सुरक्षा के लिए बुद्ध के संदेश को फैलाना जरूरी है।

भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर को लेकर ओली ने कही ये बात

अभी कुछ दिन पहले ही हमारे पड़ोसी देश भारत और पाकिस्तान के बीच थोड़ी बहुत गरमा गर्मी हुई थी लेकिन आगे नहीं बढ़ पाई। आपके धैर्य के लिए धन्यवाद। हमने शुरू से कहा, विस्तार मत करो। हम चाहते हैं कि ये मौजूदा स्थिति झगड़े में न बदले।

साहित्य -पटल पर स्वागत की तैयारी : प्रसाद रत्नेश्वर की चार पुस्तकों का एकसाथ दिल्ली में होगा लोकार्पण

मोतिहारी : इसी 17 मई को नई दिल्ली के कन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में जुटेंगे देश भर से जाने - माने साहित्यकार, पत्रकार, कवि, रंगकर्मी, राजनेता एवं प्रशासनिक अधिकारी गण। अवसर होगा मोतिहारी, बिहार के साहित्यकार प्रसाद रत्नेश्वर की चार पुस्तकों का एक साथ समारोहपूर्वक लोकार्पण। समारोह का आयोजन बिहार महोत्सव समिति के बैनर तले किया गया है जो दिल्ली में प्रवासी बिहारियों की एक प्रमुख सांस्कृतिक - साहित्यिक संस्था है। यह संस्था पहले से दिल्ली में बिहार महोत्सव करती है। संस्थाध्यक्ष मोहन कुमार गुप्ता एवं जनसंपर्क अधिकारी राकेश कुमार वर्मा ने बताया कि समारोह हेतु एक कोर कमिटी का गठन कर राष्ट्रपति भवन में सेवारत ई. राकेश कुमार को कार्यक्रम- संयोजक बनाया गया है। ई. राकेश कुमार ने अपनी तैयारी की जानकारी देते हुए बताया कि प्रसाद रत्नेश्वर जी की पांच प्रकाशित पुस्तकों में से चार पुस्तकों का लोकार्पण अभी कराया जा रहा है। इन पुस्तकों में बेचिरागी (हिंदी कविता- संग्रह), लड़कियों के कपड़े (हिंदी गजल- संग्रह), निलही कोठी (पांच मंचीय नाटक-संग्रह) एवं थारु : विश्व की एक नई सभ्यता (शोध - पत्र - संग्रह) के नाम शामिल हैं। संयोजक ने कहा है कि एक लेखक के जीवन के 65 वें वर्ष में एकसाथ पांच पुस्तकों का प्रकाशन बहुत बड़ी उपलब्धि है। इन पुस्तकों को नवारम्भ प्रकाशन (मधुबनी- पटना - दिल्ली) ने प्रकाशित किया है। इस आयोजन की सफलता एवं पुस्तकों का साहित्य के पटल पर स्वागत के लिए सम्बंधित विशिष्ट जन को आमंत्रित किया गया है।

देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए बुद्ध जयंती मनाई जा रही

काठमांडू : देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए बुद्ध जयंती मनाई जा रही है। बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी के साथ ही देशभर के बौद्ध स्तूपों, विहारों और मठों में पूजा-अर्चना समेत विभिन्न कार्यक्रमों के साथ बुद्ध जयंती मनाई जा रही है। इस मौके पर स्वयंभू विश्व धरोहर सूची में शामिल स्वयंभूनाथ क्षेत्र में सुबह से ही बौद्ध तीर्थयात्रियों और आम लोगों का तांता लगा हुआ है। बुद्ध जयंती के मौके पर आज स्वयंभू महाचैत्य बुद्ध मंदिर में विशेष पूजा होगी। स्वयंभू क्षेत्र में आज नेपाल सरकार के उच्च पदों पर आसीन गणमान्य व्यक्तियों, धार्मिक नेताओं, भिक्षुओं, राजनयिक मिशनों के प्रमुखों और अधिकारियों, विभिन्न देशों के विशिष्ट अतिथियों और अन्य लोगों द्वारा पूजा-अर्चना का कार्यक्रम है। स्वयंभूनाथ परिसर के अंदर, आनंदकुटी विहार में पूजा और दर्शन के लिए बुद्ध की अस्तुधातु स्थित है। बुद्ध की अष्टधातु को केवल बुद्ध जयंती के दिन ही जनता के दर्शन के लिए रखा जाता है। इसी तरह लुंबिनी समेत देशभर के बौद्ध मंदिरों में भी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। इस मौके पर सरकार ने आज सार्वजनिक अवकाश भी दिया है।

बिहार के मोतिहारी से 10 लाख का इनामी खलिस्तानी आतंकी गिरफ्तार

पूर्वी चंपारण, 12 मई (हि.स.) : बिहार में पूर्वी चंपारण जिले के मोतिहारी नगर थाना क्षेत्र से पुलिस और एनआईए की संयुक्त कारवाई में रविवार देर शाम 10 लाख रुपये के इनामी खलिस्तानी आतंकी कश्मीर सिंह ग्लावड्डी उर्फ बलबीर सिंह को गिरफ्तार किया गया है। जानकारी के अनुसार भारत विरोधी गतिविधियो में शामिल रहे आतंकी कश्मीर नेपाल में छिपकर रह रहा था। इन दिनों किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की फिराक में था, जिसको लेकर वह नेपाल से मोतिहारी पहुंचा था। पंजाब के लुधियाना सदर में खन्ना थाना क्षेत्र के ग्लावड्डी गांव निवासी कश्मीर सिंह वर्ष 2016 में पंजाब के पटियाला जिले के नाभा जेल

ब्रेक के दौरान खालिस्तान लिबरेशन फोर्स (केएलएफ) प्रमुख हरमिंदर सिंह मिंटू, कश्मीर सिंह व गैंगस्टर विक्की गौंडर, गुरप्रीत सिंह सेखों, नीता देओल और अमनदीप धोतियां जैसे आतंकी व गैंगस्टरो के साथ भाग निकला था। एनआईए ने कश्मीर पर 2022 में कांड दर्ज किया था, जिसके बाद वह फरार होकर नेपाल में रह रहा था और एनआईए उसे तलाश रही थी। खलिस्तान समर्थक और इसके स्लीपर सेल का काम देखने वाला कट्टर आतंकी कश्मीर का सुराग नही मिलने के बाद हाल में ही एनआईए ने उस पर 10 लाख का इनाम घोषित किया था। मोतिहारी एसपी स्वर्ण प्रभात ने आज बताया कि पुलिस ने एनआईए के साथ मिलकर खालिस्तानी आतंकी कश्मीर सिंह ग्लावड्डी उर्फ बलबीर सिंह को गिरफ्तार किया है, जिसके पास से कई अहम दस्तावेज व सामान मिले है। फिलहाल उसकी मेडिकल जांच कराने के बाद सुरक्षित स्थान पर रखा गया है,जहां एनआईए की टीम उससे मिशन बिहार के संदर्भ में पूछताछ कर रही है।

आईईडी विस्फोट में एक जवान घायल

पश्चिम सिंहभूम, 12 मई (हि.स.) : पश्चिमी सिंहभूम (चाईबासा) जिले के संवेदनशील सारंडा जंगल क्षेत्र में नक्सल विरोधी अभियान के दौरान सोमवार सुबह नक्सलियों ने सुरक्षा बलों को निशाना बनाते हुए इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) विस्फोट कर दिया। इस विस्फोट में एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गया। जवान को एयरलिफ्ट कर बेहतर इलाक के लिए रांची लाया गया है। यह घटना उस वक्त हुई जब सुरक्षाबलों का दस्ता जंगल के भीतर गश्त कर रहा था, तभी अचानक जमीन में दबाकर रखे गए आईईडी में विस्फोट हो गया। इस विस्फोट में एक जवान घायल

हो गया, जिसे पहले प्राथमिक उपचार के लिए नजदीकी कैंप लाया गया और फिर वहां से बेहतर इलाक के लिए रांची स्थित एक अस्पताल में रेफर कर दिया गया है। घटना की पुष्टि कोल्हान के डीआईजी मनोज रतन चौथे ने भी की है। उन्होंने बताया कि क्षेत्र में अतिरिक्त बल भेजे गए हैं और तलाशी अभियान को और तेज कर दिया गया है। सुरक्षाबलों ने पूरे इलाके को घेर लिया है और नक्सलियों की तलाश जारी है।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में नक्सलियों ने की कांग्रेस कार्यकर्ता की हत्या

बीजापुर, 12 मई : छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बीजापुर जिले के उसूर थाना क्षेत्र के ग्राम लिंगापुर में नक्सलियों ने कांग्रेस कार्यकर्ता और सोसाइटी संचालक नागा भंडारी की धारदार हथियार से हत्या कर दी। इस घटना से इलाके में दहशत व्याप्त है। हालांकि नक्सलियों ने छह माह के स्वयं के छद्म युद्ध विराम की घोषणा कर रखी है। इसके बावजूद वे आए दिन कोई न कोई वारदात कर रहे हैं। नक्सलियों ने इस खूनी वारदात को रविवार देर रात अंजाम दिया। नक्सलियों ने कांग्रेस कार्यकर्ता नागा भंडारी की उसके घर से कुछ ही दूरी पर धारदार हथियार से हत्या कर दी। नागा मारूडबाका सोसाइटी का संचालक भी था। इससे इलाके के लोगों में बहुत आक्रोश है। संचालक की हत्या की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की विवेचना शुरू कर दी है।

राजस्थान के बॉर्डर इलाकों में सतर्कता बढ़ी, स्टेडियम को बम से उड़ाने की धमकी

जयपुर, 12 मई (हि.स.) : राजस्थान के सीमावर्ती इलाकों में पूरी तरह सतर्कता बरती जा रही है। श्रीगंगानगर जिले और उसके चार उपखंडों में बॉर्डर से सटे तीन किलोमीटर क्षेत्र में कड़े प्रतिबंध लागू कर दिए गए हैं। अब शाम सात बजे से सुबह छह बजे तक इस क्षेत्र में लोगों की आवाजाही पूरी तरह बंद रहेगी। खेती के काम के लिए भी अधिकारियों से विशेष अनुमति लेनी होगी। टॉर्च या गाड़ियों की हेडलाइट का इस्तेमाल भी प्रतिबंधित किया गया है। जिला कलेक्टर डा.मंजू के मुताबिक जिले भर में चौकसी के आदेश दिए गए हैं। उधर जयपुर स्थित सवाई मानसिंह (एसएमएस) स्टेडियम को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। सोमवार सुबह खेल परिषद के आधिकारिक ईमेल पर एक मेल आया, जिसमें लिखा था कि 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद अब स्टेडियम को बम से

उड़ाया जाएगा।

जैसे ही यह मेल कर्मचारियों ने देखा, उन्होंने तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर क्यूआरटी, बम निरोधक दस्ता और अन्य सुरक्षा एजेंसियां पहुंचीं और पूरे स्टेडियम की गहन तलाशी ली गई। सुरक्षा के मद्देनजर स्टेडियम को फिलहाल सील कर दिया गया है। बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर और श्रीगंगानगर जैसे सीमावर्ती जिलों में रविवार रात ब्लैकआउट रहा। हालांकि सोमवार सुबह से सड़कों पर आम दिनों जैसी चहल-पहल दिखने लगी। चाय की दुकानों पर लोगों की सामान्य बातचीत चलती रही, लेकिन एहतियातन स्कूल, कॉलेज और कोचिंग संस्थान सोमवार को भी बंद रखे गए।

जोधपुर में भी स्कूलों के साथ परीक्षाएं स्थगित कर दी गई हैं। जोधपुर, किशनगढ़ और बीकानेर एयरपोर्ट को अब दोबारा ऑपरेशनल कर दिया गया है। एयरपोर्ट अथॉरिटी ने यात्रियों से अपील की है कि वे अपनी फ्लाइट की जानकारी संबंधित एयरलाइंस से ही प्राप्त करें। बीकानेर एयरपोर्ट से सोमवार को कोई उड़ान नहीं है, लेकिन मंगलवार से फ्लाइट संचालन शुरू हो जाएगा। एयरपोर्ट अथॉरिटी ने कहा है कि पैसेंजर फ्लाइट का स्टेटस संबंधित एयरलाइंस कंपनियों से चेक कर लें। बीकानेर एयरपोर्ट से आज कोई फ्लाइट नहीं है। कल (मंगलवार) से उड़ाने शुरू हो जाएंगी।

संरक्षित होंगी नदियां तो बचेगा जीवन : रिवर मैन

मुरादाबाद : तीर्थंकर महावीर यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर साइंस में जल संसाधनों के सतत प्रबंधन एवं गंगा पुनर्जीवन पर आयोजित नेशनल सेमिनार में रिवर मैन ऑफ इंडिया एवम् भारतीय नदी परिषद के अध्यक्ष श्री रमन कांत बतौर मुख्य अतिथि बोले, नदियों से ही हमारी पहचान है। यदि नदियों का जीवन थमेगा तो मानव सभ्यता का प्रवाह भी थम जाएगा। ऐसे में स्टुडेंट्स को नदियों में जल संरक्षण के लिए और अधिक रिसर्च वर्क में जुटना चाहिए। उन्होंने जाने-माने समाजवादी नेता श्री राममनोहर लोहिया को भी कोट किया। जन भागीदारी से नदी संरक्षण पर श्री रमन ने प्रदूषण के मुहाने पर पहुंची नदियां, तेजी से बढ़ते अतिक्रमण और घटते भूजल स्तर पर चिंता जताते हुए कहा, जीवनदायिनी नदियों को सेहतमंद रखने के लिए क्रांतिकारी कदम उठाने होंगे। इससे पूर्व रिवर मैन ऑफ इंडिया श्री रमन कांत, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के एसएमसीजी विभाग की यूनिट हेड- कम्युनिकेशन एवं आउटरीच सुश्री सोनालिका सिंह, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन में रीयल टाइम सूचना विशेषज्ञ ई. पीयूष गुप्ता, टीएमयू के वीसी प्रो. वीके जैन, श्री कपिल रस्तोगी, एग्रीकल्चर के डीन प्रो. प्रवीन कुमार जैन आदि ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलित करके ऑडी में राष्ट्रीय संगोष्ठी का शंखनाद किया। इस मौके पर सभी अतिथियों को बुके देकर स्वागत किया गया। अंत में स्मृति

चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया। संचालन डॉ. कंचन गुप्ता ने किया। रिवर मैन बोले, नदियों से बालू और बजरी के अंधाधुंध खनन से नदियों का जल स्तर डार्क जोन में जाने की कगार पर हैं।

नदियों के पुनर्जीवन के लिए नदियों का चिन्हिकरण, विलुप्त नदियों के उद्गम स्थान खोजने, नदियों में कचरा रोकने का तत्काल प्रबंधन किया जाए। साथ ही नदियों की धारा की सफाई भी जरूरी है। जैविक खेती को भी अधिक से अधिक अपनाना होगा। रिवर मैन बोले, काम से पहले नदी का ज्ञान... तभी बनेंगे नदी के काम...। विलुप्त हुई हिंडन नदी पर बोलते हुए कहा, नदियों के पुनर्जीवन में सरकार के संग-संग जन भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, आम आदमी को मेरी नदी.. मेरी पहल का संकल्प लेना होगा। टीएमयू के वीसी प्रो. वीके जैन बोले, जल संरक्षण के लिए वृक्षारोपण जरूरी है। उन्होंने नीर, थल, वायु, अग्नि और आकाश का संरक्षण न करने को जीव हत्या करार दिया। प्रो. जैन ने राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी की कविता- पर्वत कहता शीश उठाकर को भी कोट किया।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के एसएमसीजी विभाग की यूनिट हेड- कम्युनिकेशन एवम् आउटरीच सुश्री सोनालिका सिंह ने प्रत्येक जिले में सीवर ट्रीटमेंट प्लांट-एसटीपी लगाने की मांग की। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन में रियल टाइम सूचना विशेषज्ञ ई. पीयूष गुप्ता ने प्रयाग- प्लेटफार्म फॉर रियल टाइम एनालिसिस ऑफ यमुना एंड गंगा पर बोलते हुए कहा, यमुना एंड गंगा के मानिंद देश की सभी नदियों का रीयल टाइम एनालिसिस जरूरी है। प्रो. पीयूष बोले, हकीकत यह है, जैसी नदी होगी, वैसे ही लोग होंगे। पर्यावरणविद श्री कपिल रस्तोगी ने कचरा न जलाने की पुरजोर वकालत की। राष्ट्रीय संगोष्ठी में कन्वीनर डॉ. बलराज सिंह, सेक्रेटरी डॉ. गणेश दत्त भट्ट, डॉ. महेश सिंह, डॉ. अमित मौर्या, डॉ. सुनील सिंह, डॉ. सच्चिदानंद सिंह, डॉ. उपासना, डॉ. मनदीप रावत, डॉ. शाकुली सक्सेना, डॉ. जूरी दास, डॉ. नेहा आदि के संग-संग एग्रीकल्चर के छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।